जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

उदयपुर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 32 संख्याः 183 प्रभात उदयपुर, बुधवार 7 मई, 2025 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

जयराम रमेश के सितारे गर्दिश में हैं केवल सोनिया गांधी का प्रभाव उन्हें बचाये हुए है

पहले जब मल्लिकार्जुन खड़गे उनकी छुट्टी करने वाले थे, ए.आई.सी.सी. मुख्यालय से तो राहुल गांधी ने उन्हें बचाया था

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 6 मई। ए आई सी सी महासचिव के रूप में जयराम रमेश का मीडिया प्रभारी पद का प्रभार अधरझूल में प्रतीत हो रहा है।

सूत्रों का कहना है कि उन्हें सोनिया गांधी का समर्थन एवं आशीर्वाद प्राप्त है। उन्हें जब भी अपने ऊपर कोई गाज गिरती महसूस होती है, वे जाकर सोनिया गांधी से मिलते हैं और वे हर बार उनके साथ खड़ी हो जाती हैं।

अभी पिछले सप्ताह ही, जातिगत जनगणना के लिए सहमत हो जाने के प्रधानमंत्री के निर्णय के बाद, राहुल गांधी ने 24, अकबर रोड पर अपनी प्रैस कॉन्फ्रेंस आयोजित की थी। उन्होंने कॉन्फ्रेन्स से जाते समय जयराम पर कटाक्ष किया था : "आप तो घटनाक्रम के इस मोड़ पर बड़े परेशान हो रहे होंगे।"

यह सर्वविदित है कि रमेश जातिगत जनगणना के विचार के विरोध में थे तथा जातिगत जनगणना का अनिच्छा से समर्थन कर रहे थे।

- राहुल गाँधी ने भी यह महसूस कर लिया है कि, जयराम रमेश, गलत आदमी हैं, मीडिया के मामले में, तो अब सोनिया गांधी के कारण उनकी नौकरी बरकरार है।
- यह कोई छुपी हुई बात नहीं है, कि जयराम रमेश जातिगत मतगणना के खिलाफ हैं, अतः उन्होंने ए.आई.सी.सी. के मीडिया इंचार्ज होते हुए भी कोई प्रयास नहीं किया पार्टी का पक्ष पत्रकारों के समक्ष रखने के लिए।
- राहुल गांधी चाहते थे, जाति मतगणना के मामले में कांग्रेस की भूमिका को हाई-लाईट करने के लिए देश भर में प्रेस कांफ्रेंस आयोजित हों, पर जयराम रमेश ने राहुल गांधी के इरादे को जनता के समक्ष लाने के लिए कुछ काम नहीं किया, उनकी यह ही भूमिका अहमदाबाद सैशन के दौरान रही।
- जयराम रमेश के खिलाफ यह बात भी खूब प्रचारित हो रही है, कि, जयराम रमेश, अमित शाह के भारी प्रशंसक हैं, और कई मुद्दों पर शाह की सार्वजनिक रूप से तारीफ करते रहे हैं।

जब राहुल गांधी ने उनसे यह सुनिश्चित करने को कहा कि इस मुद्दे पर पूरे देश में प्रैस कॉन्फ्रेंस आयोजित की जायें, तो जयराम ने उनके इस निर्देश की अनुपालना नहीं की थी।

अगले दिन जयराम को इस मुद्दे पर प्रैस से बात करनी थी लेकिन उनके पास कहने के लिए कोई नई बात थी ही नहीं, इसलिए उन्होंने सिर्फ वही सब दोहरा दिया, जो राहुल गांधी ने एक दिन पहले अपनी प्रैस ब्रीफिंग में कहा था। बाद में, यह एक ऑन-द-रिकॉर्ड डीब्रीफिंग बन गई।

कोई भी व्यक्ति यह अनुमान लगा सकता है कि वह सब क्या है। काश! कोई उन पर मेहरबानी कर दे और उन्हें बता दे कि डीब्रीफिंग क्या होती है।

हाल ही में अहमदाबाद में हुए ए आई सी सी अधिवेशन में, जयराम दिन भर स्टेज पर बैठे दिखाई देते रहे, लेकिन उन्होंने बंधुआ मीडिया को अंदरूनी पॉइन्ट्स के बारे ब्रीफ करने, और यहां तक कि अधिवेशन पर डीब्रीफिंग की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एयरपोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी देने वाले को सजा सुनाई

जयपुर, 6 मई। जयपुर महानगर प्रथम के सत्र न्यायालय ने सांगानेर इंटरनेशनल एयरपोर्ट में बम धमाका करने का धमकी भरा ईमेल भेजने वाले युवक धर्मपाल बिजारणियां को छह माह की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने 19 वर्षीय इस अभियुक्त पर दो हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। जुर्माना राशि अदा नहीं करने पर अभियुक्त को पन्द्रह दिन अतिरिक्त जेल में रहना होगा। पीठासीन अधिकारी नंदिनी व्यास ने अपने आदेश में कहा कि जांच अधिकारी ने अभियुक्त युवक की

- गत वर्ष 15 और 16 फरवरी को अभियुक्त धर्मपाल ने ई-मेल भेजकर अलग-अलग समय जयपुर एयरपोर्ट पर बम विस्फोट की धमकी दी थी।

ओर से अपने मोबाइल में प्रयुक्त की जा रही सिम से यह धमकी भरा मेल भेजा जाना प्रमाणित माना है। एयरपोर्ट से देश-विदेश में उड़ानें जाती है। ऐसे धमकी भरे ईमेल से इनका संचालन प्रभावित होने की संभावना रहती है और आम जन में भी भय उत्पन्न होता है।

अभियोजन पक्ष की ओर से लोक अभियोजक लियाकत खान ने अदालत को बताया कि मामले में टर्मिनल मैनेजर मयंक सोटी ने 23 फरवरी, 2024 को एयरपोर्ट थाने में रिपोर्ट दी थी। रिपोर्ट में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मेन लाइन टी.वी. चैनल की तुलना में यू-ट्यूब चैनल काफी कष्टदायक लग रहे हैं

कई यू-ट्यूब चैनल को बन्द कराया सरकार ने

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 6 मई। मोदी सरकार आलोचना के मुद्दे पर और ज्यादा असहिष्णु बनती जा रही है। और अब राष्ट्रीय सुरक्षा एवं राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के नाम पर यह बिना किसी नोटिस या चेतावनी के यू ट्यूब चैनल बंद कर रही है।

यू ट्यूब चैनल 4 पी एम को बंद कर दिया और कारण भी नहीं बताया गया कि इसे क्यों बंद किया गया।

और अब वरिष्ठ पत्रकार पुण्य प्रासून वाजपेयी का यू ट्यूब चैनल बिना किसी पूर्व सूचना के बंद कर दिया गया।

"4 पी एम" के संजय शर्मा सुप्रीम कोर्ट चले गये तथा कोर्ट ने मोदी सरकार को नोटिस जारी करते हुए, 7 दिन के अन्दर इस बात का जवाब मांगा है कि इस चैनल को शट डाउन क्यों किया गया है।

यह देखना बहुत दिलचस्प होगा कि सरकार देश-हित और राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर अपने नियम के बचाव में क्या तर्क देती है।

सम्भवतः इस समय तथाकथित मेनलाइन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ही ऐसा मीडिया बचा है, जो देशभक्त है तथा

- फोर पी.एम. यू-ट्यूब चैनल व वरिष्ठ पत्रकार पुण्य प्रसून बनर्जी के यू-ट्यूब चैनल को बन्द करवाया सरकार ने।
- फोर पी.एम. यू-ट्यूब चैनल के मालिक संजय शर्मा, ने सुप्रीम कोर्ट में अर्जी पेश कर, उनकी चैनल बन्द करवाने के आदेश को चुनौती दी।
- सुप्रीम कोर्ट ने इस अर्जी को सुनकर सरकार को नोटिस दिया, कि, सरकार साथ में जवाब दे कि, फोर पी.एम. चैनल को बन्द करने का क्या कारण है।
- सरकार ने कुछ समय पहले पाकिस्तान के 14 यू-ट्यूब चैनल को बन्द करवाया था, पर ये चैनल अब फेसबुक पर जाकर अपनी बात कह रहे हैं।

अत्यंत संगीन मुद्दों पर सरकार के मत को दोहराता रहता है। इसके साथ ही, यह मीडिया सरकार से असुविधाजनक प्रश्न नहीं करता, तथा सरकार से संबंधित मुद्दों पर बहुत ही ज्यादा वफादार है और मोदी एण्ड कंपनी की प्रशंसा के पुल बांधने में सबसे आगे है।

इसे अब "गोदी मीडिया" कहा जा रहा है क्योंकि इसने नेता के प्रति भक्ति के मामले में सबको पीछे छोड़ दिया है।

यू ट्यूब चैनल ही तो ऐसे चैनल बचे हैं, जो सवाल पूछ रहे हैं तथा सरकार के मत का आंख बंद कर समर्थन नहीं करते हैं।

आगामी दिनों में, यही देखना बाकी है कि और कितने चैनल बंद किये जायेंगे और कितने पत्रकार सरकार के अनुरूप चलने के लिए अथवा चैनल छोड़ने के लिए बाध्य किये जाते हैं। सरकार ने 14 पाकिस्तानी यू ट्यूब चैनल प्रतिबंधित कर दिये हैं तथा उनमें से कई फेसबुक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राहुल गांधी चुपचाप, बिना पब्लिसिटी के ले. विनय नरवाल के परिवार से मिलने पहुँचे

उन्होंने प्रेस को और पार्टी के नेताओं को उस समय नरवाल के निवास पर प्रवेश करने से रोका जब राहुल शहीद नरवाल के परिवार के साथ बातचीत कर रहे थे

- डॉ. सतीश मिश्रा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 6 मई। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को करनाल जाकर विनय नरवाल को श्रद्धांजलि अर्पित की, वो भी बिना किसी मीडिया प्रचार के।

गांधी उस परिवार के साथ 90 मिनट तक रहे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, जिनके साथ मीडिया टीम का होना हमेशा जरूरी होता है, के विपरीत, राहुल गांधी ने साफ निर्देश दिए थे कि दुःख की इस घड़ी में जब वे परिवार से मिल रहे हों तो मीडिया नहीं होना चाहिए। यहां तक कि कांग्रेस के नेताओं को भी बाहर ही रोक दिया गया था।

पहलगाम हमले में मारे गए 26 लोगों में लैफ्टिनैंट नरवाल भी थे।

- राज्य के प्रभारी बी.के. हरि प्रसाद तथा सह प्रभारी विनोद राव, प्रदेशाध्यक्ष उदय भान, सांसद दीपेन्द्र हुड्डा और पूर्व विधायिका सुमित्रा सिंह, ले. नरवाल के निवास के बाहर ही इन्तज़ार करते रहे, जब तक राहुल परिवार से मिलकर बाहर नहीं आये।

मीटिंग के बाद भी राहुल ने मीडिया से बात नहीं की, बल्कि एक्स पर अपनी संवेदनाएं प्रकट की तथा राष्ट्रीय एकता बनाए रखने पर जोर देते हुए पीड़ितों को न्याय देने की मांग की।

राहुल गांधी ने लिखा, "मैं लैफ्टिनैंट विनय नरवाल जी, जो पहलगाम हमले में शहीद हुए थे, के शोक संतप्त परिवार से मिला, उनके दुःख में भागीदार बना और उन्हें सांत्वना दी।" राहुल ने शहीद के परिवार की हिम्मत की सराहना की और कहा, घोर में दुःख की घड़ी में उनका अदम्य साहस और हिम्मत पूरे देश के लिए एक संदेश देता है कि हमें एकजुट रहना है।"

उन्होंने कहा, पूरा देश शहीदों के परिवारों के साथ है।

उन्होंने कहा, राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर पूरा विपक्ष सरकार के साथ है। उन्होंने कहा, "विपक्ष पूरी तरह से सरकार के साथ है। दोषियों को ऐसी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'आईओसी 4 सप्ताह में सीतापुरा प्लांट शिफ्ट करने का प्लान बनाये'

जयपुर, 6 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने शहर सीतापुरा स्थित एलपीजी बॉटलिंग प्लांट को सीतापुरा इंडस्ट्रियल एरिया से दूसरी जगह शिफ्ट करने के संबंध में आईओसीएल (इंडियन ऑइल कारपोरेशन लिमिटेड) से चार सप्ताह में प्लान बताने के लिए कहा है। वहीं मामले

- हाईकोर्ट ने कहा कि मौजूदा समय में यह बॉटलिंग प्लांट रिहायशी कॉलोनियों, अस्पतालों, स्कूल व कॉलेजों के लिये खतरा बन गया है।

में पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन को भी पक्षकार बनाए जाने के लिए कहा है। सीजे एमएम श्रीवास्तव व जस्टिस मुकेश राजपुरोहित ने यह आदेश ओमप्रकाश टांक की जनहित याचिका पर दिए। सुनवाई के दौरान सीजे ने भांकरोटा के पास हुए एलपीजी टैंकर ब्लास्ट मामले का हवाला देते हुए कहा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पूर्व एन.डी.ए. नेता ने राहुल को मुख्य अतिथि बनाया

महादेव जानकर, तालकटोरा स्टेडियम में राजमाता अहिल्या देवी होलकर की तीन सौवीं जयंती पर भव्य समारोह का आयोजन कर रहे हैं

-सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 मई। इसे, खास तौर से महाराष्ट्र में, राजनैतिक गठबंधनों के पुनर्निर्माण की शुरुआत माना जा सकता है कि महादेव जानकर, जो धनगर (गडेरिया) समुदाय के जाने-माने नेता, तथा भारतीय जनता पार्टी के पूर्व सहयोगी हैं, ने आज दिल्ली में कांग्रेस नेता तथा लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष, राहुल गांधी से भेंट की।

जानकर, जो राष्ट्रीय समाज पार्टी (आरएसपी) के अध्यक्ष हैं, ने गांधी को 31 मई को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित एक समारोह के मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित किया है। यह समारोह पुण्यश्लोक राजमाता अहिल्या देवी होल्कर की 300 वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है।

जानकर ने कहा, "उन्होंने (राहुल)

- इस निमंत्रण को महाराष्ट्र में राजनीतिक दलों की बदलती वफादारी का प्रमाण माना जा रहा है।
- महादेव जानकर को गोपीनाथ मुण्डे पार्टी में लेकर आये थे, तथा उन्हें देवेन्द्र फड़नवीस के प्रथम शासन काल में मंत्री भी बनाया गया था।
- पर मुण्डे की मृत्यु के बाद, उन्हे महत्व नहीं मिल रहा था, अतः उनकी कांग्रेस से जुड़ने की काफी चर्चा है।

आमन्त्रण प्राप्त होने पर अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की तथा समारोह में शामिल होने की सहमति दे दी।" जानकर ने आगे कहा, "अब हम एनडीए का हिस्सा नहीं हैं। भाजपा ने मेरा इस्तेमाल किया और फिर मुझे उपेक्षित कर दिया। मैं ऐसे बड़े कीमती सबक सिखाने के लिये एनडीए का आभारी हूँ। मेरे ख्याल से, अब वह समय आ गया है कि मैं अपनी पार्टी को आगे बढ़ाने पर ध्यान दूँ।"

धनगर समुदाय के नेता जानकर भाजपा नेता स्व. गोपीनाथ मुण्डे द्वारा विचारित सोशल इंजीनियरिंग का हिस्सा थे। मुण्डे के निधन के बाद, वे पंकजा मुण्डे के नज़दीक रहे तथा उन्हें मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस के पहले कार्यकाल में पशुपालन मंत्री बनाया गया। लेकिन, भाजपा में धनगर समुदाय के एक अन्य नेता गोपीचन्द पडालकर के उदय के बाद, जानकर की उपेक्षा कर दी गई। अपनी स्वतंत्र पहचान बनाये रखने की खातिर, जानकर ने अपनी पार्टी का अन्यत्र विलय करना उचित नहीं समझा तथा परभनी सीट से 2024 का लोकसभा चुनाव हार जाने के बाद, एनडीए को छोड़ देने का निर्णय ले लिया।

महाराष्ट्र के शोलापुर, साँगली, बारामती, परभनी तथा सतारा लोकसभा चुनाव क्षेत्रों में धनगर समुदाय के लोग अच्छी -खासी संख्या में हैं तथा 25-30 से अधिक विधानसभा सीटों के नतीजों को प्रभावित कर सकते हैं।

जानकर ने कहा, "मैंने महाराष्ट्र में कांग्रेस के साथ राजनैतिक गठजोड़ करने का निर्णय अभी तक नहीं लिया है। कोई निर्णय लेने में समय लगेगा, क्योंकि कुछ विचार-विमर्श तथा सलाह-मशविरे करने होंगे। लेकिन हमारा लक्ष्य राजनैतिक रुप से आगे बढ़ना है तथा इसके लिये जो भी जरुरी होगा, वह करेंगे।" उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर जातिगत जनगणना की सफलतापूर्वक माँग करने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ईरान के विदेश मंत्री आज भारत में

नयी दिल्ली, 06 मई। ईरान के विदेश मंत्री सैय्यद अब्बास आरग्ची बुधवार को भारत की दो दिन की यात्रा पर यहाँ आ रहे हैं।

विदेश मंत्रालय के अनुसार डॉ. आरग्ची कल दोपहर नयी दिल्ली पहुंचेंगे तथा गुरुवार को वह दोपहर में हैदराबाद हाउस में विदेश मंत्री एस जयशंकर के

- पाकिस्तान के साथ बढ़ते तनाव के बीच ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास आरग्ची की भारत यात्रा को कूटनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

साथ बैठक में शामिल होंगे। वह अपराह्न चार बजे वह राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से भेंट करेंगे और रात में स्वदेश लौट जाएंगे।

जम्मू-कश्मीर में पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद भारत की पाकिस्तान पर सामरिक कार्रवाई की तैयारियों के बीच ईरान के विदेश मंत्री की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारत व इंग्लैण्ड ने "फ्री ट्रेड डील" पर हस्ताक्षर किये

टैरिफ वॉर की अनिश्चितता से तंग आकर दोनों देशों ने आपस में व्यापार करने के लिए यह समझौता किया है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 मई। बढ़ते संरक्षणवाद और टैरिफ के कारण आ रहे व्यापार व्यवधानों के बीच एक महत्वपूर्ण सफलता के रूप में, भारत और यूनाइटेड किंगडम ने एक महत्वाकांक्षी फ्री ट्रेड एग्रीमैंट (एफ.टी.ए.) पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसे दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों में एक मील का पत्थर माना जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस समझौते को ऐतिहासिक उपलब्धि करार दिया, जो इण्डिया -यू.के कॉम्प्रिहैन्सिव पार्टनरशिप को और गहरा करेगा और दोनों देशों में व्यापार, निवेश, नवाचार और रोजगार सृजन को बढ़ावा देगा।

मोदी और उनके ब्रिटिश समकक्ष कीर स्टारमर के बीच मंगलवार को हुई फोन बातचीत के बाद समझौते को अंतिम रुप दिया गया। दोनों देशों ने तीन साल पहले एफ.टी.ए. को अंतिम रुप देने का लक्ष्य तय किया था। शुरुआत में इसे अक्टूबर 2022 तक पूरा करने का लक्ष्य था, लेकिन यूके में राजनीतिक अस्थिरता और ऑटोमोबाइल शुल्क व शराब पर टैक्स जैसे संवेदनशील मुद्दों पर मतभेद के कारण यह बातचीत टलती रही।

मोदी ने "एक्स" (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, "मेरे मित्र प्रधानमंत्री कीर स्टायमर से बात करके खुशी हुई। एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में, भारत और यूके ने एक महत्वाकांक्षी और परस्पर लाभकारी मुक्त व्यापार समझौता (फ्री ट्रेड एग्रीमैंट) तथा डबल टैक्सेशन कन्वैन्शन समझौता सफलतापूर्वक पूरा किया है। ये ऐतिहासिक समझौते हमारी व्यापक रणनीतिक साझेदारी को और गहराएंगे तथा व्यापार, निवेश, विकास, रोजगार सृजन और नवाचार को गति देंगे।

दोनों नेताओं ने व्यापार के नए अवसरों को खोलने और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के रूप में इस एफ.टी.ए. की सराहना की। स्टारमर ने कहा कि यह समझौता यूके की परिवर्तन की योजना के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य वैश्विक साझेदारी को बढ़ावा देकर

- इस समझौते पर तीन साल से बातचीत चल रही थी, पर, किसी न किसी कारण फाइनल नहीं हो पा रही थी। पर टैरिफ वॉर के दबाव ने इन दिक्कतों को दूर करने में अच्छी भूमिका निभाई।

व्यापार बाधाओं को कम करते हुए मजबूत और सुरक्षित अर्थव्यवस्था बनाना है।

यह समझौता ऐसे समय में हुआ है, जब वैश्विक सप्लाई चेन भू-राजनीतिक तनावों से जूझ रही हैं और बहुपक्षीय व्यापार वार्ताएं (मल्टीलेटरल ट्रेड नैगोसिएशन्स) सर्वसम्मति के लिए संघर्ष कर रही हैं। ऐसे में यह द्विपक्षीय समझौता, व्यावहारिक आर्थिक कूटनीति को आगे बढ़ाने की दोनों देशों की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। भारत के लिए यह एफटीए एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसके बाद भारत भिन्न-भिन्न ट्रेड पार्टनर ले सकता है तथा ग्लोबल मैनुफैक्चरिंग व सर्विसेज़ हब बनने की अपनी महत्वाकांक्षा को मजबूत कर सकता है। वहीं, यू.के. के लिए, ब्रेक्सिट के बाद की व्यापार नीति में, यह एक महत्वपूर्ण प्रगति है, जो उसकी वैश्विक आर्थिक प्रासंगिकता को पुनः साबित करती है।

यूके सरकार के आंकड़ों के अनुसार, 2024 की चौथी तिमाही तक समाप्त चार तिमाहियों में वस्तुओं और सेवाओं का द्विपक्षीय व्यापार 42.6 बिलियन पाउण्ड था-जो पिछले वर्ष की तुलना में 8.3 प्रतिशत अधिक है। भारत का यूके को निर्यात 10.1 प्रतिशत बढ़कर 25.5 बिलियन पाउण्ड हो गया, जबकि यूके का भारत को निर्यात 5.8 प्रतिशत बढ़कर 17.1 बिलियन पाउण्ड पहुंच गया।

उम्मीद की जा रही है कि यह एफटीए व्यापार की इस गति को और तेज़ करेगा। भारत के लिए यह समझौता वस्त्र, दवाओं और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे प्रमुख क्षेत्रों में नए अवसरों को जन्म देगा। भारतीय परिधान निर्यातकों को टैरिफ में कटौती से यूके के खुदरा बाज़ार में प्रतिस्पर्धा में बढ़त मिलेगी। फार्मा कंपनियों को ड्रग अप्रूवल (दवा अनुमोदन) प्रक्रिया में सरलता और इन्टलैक्चुअल प्रॉपर्टी नियमों में स्पष्टता से लाभ मिलेगा।

भारत के खाद्य और कृषि उत्पाद, जैसे चाय, मसाले और बासमती चावल, ब्रिटेन के खुदरा बाजारों में अधिक स्थान बना सकेंगे, वहीं ऑटोमोबाइल पुर्जों के क्षेत्र को भी सरल कस्टम नियमों और कम शुल्क से लाभ मिलेगा, जिससे यूके की मैनुफैक्चरिंग सप्लाई चेन्स के साथ समन्वय बढ़ेगा। ये लाभ भारत के "मेक इन इंडिया" अभियान का सीधे समर्थन करते हैं।

यूके के लिए इस समझौते में, स्कॉच व्हिस्की और वाइन जैसे मादक पेय पदार्थों पर लंबे समय से प्रतीक्षित टैरिफ कटौती भी है-जो कि वार्ताओं में बाधा बनते रहे हैं। ब्रिटेन के फायनैंशियल एवं लीगल सर्विस प्रोवाइडर्स को भी मार्केट तक बेहतर पहुँच और रैगुलेटरी अड़चनों में कमी से लाभ होगा। यह समझौता शिक्षा क्षेत्र में सहयोग को भी प्रोत्साहित करेगा।

निवेश इस समझौते का प्रमुख पहलू है। यह एग्रीमैंट, भारत के स्वच्छ ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहनों और फिनटेक जैसे क्षेत्रों में भारत के बढ़ते बाजारों पर नज़र रखने वाली ब्रिटिश फर्मों के लिए "रैगुलेटरी क्लेरिटी" और कर स्थिरता प्रदान करता है। इसी प्रकार यूके में कार्यरत भारतीय व्यवसायों को भी अधिक स्थिर नियमों, कम अनुपालन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विधायक रिश्वत प्रकरणः पीए रोहित की तलाश जारी

जयपुर, 6 मई। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने बीस लाख रुपए की रिश्वत लेने के मामले में बांसवाड़ा के बागीदौरा विधायक जयकृष्ण पटेल के पीए रोहित के मामा जसवंत उर्फ लक्ष्मण और उसके परिचित जगराम को मंगलवार को कोर्ट में पेश किया गया,

- मंगलवार को पुलिस ने सवाई माधोपुर, वैर, भरतपुर आदि स्थानों पर रोहित की तलाश में दबिश दी

जहां से उन्हें एक दिन की रिमांड पर सौंप दिया गया। विधायक जयकृष्ण पटेल और उसके चचेरे भाई विजय पटेल को एसीबी फिर से बुधवार को कोर्ट में पेश कर रिमांड मांगेगी।

ए.सी.बी., विधायक के पीए की तलाश में जुटी है। रोहित की तलाश में एसीबी की टीमों ने मंगलवार को सवाई माधोपुर, वैर भरतपुर सहित, उसके संभावित स्थानों पर दबिश दी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

एकता चापलूसी से कायम नहीं की जा सकती। –महात्मा गाँधी

जाति संगठन सामाजिक सुधार नहीं, सत्ता में हिस्सेदारी चाहते हैं

भारतीय संसदीय लोकतंत्र की प्रतिस्पर्धी राजनीति में अभी जातियों का मुद्दा गरमाया हुआ है। एक बड़े फैसले में सरकार ने घोषणा की है कि अगली जनगणना में जाति की गणना को भी शामिल किया जाएगा। हालांकि ऊपर से ऐसा लगता है कि यह मुद्दा वोटों की सामान्य राजनीति का है किन्तु इसके ऐसे निहितार्थ भी हैं जिस पर अकादमिक बहस हो सकती है। जातियां लंबे समय से भारतीय समाज में रही हैं, किन्तु उनके आधुनिक संगठन स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बने और पनपे। उस समय उन्हें सांस्कृतिक और सामाजिक जागृति के रूप में देखा गया। जातियों के संगठन आज़ादी के आंदोलन में राष्ट्रीय जागृति के रूप में अस्तित्व में आये। इनका मूल उद्देश्य अपने-अपने समुदायों की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुक्ति तथा उत्थान था। लेकिन समय के साथ ये संगठन राजनीतिक दबाव समूहों के रूप में बदलते चले गए और जातिवाद भारतीय राजनीति का अभिन्न अंग बन गया। जाति की राजनीति ने देश में राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष भी पैदा किए हैं। स्वतंत्रता के बाद जाति संगठन प्रतिस्पर्धी संसदीय लोकतंत्र में अपनी संख्या के बल पर राजनीतिक दलों और सरकार पर अपनी शर्तें थोपने लगे। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में तो अब जातिगत पहचान एक भयावह रूप ले रही दिखती है। ब्रिटिश शासन के दौरान आधुनिक शिक्षा के प्रसार, उद्योगों के उदय और विकास, रेलवे की शुरुआत, परिवहन और संचार के विकास, तथा शहरी विकास ने नये सामाजिक वर्गों को जन्म दिया। ऐसा लगा था कि नये सामाजिक वर्ग जाति व्यवस्था के उन्मूलन की राह प्रशस्त करेंगे। जाति व्यवस्था के उन्मूलन में अंग्रेजों की कोई दिलचस्पी नहीं रही। उनके लिये भारतीय समाज का जातियों में विभाजन उनके राज के स्थायित्व के लिये अनुकूल था। उन्नीसवी सदी में पनपे धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलनों में पहली बार जाति व्यवस्था का खुल कर विरोध हुआ। आजादी के बाद भी जाति प्रथा के खिलाफ माहौल बना रहा जब धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलनों में जाति व्यवस्था की निंदा की गई और उसका विरोध किया गया। लेकिन राजनीतिक आंदोलनों के उभरने के बाद सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन कमजोर होते चले गये। कुछ अध्येता मानते हैं कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने मुख्य रूप से राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर तो ध्यान केंद्रित किया मगर जाति और जातिवाद की समस्या से निपटने के लिए कोई रणनीति नहीं बनाई जिससे देश में जाति राजनीति के उदय और विकास के लिए जगह बनती चली गई। एक समय ऐसा भी था जब लोगों ने अपने नामों से जाति का हवाला हटाया। लंबे समय तक राजस्थान की राजनीति में प्रभावी भूमिका निभाने वाली कमला बेनीवाल ने अपने नाम से बेनीवाल हटा दिया था। परंतु जातियों के उन्मूलन के प्रयास कारगर नहीं हुए। प्रतिस्पर्धी निर्वाचन प्रणाली के चलते हालात इस हद तक पहुंच गये हैं कि लोकतान्त्रिक राजनीतिक और सामाजिक प्रक्रियाओं में जातिवाद बाधा बनने लगा है। देश की रियासतों के एकीकरण के साथ बने गणतांत्रिक भारत में जहां सामंती अभिजात वर्ग की राजनीतिक व्यवस्था प्रभावी रूप में मौजूद थी वहां उसकी जगह लोकतंत्र की स्थापना की प्रक्रिया आसान नहीं थी। वह प्रक्रिया पूरी होती उससे पहले ही जातिवाद ने राजनीतिक अवसरवाद, विचारहीन और सिद्धांतहीन राजनीति को पनपा दिया। अब तो ऐसा लगता है जातिवाद के सामने सभी मजबूर हैं क्योंकि चुनावी राजनीति में जातियां ऐसा मोहरा बन गई हैं, जिसे चला कर पार्टियां सत्ता पर काबिज होने का ख्वाब देखती हैं।

कुछ राज्य सरकारों ने अपने राज्यों में जातियों की गणना करने का प्रयास किया तो तुरंत ही, परेशानी शुरू हो गई। जैसे कर्नाटक ने 2017 में एक विस्तृत जाति और सामाजिक-आर्थिक जनगणना की। पारंपरिक रूप से यह माना जाता रहा है कि दो प्रमुख और शक्तिशाली जाति समूह- लिंगायत और वोक्कालिगा – राज्य की आबादी का सबसे बडा हिस्सा हैं। किन्तु लीक हुई जनगणना रिपोर्ट ने उस धारणा को उलट दिया है। एक समाचार रिपोर्ट के अनुसार जनगणना डेटा के अनुसार, कर्नाटक में दलितों और मुसलमानों की संख्या लिंगायतों और वोक्कालिगाओं से अधिक है। राज्य में कुल आबादी में अनुसूचित जातियों की हिस्सेदारी 19.5 प्रतिशत है, जो इसे सबसे बड़ी जाति इकाई बनाती है। इसके बाद मुसलमान आते हैं, जो आबादी का 16 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। इन दो समूहों के बाद लिंगायत और वोक्कालिगा आते हैं, जो क्रमश: '14 प्रतिशत और 11 प्रतिशत आबादी बनाते हैं।' इसलिए शायद कर्नाटक सरकार इसे जारी नहीं कर रही है।

भारत के संदर्भ में वर्ण-जाति को नस्लवाद के रूप में वर्णित करना, यहां की संस्कृति को ख़त्म करने की राजनीति का एक शक्तिशाली हथियार है। वे कहते हैं कि यदि कोई यह माने कि नस्लवाद हिंदू धर्म का अविभाज्य अंग है, तो फिर समझदारी यही होगी कि इस संकट से समाज को मुक्त कराने के लिए हिंदू धर्म से ही छुटकारा पा लिया जाए और ऐसा करने के लिए सभी को आपस में हाथ मिला लेना चाहिए।

दूसरी तरब वाम पक्ष के लिबरल विचारों वाले अकादमिक लोग भारत की वर्तमान समय की सभी प्रकार की सामाजिक समस्याओं का आधार जाति की प्राचीन काल की उत्पत्ति में मान ले रहे है। हालांकि उनकी इस अवधारणा पर सवाल भी उठ रहे हैं। यह सच है कि जाति की शब्दावली और विचार यूरोपीय लोगों ने अपनी अवधारणा से बनाए। प्रारंभिक औपनिवेशिक अभिलेखों से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्नीसवीं सदी के मध्य से जाति के प्रति औपनिवेशिक आकर्षण वास्तव में कितना विचित्र था। संक्षेप में, उपनिवेशवाद ने जाति को वह बनाया जो आज है। इसने ऐसी परिस्थितियां पैदा कीं, जिन्होंने जाति को भारतीय समाज का केंद्रीय प्रतीक बना दिया। इस प्रतीक ने अपना काम बखूबी किया। जवाहरलाल नेहरू ने स्वीकार किया कि इसे दूर करने का कोई आसान तरीका नहीं है क्योंकि ऐसे सामाजिक रूपों की कल्पना करना आसान नहीं है जो जाति की भाषाओं से परे हो, जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी के अनुष्ठान, पारिवारिक, सामुदायिक, सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और सार्वजनिक रंगमंचों में इतनी अंकित हो गई हैं। पश्चिम के लोगों के दिमाग में यह बैठ गया कि भारत में जातियां उनकी अपनी नस्लों की अवधारणा जैसी है। परिणामस्वरूप पश्चिमी अकादमिक लोगों की नज़र में यह वैचारिक ढांचा भारतीय वर्ण और जाति को शोषण की प्रणाली बनाता चला गया। शनैः शनैः पश्चिम के वैचारिक चश्मे वाले अकादमिक विद्वान वर्ण और जाति व्यवस्था की तुलना पश्चिम में प्रचलित गुलामी और दास प्रथा जैसी व्यवस्थाओं से भी की करने लगे और इस देश की कई वर्तमान सामाजिक समस्याओं के लिए वर्ण और जाति को जिम्मेदार ठहराने लगे। इस अवधारणा का खंडन करने वालों का कहना है कि वैचारिक विमर्श में पश्चिम के अध्येताओं ने तीन बड़ी गलतियां की। वे यह मान कर चले कि भारत का विविध जातियों व श्रेणियों में विभाजित सामाजिक ढांचा पिछले हजारों वर्षों से अपरिवर्तनीय रहा है। वह जरा भी नहीं बदला है। दूसरे, वे वर्तमान समय की सभी प्रकार की सामाजिक समस्याओं का आधार प्राचीन काल की उत्पत्ति मान लेते हैं और भारतीय समाज की आज की समस्याओं के लिए वैदिक आधारों को दोषी ठहरा देते हैं। यह सोच उनकी अपनी नस्लीय विगत के चश्मे से बनी है। तीसरे, ये अध्येता भारत के लंबे इतिहास में एक बार नहीं बल्कि बार-बार आए बड़े पैमाने पर व्यवधानों को नजरअंदाज कर देते हैं या उन पर अपने सोच का मुलम्मा चढ़ा देते हैं। ऐसा मानने वालों की संख्या अब बढ़ रही है कि भारत के संदर्भ में वर्ण-जाति को नस्लवाद के रूप में वर्णित करना, यहां की संस्कृति को ख़त्म करने की राजनीति का एक शक्तिशाली हथियार है। वे कहते हैं कि यदि कोई यह माने कि नस्लवाद हिंदू धर्म का अविभाज्य अंग है, तो फिर समझदारी यही होगी कि इस संकट से समाज को मुक्त कराने के लिए हिंदू धर्म से ही छुटकारा पा लिया जाए और ऐसा करने के लिए सभी को आपस में हाथ मिला लेना चाहिए। ऐसा व्यंग्य कसने वालों का दावा केवल वैचारिक ही नहीं है। हाल में ही ऐसी आवाज़ें भी आई हैं जो हिन्दू धर्म का समूल नाश चाहती हैं।

सच तो यह है कि भारतीय धर्मशास्त्र के कई कथन रूपक, हैं और उसके कई छंद गूढ या अज्ञेय हैं जिन्हें अध्येता अपनी-अपनी नज़र से व्याख्यायित करते हैं। इनमें मार्क्सवाद की दृष्टि प्रमुख है। मूल मार्क्सवाद एक आर्थिक वर्ग सिद्धांत था जिसमें कहा गया था कि प्रत्येक समाज को आर्थिक रूप से उत्पीड़ित और उत्पीड़नकारी के रूप में देखा जा सकता है। मार्क्स उन्हें धर्म या नस्ल के आधार पर अलग नहीं किया था जैसा कि उनके बाद उनके अनुयाइयों ने किया। मार्क्स के अनुसार केवल वे आर्थिक वर्ग जिनके पास उत्पादन के साधन नहीं थे, जो भूमिहीन मजदूर थे या कारखाने के मजदूर थे वे उत्पीड़ित थे और जिनके पास उत्पादन के साधन थे, वे उत्पीड़नकारी थे। दूसरे विश्व युद्ध के बाद मार्क्सवादी विचारकों ने एक संशोधन दिया जो एक प्रकार का सांस्कृतिक मार्क्सवाद था, जो आर्थिक स्तर पर नहीं बल्कि सांस्कृतिक स्तर पर उत्पीड़ित और उत्पीड़नकारी के बीच भेद के बारे में बात करता था। इस प्रकार मार्क्सवादी विचारक 'अर्थ' से 'संस्कृति' पर चले आये। इसे फ्रैंकफर्ट स्कूल ऑफ मार्क्सिज्म के नाम से जाना जाता है। एक महत्वपूर्ण अकादमिक विद्वान हर्बर्ट मार्क ह्यूज़ ने मार्क्सवाद का नया मॉडल विकसित कियाऔर आर्थिक विषमता की जगह नस्ल-भेद का सिद्धांत दिया। उसमे मार्क्स के सिद्धांत को आर्थिक की जगह नस्ल पर लागू किया। मार्क्सवादी अकादमिक विद्वान जो अमरीका में 'क्रिटिकल लॉ थ्योरी' लाए थे उन्होंने उसे आगे बढ़ाते हुए क्रिटिकल रेस थ्योरी बना दी। मार्क्सवादी विचारकों ने अब लिबरल बन कर 'क्रिटिकल रेस थ्योरी' को 'क्रिटिकल कास्ट थ्योरी' में बदल दिया हैं, जो कहती है कि 'जाति' 'नस्ल' है, और दलित 'काले' लोग व गैर दलित 'गोरे' लोग हैं। हार्वर्ड पहुंचे कुछ भारतीय दलितों ने भी अपनी एफ्रो-दलित परियोजना को इस नये सिद्धांत में ढालने में सहयोग किया। इस परिपेक्ष्य में भी जाति जनगणना की मांग की राजनीति को देखा और समझा जा सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

जातिगत जनगणना : समस्या और समाधान
10, डाउनिंग स्ट्रीट से 7, लोक कल्याण मार्ग तक

रामनिवास बैरवा

बड़े और महत्वपूर्ण दो व्यक्तियों की गुप्त या प्रायोजित मीटिंगों का विवरण नहीं मिलता, लेकिन ऐसी मुलाकातों के बाद के घटनाक्रम और परिणाम यह बता देते हैं कि उस मीटिंग में क्या हुआ होगा! पिछले वर्ष (2024 में) केरल में हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्यकारिणी की बैठक में यह तय किया गया था कि भारत में जातीय जनगणना की जाये। उसी क्रम में 29 अप्रेल, 2025 को आर.एस.एस. के सरसंघ चालक मोहन भागवत ने 7 लोक कल्याण मार्ग पर स्थित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से उनके सरकारी आवास में मुलाकात की थी। अनुमान तो यह लगाया जा रहा था कि भारतीय जनता पार्टी का नया अध्यक्ष चुने जाने के संबंध में मोहन भागवत और नरेन्द्र मोदी के बीच चल रही खींचतान का कोई समाधान निकला गया होगा। लेकिन, 30 अप्रेल को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रीमंडल की राजनीतिक समिति की बैठक में निर्णय लिया गया कि आगामी जनगणना के साथ जातिगत जनगणना भी करवाई जायेगी। हालांकि, भारतीय जनतापार्टी की नरेन्द्र मोदी सरकार विपक्षी पार्टियों की जातीय गणना की मांग का निरन्तर विरोध करती रही है क्योंकि इससे हिंदू-मुस्लिमों को बांटने का उनका एजेंडा कमजोर होता है। लगता है भाजपा अध्यक्ष के चुनाव के मामले में कोई लेन-देन हुआ है।

जातिगत जनगणना की मांग विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के द्वारा अपने-अपने उद्देश्यों को लेकर काफी समय से की जा रही है। उनकी यह मांग जातियों के उन्मूलन या जातियों के एकीकरण या जातियों सामाजिक उत्थान के लिए नहीं है बल्कि भारतीय समाज के जाति आधारित समाज के विभाजन को संवैधानिक स्थायित्व देने के लिए, उनको यथास्थिति में रखने के लिए की जा रही है। भारतीय जाति आधारित समाज के विभाजन को स्थायित्व देने का कार्य महात्मा गांधी ने भी 1930-32 के दौरान किया था। डॉ. भीमराव अम्बेडकर सभी पिछड़ों और अछूतों के सामाजिक उत्थान के लिए 'दलित' शब्द का इस्तेमाल करते थे ताकि दलितों को जातियों में उप-विभाजन को रोका जा सके।

भारत में संविधान के अंतर्गत लोकतांत्रिक व्यवस्था है जिसमें आम चुनाव के माध्यम से सरकार चलाने वालों को चुना जाता है। प्रत्येक नागरिक को वोट देने का अधिकार है। लेकिन, दलित-वर्गों, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों को अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार नहीं है, वे केवल विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के द्वारा मनोनीत व्यक्तियों को ही वोट देकर चुन सकते हैं। भारतीय राजनीति में कांग्रेस पार्टी का एकाधिकार खतम होने पर, 1977 के चुनावों के बाद जब कांग्रेस पार्टी के अलावा अन्य पार्टियां भी सत्ता का स्वाद चख चुकी तो उन्हें अपने आपको सत्ता के केंद्र में बनाये रखने के लिए अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़ा वर्गों के वोटों को अपने पक्ष में लेने की मुहिम चली। जिससे परम्परागत चुनाव जीतने वालों के मुकाबले नये लोगों को भी चुना जा सके। तब 1990 में विश्वनाथ प्रताप सिंह ने 'अन्य पिछडा वर्ग' को आरक्षण देने का संवैधानिक प्रावधान किया जो कि केवल सरकारी नौकरियों से संबंधित था। चुनावों के लिए अन्य पिछड़ा वर्गों (ओ.बी.सी.) को आम चुनावों में आरक्षण नहीं दिया गया लेकिन परम्परागत प्रभुत्वशाली लोगों का वर्चस्व टूटने पर ओबीसी के सम्पन्न लोग अपनी-अपनी पार्टियां बनाकर राज्यों में चुनाव जीतने लगे और सरकारें बनाने लगे।

जातियों की एकता– यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शताब्दी वर्ष है। उसकी स्थापना के पहले का भी 50-60 वर्ष का इतिहास है जो आर.एस.एस. को विरासत में मिला था। समाज में जातियों को अस्तित्व हजारों सालों से चला आने के कारण इसे सामान्य, अपरिवर्तनीय माना जाता था। जहां एक तरफ ज्योतिराव फुले, उनकी पत्नी सावित्रि बाई फुले तथा उनकी सहयोगिनी फातिमा शेख सामाजिक चेतना जगाने के लिए भी अछूत बालिकाओं को शिक्षित करने का अलख जगा रहे थे, वहीं ब्राह्मण 1857 विद्रोह की असफलता के बाद बालगंगाधर तिलक "स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार" के नारे के साथ पुरानी सनातनी जाति व्यवस्था में किसी भी सुधार का विरोध करते थे। तब से जातियों और धर्म को अलग-अलग करके देखना शुरू किया गया था। मुसलमानों के विरूद्ध सभी जातियों का सामूहिक इस्तेमाल करके उन्हीं बाल गंगाधर तिलक के मुस्लिम विरोधी विचारधारा को बढ़ाने के लिए शिवाजी के नाम का इस्तेमाल किया।

वहीं डॉ. अम्बेडकर दलित-अछूत जातियों का शिक्षा दिलाकर सरकार के समर्थन से सरकारी नौकरियों के लिए रास्ता बना रहे थे। लेकिन, इनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं होने के कारण सरकार के समर्थन की आशा करते थे। इनके विपरीत, गांधी जी पर्याप्त राजनीतिक पृष्ठभूमि होने और राजनीतिक समर्थन मिला होने के बावजूद जातियों में विभाजित भारतीय समाज की आध्यात्मिक सुरूचियों-कुरीतियों को बनाये रखने के लिए स्वयं संत महात्मा के रूप में अवतरित हुए और अपना राजनीतिक उत्तराधिकार जवाहरलाल नेहरू का दे दिया। इस प्रकार कांग्रेस समाज के जातीय विभाजन को यथास्थिति में रखने के प्रयास किये।

भारतीय जनता पार्टी के केंद्र में सरकार बना लेने के बाद पूंजीपति-व्यापारी वर्ग का एकाधिकार जैसा हो जाने के कारण अन्य विरोधी राजनीतिक पार्टियों का सत्ता प्राप्ति का संघर्ष रूक सा गया है। भारतीय जनता पार्टी और आर.एस.एस. की सत्ता में बने रहने के लिए तथा विभिन्न जातियों को अपना समर्थक बनाये रखने के लिए उन्हें सामूहिक रूप से मुसलमानों के खिलाफ लामबद्ध करते रहे हैं। मुस्लिम विरोध के नाम पर विभिन्न जातियों ने बनी छद्म एकता को तोड़ने के लिए जातिगत जनगणना का सहारा लिया गया जिससे विभिन्न जातियों के लोगों को समझाया जा सके कि उनकी जाति इतनी बड़ी संख्या में होने के बावजूद इन्हें सत्ता से दूर रखा जा रहा है। यही बात पिछले दो दशकों से चली आ रही हैं। भाजपा शासन में इसकी और भी आवश्यकता महसूस की जा रही है। जब कि आर.एस.एस. और भारतीय जनता पार्टी अपने मुस्लिम विरोधी विचारधारा के तहत ही जातियों को विभाजित रखने का प्रयास करती रही है, एक तरफ जहां मुसलमानों को हिन्दूओं का सामान्य शत्रु बनाकर पेश किया जा रहा है कुलीन और सवर्ण अछूत जातियों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष से यातनाएं देकर और अपमानित करके जाति व्यवस्था में ऊंच-नीच के भाव को जीवित कर जाति-व्यवस्था को पुनः स्थापित करते रहे हैं। इतनी बड़ी सामाजिक रणनीति के होते हुए भी आर.एस.एस. और भारतीय जनता पार्टी ने जातिगत जनगणना को स्वीकार किया है तो इसके भी कई रणनीतिक पहलू सम्भवित है।

सबसे पहला तो यही कि हिन्दुओं को जातिगत विभाजन जनगणना में किया जा रहा है तो मुसलमानों को उसी धार्मिक एकता का लाभ नहीं मिलना चाहिए। इसके लिए यह सम्भव है कि मुसलमानों की भी विभिन्न जातियों को अलग से दर्शाया जाये। ऐसा ही ईसाइयों के साथ किया जाना सम्भव है। ऐसा करने से जातिगत रूप से सब अलग-अलग दिखाई देंगे। लेकिन फिर भी, धर्म का उल्लेख उन्हें हिन्दू, मुसलमान, इसाईयों में समूहबद्ध कर देगा। इस प्रकार से विपक्षी पार्टियों की मांग भी मान ली गई और सत्तारूढ़ पार्टी और आर.एस.एस. का धार्मिक धुव्रीकरण भी सहज ही हो जायेगा।

दूसरा विचार यह रहा है कि नौकरियों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़ा वर्ग का आरक्षण है, चुनावों में सिर्फ अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों को ही आरक्षण है, अतः जातिगत आधार पर जब तक निरपेक्ष चुनाव होता रहेगा, आर.एस.एस. भाजपा को धार्मिक आधार पर समर्थन मिलते रहने की सम्भावना बनी रहेगी। शायद इन्हीं वैचारिक तर्कों के आधार पर आर.एस.एस. ने अपनी केरल की बैठक में जातिगत जनगणना का निर्णय लिया और नरेन्द्र मोदी सरकार को मोहन भागवत ने निर्देशात्मक सलाह दी कि जातिगत जनगणना करवा ली जाये।

इसका कार्यपालिका के अधिकार का एक अन्य पहलू भी हैं। यह तो सबके सामने है कि 2021 में की जाने वाली जनगणना को जहां 5-6 साल तक स्थगित रखा गया है तथा इसे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। दूसरा यह है कि 2011 की जनगणना के आंशिक आंकड़े ही अभी तक जारी किये गये तो इस बात की क्या गारंटी है कि 2026 में आगामी जनगणना जो कि जातिगत आधार पर करने की कही जा रही है, पूरी कर ही ली जायेगी। और अगर जनगणना पूरी कर भी ली गई तो उसके आंकड़े तत्काल जारी कर ही दिये जायेंगे? घोषणाएं एक बात है और उन्हें अमल में लाना दूसरी बात है। फिर इस जनगणना से जुड़े और भी संवैधानिक प्रावधान हैं जिनमें लोकसभा, राज्यसभा और विधानसभाओं को सदस्य संख्या और निर्वाचन क्षेत्रों का पुनः निर्धारण।

जातिगत जनगणना के बाद केवल धार्मिक आधार पर ही एकीकरण या ध्रुवीकरण क्यों आवश्यक है, क्या किसी और दूसरे रास्ते जातियों का एकताबद्ध होना संभव नहीं है? ऐसा संभव है, बस विचार लीक से हट कर करना होगा। जब किसान पूरे देश में किसान ही हैं तो फिर उन्हें किसान ही बने रहने देना होगा, क्यों उन्हें धर्म के आधार पर एकताबद्ध होने के लिए मजबुर किया जाये। इसी तरह से मजदूर पूरे देश में सिर्फ मजदूर ही हैं चाहे वे हिंदू हों, चाहे वे मुसलमान हों, चाहे वे ईसाई हों, उन्हें सिर्फ मजदूरों के रूप में ही एकताबद्ध क्यों ना किया जाये? यह उनका अंतर्राष्ट्रीय पहचान भी है, धर्म उनकी अंतर्राष्ट्रीय पहचान कभी नहीं हो सकती। सच है सत्ताधारी पार्टियों का अर्न्तविरोध भारत की जनता के लिए राजनीतिक प्रशिक्षण के नये-नये द्वार खोलते रहेंगे।

–रामनिवास बैरवा
पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त

कॉलेज बनाम कोचिंग

डॉ. कैलाश सोडाणी

आज से 15-20 वर्ष पूर्व तक विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में जो विद्यार्थियों का हुजूम दिखाई देता था, वह आज नदारद है। विद्यार्थियों की अनुपस्थिति से विश्वविद्यालयों की रौनक एवं चहल-पहल ही समाप्त हो गयी है, साथ ही शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक माहौल भी मृतप्राय हो गया है, जो विश्वविद्यालयों की पहचान होती थी, वह पहचान ही समाप्त होती जा रही है। विद्यार्थियों की संख्या में प्रतिवर्ष इजाफा होने के बावजूद क्लास रूम हो, चाहे पुस्तकालय हो, चाहे प्रयोगशाला चारों और सन्नाटा छाया हुआ है। कॉलेज में प्रवेश लेने के पश्चात अन्ततः छात्र जा कहाँ रहे हैं ? आज के हालात में यह हमारे लिए चिन्तन एवं चिंता का महत्वपूर्ण विषय होना चाहिये।

जहां रोजगार की गारंटी है (IIT, AIMS, IIM आदि) ऐसे श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश प्राप्त करने हेतु तथा सरकारी नौकरी के लिए कॉलेज के स्थान पर कोचिंग संस्थान युवाओं के आकर्षण का केंद्र बन गए हैं। सरकारी नौकरी के लिए जो व्यवस्था बनाई है उसमें चयन के लिए युवकों को अपने परंपरागत कॉलेज के स्थान पर कोचिंग संस्थानों का अध्ययन-अध्यापन ज्यादा प्रभावी दिखाई दे रहा है। कोचिंग संस्थानों में प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम के अनुरूप ही पढ़ने-लिखने की व्यवस्था कर रखी है। कोचिंग में केवल और केवल क्लास रूम टीचिंग ही है।

राजकीय अवकाशों की लम्बी श्रंखला, छात्रसंघ चुनाव, नारेबाजी, हड़ताल जैसी गतिविधियों के लिए कोचिंग संस्थानों में कोई स्थान नहीं है। इन अनुत्पादक कार्यों में छात्रों को समय खराब नहीं करना पड़ता है। विद्यार्थियों की मानसिकता में एक अच्छा परिवर्तन यह आया है कि वे आज के प्रतियोगी माहौल में समय के उपयोग के प्रति बहुत गंभीर हैं।

दूसरी ओर विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों की रचना का उद्देश्य ही भिन्न है। कॉलेज एवं विश्वविद्यालय के संचालन पर सरकार जहाँ करोड़ों रुपए खर्च कर रही है वहीं दूसरी ओर क्लास रूम खाली पड़े हैं। न्यायालय द्वारा निर्धारित 75% उपस्थिति का मजाक हो रहा है। शिक्षक, विद्यार्थी, माता-पिता, समाज सभी इस अव्यवस्था के साक्षी होने के बावजूद शान्त हैं परन्तु आखिर कब तक......।

एक तरफ आलीशान भवन, फर्नीचर, प्रयोगशाला, पुस्तकालय एवं यू.जी.सी. द्वारा निर्धारित योग्यताधारी अध्यापक होने के बावजूद प्रातः 10:00 बजे जैसे अनुकूल समय पर भी विद्यार्थी क्लास रूम से दूर भाग रहा है और कोचिंग सेंटर में 10 गुना फीस देकर बेसमेंट में लगी बेंच पर बैठकर प्रातः 6:00 बजे सामान्य काउंसलर से बड़ी गंभीरता के साथ अध्ययनरत हैं। आज अभिभावक भी बच्चे को ट्यूशन पर भेजकर गर्व का अनुभव करने लग गये हैं। ऐसी स्थिति में कोचिंग सेंटर्स की आलोचना करने से काम नहीं चलेगा अपितु शोध की आवश्यकता यह है कि ऐसा क्यों हो रहा है, और उसे ठीक करने के लिये हमारी वर्तमान व्यवस्था में किस प्रकार के परिवर्तन अपेक्षित हैं? न केवल भारत अपितु एशिया के कई देशों में ट्यूशन का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। औपचारिक शिक्षा का सिस्टम कमजोर होने से कोचिंग को बढ़ावा मिला है। एक जानकारी के अनुसार भारत, पाकिस्तान से लेकर इंडोनेशिया तक करीब 25 करोड़ बच्चे ट्यूशन ले रहे हैं। हाँगकाँग में 72%, दक्षिण कोरिया में 79%, जापान में 52% छात्र ट्यूशन पढ़ते है। चीन में2021 में पाबंदी से पहले 38% छात्र ट्यूशन पढ़ते थे। हमारे देश में कोटा शहर कोचिंग की राष्ट्रीय राजधानी बन चुका है। जहाँ प्रतिवर्ष पूरे देश से लगभग दो लाख विद्यार्थी कोचिंग संस्थानों में अध्ययन करने आते हैं।

इस संक्षिप्त आलेख के माध्यम से मेरा सुझाव है कि सरकारी नौकरी में चयन हेतु आयोजित प्रतियोगी परीक्षा के प्राप्तांकों के साथ स्नातक / स्नातकोत्तर परीक्षाओं में प्राप्त अंकों का 20 फीसदी से 30 फीसदी वजन रखा जाना चाहिये। नि:सन्देह गणना कठिन है क्योंकि राज्यों की परीक्षा व्यवस्था में भिन्नताएं बहुत है। दूसरा, विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों को आधार मान कर ही प्रतियोगी परीक्षाओं का पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये। इससे कॉलेजों में स्वाभाविक रूप से उपस्थिति बढ़ेगी।

धरातल की सच्चाई को समझते हुए, कोचिंग संस्थानों की उपस्थिति को सहर्ष स्वीकार करते हुए सरकार को कॉलेजों की भांति कोचिंग संस्थानों को संचालित करने के लिये शिक्षकों, भवन, फर्नीचर, पुस्तकालय, आदि के लिए नियम बनाते हुए लागू करना होगा, जिससे छात्रों को कॉलेजों की भांति कोचिंग सेन्टर पर भी आवश्यक सुविधाएँ मिलने लगेंगी। नालंदा और तक्षशिला के समय से इतिहास गवाह है कि हमें विश्वविद्यालयों की समाज में उपयोगिता बनाये रखनी है। हालात इतने खराब नहीं हैं इसलिए इन्हें पुनः जीवन्त किया जा सकता है और यथाशीघ्र किया जाना चाहिये। इस विषय पर विद्वान शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मध्य चर्चा – परिचर्चा आवश्यक हैं।

–डॉ. कैलाश सोडाणी,
कुलगुरु,
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

विवाह सम्मेलन में 85 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे

सरवाड़, (निसं)। सरवाड़ शहर में यदुवंशी सैनी समाज का नवम सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन समिति के तत्वावधान में मंगलवार को शहर स्थित यदुवंशी माली भवन में किया गया।

सम्मेलन में समाज के 85 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे। वहीं बारात के माली भवन पहुंचने पर तोरण व वरमाला की रस्म निभाई गई। बाद में पंडितों द्वारा 85 जोड़ों का पाणिग्रहण संस्कार करवाकर परिणय सूत्र में बांधा।

इस मौके पर समिति के अध्यक्ष ने कहा कि सामूहिक विवाह होते रहने चाहिए। वहीं समाज के लोगों में इस आयोजन को लेकर खासा उत्साह नजर आया। समिति के उपाध्यक्ष ने बताया कि सामूहिक विवाह सम्मेलन में समाज में एकता और सामूहिकता की भावना को बढ़ावा देने का प्रयास है। वहीं बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने सम्मेलन की तैयारियों को संभाले रखा। इस दौरान भामाशाहों का सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर सम्मेलन में हजारों की संख्या में लोग शामिल रहे।

राइजिंग मेन पाइप लाइन से 23 अवैध जल कनेक्शन हटाए

नसीराबाद, (निसं)। ग्रामीण जल उपखंड नसीराबाद के अंतर्गत रामसर से तिहाड़ी तक की राइजिंग मेन पाइपलाइन पर जलदाय विभाग द्वारा बड़ी कार्रवाई करते हुए 23 अवैध जल कनेक्शन हटाए गए। यह कार्रवाई विभाग को मिल रही लगातार शिकायतों के बाद की गई।

जलदाय विभाग की विशेष टीम ने निरीक्षण के दौरान पाइपलाइन से की जा रही अवैध जल निकासी को चिन्हित कर त्वरित कार्रवाई करते हुए सभी अवैध कनेक्शन हटाए। इन अवैध कनेक्शनों के कारण क्षेत्र के अन्य उपभोक्ताओं को नियमित जल आपूर्ति में परेशानी हो रही थी। इस कार्रवाई में ग्रामीण जल उपखंड नसीराबाद के अभियंता, लाइन स्टाफ और अन्य विभागीय कार्मिक मौजूद रहे। विभाग की ओर से यह भी स्पष्ट किया गया कि आगे भी इस प्रकार की निगरानी जारी रहेगी और अवैध जल उपभोग करने वालों के विरुद्ध नियमानुसार दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 7 मई, 2025

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र सायं 6:17 तक, व्याघात योग रात्रि 1:05 तक, गर करण दिन 10:20 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 12:58 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग सायं 6:17 तक है। भद्रा रात्रि 11:25 से आरम्भ होगी। आज श्री महावीर स्वामी केवल्य ज्ञान (जैन) और श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ अमृत सूर्योदय से 9:06 तक, शुभ 10:44 से 12:23 तक, चर 3:41 से 5:20 तक, लाभ 5:20 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:48, सूर्यास्त 6:58

मेष
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज भाई-बंधुओं के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। शुभ कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कुंभ
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

मॉकड्रिल में हर विभाग मुस्तैदी से निभाए जिम्मेदारी : संभागीय आयुक्त

- सायरन बजने के साथ होगा ब्लैक आउट, 15 मिनट लाइट्स बंद रखने की अपील
- आपातकालीन हालात से निपटने की तैयारियों को परखेंगे

उदयपुर में मॉक ड्रिल को लेकर मुख्य सचिव सुधांश पंत ने वीडियो कांफ्रेन्स के माध्यम से बैठक लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

उदयपुर, (कासं)। केंद्रीय गृह मंत्रालय के निर्देश पर देश भर में आपातकालीन हालातों से निपटने के लिए सिविल डिफेन्स मॉक ड्रिल चलाई जा रही है। इसी कड़ी में बुधवार को उदयपुर सहित प्रदेश भर में प्रस्तावित मॉक ड्रिल को लेकर मुख्य सचिव सुधांश पंत ने वीडियो कांफ्रेन्स के माध्यम से बैठक लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उदयपुर में संभागीय आयुक्त प्रज्ञा केवलरमानी, पुलिस महानिरीक्षक राजेश मीणा, जिला कलक्टर नमित मेहता, पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल सहित प्रशासन और पुलिस के सभी आला अधिकारी वीसी के माध्यम से बैठक में शामिल हुए।

वीसी में मुख्य सचिव पंत एवं सैन्य अधिकारियों ने मॉक ड्रिल के दौरान विभिन्न विभागों की ओर से की जाने वाली गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा करते हुए सभी को मुस्तैदी से कार्य करने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव की वीसी के बाद संभागीय आयुक्त, आईजी, जिला कलक्टर व एसपी ने अधिकारियों की बैठक ली। इसमें मॉक ड्रिल के दौरान आवश्यक प्रबंध, विभिन्न विभागों की भूमिका आदि पर विस्तृत चर्चा की। जिला कलक्टर श्री मेहता ने बताया कि मॉक ड्रिल के दौरान हवाई हमले की स्थिति में चेतावनी प्रणाली, बचाव और राहत गतिविधियों का पूर्वाभ्यास किया जाएगा। इसमें सिविल डिफेंस और अग्निशमन विभाग, होम गार्ड एवं एसडीआरएफ की ओर से सर्च और रेस्क्यू ऑपरेशन, प्रभावित क्षेत्रों के नागरिकों को त्वरित उपचार उपलब्ध कराने के लिए स्थापित अस्थायी अस्पतालों तक पहुंचाने आदि का पूर्वाभ्यास किया जाएगा। जिला कलक्टर ने इन गतिविधियों से जुड़े विभागोंको आवश्यक प्रबंध सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही शिक्षा विभाग, कॉलेज शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, नेहरू युवा केंद्र को एनसीसी, एनएसएस, स्काउट आदि के सहयोग से जन जागरूकता अभियान चलाने, नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षण आयोजित करने के निर्देश दिए। पूर्वाभ्यास के तहत ही रात्रि में सायरन बजने के साथ ब्लैक आउट का भी अभ्यास किया जाएगा। इसमें आमजन से 15 मिनट के लिए बिजली बंद रखने की अपील की गई है। इस दौरान पुलिस विभाग को कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक एहतियातन कदम उठाने, बीएसएनएल को सायरन और हॉटलाइन व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। चिकित्सा विभाग को समस्त मेडिकल छात्रों को संबंधित अस्पतालों में उपस्थित रहने के लिए पाबंद करने के भी निर्देश दिए। संभागीय आयुक्त सुश्री केवलरमानी ने सभी विभागीय अधिकारियों को संबंधित तैयारियां पूर्ण रखने तथा पूर्ण गंभीरता से कार्य करने के निर्देश दिए। मॉक ड्रिल को लेकर जिला कलक्टर नमित मेहता ने आमजन से अपील की। उन्होंने कहा कि बुधवार को एक नियोजित ब्लैक आउट मॉकड्रिल है, जिसका उद्देश्य आपातकालीन स्थितियों में प्रशासनिक तथा आपदा राहत एवं बचाव की तैयारियों को परखना है। इसमें आमजन को किसी भी प्रकार से घबराने या असहज होने की आवश्यकता नहीं है। मॉक ड्रिल के दौरान सायरन बजने के साथ ही सभी नागरिक 15 मिनट के लिए अपने घरों, दुकानों, संस्थानों आदि की सभी लाइटस् बंद कर दें। इंवर्टर, सोलर लाइट, जनरेटर आदि वैकल्पिक विद्युत स्त्रोत भी बंद कर अभ्यास में सहयोग करें। आपातकालीन चिकित्सा व्यवस्था पर ब्लैक आउट लागू नहीं होगा। जिला कलक्टर ने आमजन से अफवाह से बचने व निर्देशों का शांतिपूर्वक पालन करने की अपील की है।

झाड़ोल जेल को बनाया डिटेंशन सेंटर

उदयपुर, (कासं) ।जिले के झाडोल उप कारागृह को अब डिटेंशन सेंटर बना दिया गया है। वहां पर अवैध प्रवासियों को अस्थायी रूप से रखा जाएगा। इस सेंटर में उदयपुर संभाग के आने वाले जिलों में पकडे जाने वाले प्रवासियों को रखा जाएगा।

उदयपर के आआईजी राजेश मीणा के अनुसार झाड़ोल उप कारागृह में 47 कैदी थे, जिनको जेल विभाग ने दूसरी जगह शिफ्ट कर दिया है। अब उस परिसर को डिटेंशन सेंटर बना दिया गया है। इस सेंटर पर उदयपुर संभाग के जिलों के अधीन क्षेत्रों में पकडे जाने वाले अवैध अप्रवासियों या विदेशी नागरिकों को अस्थायी रूप से रखा जा सकेगा जो देश में अवैध रूप से रह रहे होते है।

आईजी राजेश मीणा ने बताया कि पिछले दिनों सलूंबर जिले में पुलिस ने पकडे 27 बांग्लादेशियों को भी अब इसी सेंटर पर शिफ्ट किया जाएगा। उन्होंने बताया कि यहां रखने के बाद जैसे ही गृह मंत्रालय से प्रक्रिया पूरी हो जाएगी और आगे से उनको बांग्लादेश भेजने का शेड्यूल आते ही हमारी तरफ से टीम इनको तय गाइडलाइन के अनुसार लेकर पश्चिमी बंगाल लेकर जाएगी और बीएसएफ को सुपुर्द करेगी और उसके बाद वहां से उनको बांग्लादेश भेजा जाएगा।उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों सलूंबर पुलिस ने अवैध बांग्लादेशी रोहिंग्या नागरिकों की पहचान कर 27 अवैध बांग्लादेशी नागरिकों को डिटेन किया था।

सम्पर्क पार्टल पर लम्बित प्रकरणों की समीक्षा की

बांसवाड़ा, (निसं)। जिला कलक्टर डॉ इन्द्रजीत यादव ने सम्पर्क पार्टल पर 50 दिन से अधिक लम्बित प्रकरणों पर संबंधित अधिकारी को नोटिस देने और सीएमओ पार्टल पर दर्ज प्रकरणों को आज ही निस्तारण कर रिपोर्ट ऑन लाईन दर्ज करवाने के निर्देष मंगलवार को साप्ताहिक बैठक में अधिकारियों को दिये। बैठक में सम्पर्क पार्टल पर 30 दिन से अधिक लम्बित प्रकरणों की समीक्षा की और कहा की काम करें कहानिया न बनाएं।

उन्होंने उपखण्ड अधिकारियों व विकास अधिकारियों को सख्त निर्देष दिये कि वे अपने अधीनस्थ अधिकारियों व कार्मिको को पाबन्द करते हुए फिल्ड में जाए और आंधी तुफान में हुए नुकसान की वस्तुस्थित की रिर्पाट भिजवाएं और जहां कही बिजली संबंधी समस्या है उसका मौके पर रहकर निस्तारण करवाएं इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही नही बरते। बैठक में नई फ्लैगशिप योजनाएं संबंधी कार्य में कम प्रगति पर फटकार लगाई और कहा कि उच्चस्तर पर इसकी मॉनेटरिग की जा रही इसे प्राथमिकता के साथ करने के निर्देष दिये। उन्होंने साफ कहा कि पालनहार पेन्षन के सर्वे कार्य में ढिलाई बर्दाष्त नही की जाएगी। जिला कलक्टर ने ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यस्थाओं को लेकर समस्त विकास अधिकारियों को निर्देष दिये की वे इस कार्य को नियमित प्राथमिकता के साथ करवाएं और इसमें कौताही करने वाले कार्मिक को तत्काल हटाए। कलक्टर ने बैठक में अनुपस्थित अधिकारियों को कारण बताओं नोटिस जारी करने के भी निर्देश दिये। बैठक में ओआईसी आरपीजी समस्त अधिकारी जिला जनसुनवाई, पीएचईडी, जेजेएम-लंबित बिजली कनेक्शन, एवीवीएनएल विद्युत आपूर्ति, स्कूलों और आबादी क्षेत्रों में उच्च जोखिम वाले विद्युत बिंदुओं की पहचान और सुधार पहचान किए गए बनाम सुधारे गए बिंदुओं की संख्या सीएमएचओ ई-केवाईसी, डीएसओ लंबित एनएफएसए आवेदन, ओआईसी रिलीफ सहायता के लंबित प्रकरण एवं ओआईसी डेवलेपमेंट नई फ्लैगशिप योजनाएं आदि बिन्दुओं की समीक्षा की और अब तक की प्रगति की जानकारी ली।

हाई कोर्ट बेंच की मांग, धरना प्रदर्शन आज

उदयपुर, (कासं)। मेवाड बगड हाई कोर्ट बेंच संघर्ष समिति, बार एसोसिएशन उदयपुर एवं जिला संघर्ष समिति के संयुक्त तत्वावधान में उदयपुर में हाई कोर्ट बेंच की मांग को लेकर बुधवार सुबह जिला न्यायालय परिसर में धरना प्रदर्शन किया जाएगा तथा न्यायालय परिसर में रैली निकली जाएगी।बार एसोसिएशन के अध्यक्ष चंद्रभान सिंह शक्तावत ने बताया कि आंदोलन को स्वरूप देने के लिए मंगलवार को बार सभागार में मेवाड बगड हाई कोर्ट बेंच संघर्ष समिति के संयोजक एडवोकेट रमेश नंदवाना की मौजूदगी में रणनीति तय की गई तथा आगामी आंदोलन की रूपरेखा तय की गई।बैठक में उदयपुर संभाग के जिलों में किए जाने वाले आंदोलन की रूपरेखा तय करने के लिए प्रभारी अधिवक्ता नियुक्त किए गए एडवोकेट रामकृपा शर्मा को बांसवाडा जिला,राकेश मोगरा को प्रतापगढ जिला, हेमंत शर्मा को चित्तौड जिला,एडवोकेट हरीश पालीवाल को डूंगरपुर जिला,भरत वैष्णव को उदयपुर जिला के साथ सलूंबर और मनीष शर्मा को भीलवाडा जिला एवं महासचिव महावीर शर्मा को राजसमंद जिले की जिम्मेदारी दी गई है।

सामूहिक विवाह सम्मेलन में 21 जोड़े बने हमसफर

बामणिया बंजारा समाज सेवा संस्थान द्वारा सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित हुआ।

कपासन, (निसं)। कपासन में बामणिया बंजारा समाज सेवा संस्थान द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन में मेवाड़, मालवा और उपरमाल क्षेत्र के 21 जोड़े विवाह बंधन में बंधे। इस अवसर पर तुलसी और श्री शालिग्राम जी का विवाह भी संपन्न हुआ।

सज्जन वाटिका से निकली शोभायात्रा में सभी दूल्हे घोड़ों पर और दुल्हनें बग्गियों में सवार थीं। ठाकुर जी को रथ में विराजमान किया गया। यात्रा श्री सांवलिया चौराहा और पांच बत्ती चौराहे से होते हुए एसएआर वाटिका पहुंची। नगर पालिका अध्यक्ष मंजुदेवी सोनी ने ठाकुर जी की अगवानी की। पंडित किशन खंडेलवाल और उनके दल ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विवाह की रस्में संपन्न कराईं। विशेष बात यह रही कि गुजरात न्यायालय में लोक अभियोजक करिश्मा और रेलवे टीटी मंदसौर के शैलेन्द्र सिंह ने भी इस सामूहिक विवाह में शादी की।संस्थान ने सभी जोड़ों को सोने की नथ, कान की बालियां, चांदी की पायल और बिछुड़िया सहित पांच आभूषण दिए। साथ ही एलईडी, फ्रिज, कूलर और 135 घरेलू बर्तन भी भेंट किए। कार्यक्रम में करीब सात हजार समाजजन शामिल हुए। बारिश के बावजूद आयोजन समिति ने वैकल्पिक व्यवस्था कर कार्यक्रम को सफल बनाया।इस अवसर पर समाज के संस्थान के अध्यक्ष देवीलाल, उपाध्यक्ष बद्रीलाल, सचिव कलेश, कोषाध्यक्ष दिनेश बैंस, संगठन मंत्री रामलाल कछावा आदि का सहयोग रहा। साथ ही बमणिया बंजारा समाज द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन, प्रतिकूल मौसम के कारण दशहरा मैदान से स्थान परिवर्तन कर वाटिका में सफ़लतापूर्वक आयोजित किया गया। जहां परिवार द्वारा सभी वर वधूओं का स्वागत किया गया।

तोड़फोड़ करने का मामला दर्ज

उदयपुर, (कासं)। जमीन पर हिस्से की मांग को लेकर तीन बहनो और दामाद आए दिन जमीन पर हंगामा करने और तोडफोड करने का मामला दर्ज हुआ है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार देवीलाल पुत्र स्व. चैनाराम पालीवाल निवासी नोहरा लखावली बडगांव ने कैलाश पत्नी दिनेश पालीवाल निवासी टीचर्स कालोनी अम्बामाता, इसके पति दिनेश पालीवाल प्रेम कुमारी पालीवाल पत्नी ओमप्रकाश पालीवाल निवासी बांस वाली गली सुंदरवास, इसके पति ओम प्रकाश पालीवाल, अम्बापालीवाल पत्नी चन्द्र प्रकाश पालीवाल निवासी तितरडी, इसके पति चन्द्र प्रकाश पालीवाल के खिलाफ रिपोर्ट दी कि प्रार्थी के पिता चैनराम पालीवाल के द्वारा खरीदी गई कृषि भूमि को प्रार्थी व उसके दोनों भाई दुर्गाशंकर पालीवाल व सुनिल पालीवाल को 1 अगस्त 2018 को गिफ्ट डीड के सौंप दी थी। इस भूमि पर प्रार्थी के स्व. पिता ने जब से जमीन खरीदी तब से ही तीनों भाईयों का अधिकार है। दिनेश पालीवाल और ओम प्रकाश पालीवाल और चन्द्र प्रकाश पालीवाल ने प्रार्थी की बहनों कैलाष पालीवाल, प्रेम पालीवाल तथा अम्बा पालीवाल को प्रार्थी और उसके भाईयों के खिलाफ उकसाया कि पिताजी की जमीन वर्तमान में बहुत कीमती हो गई हैं और इस जमीन में अपन भी हिस्सा लेंगे, जबकि प्रार्थी की तीनों बहनों के साथ ही पूरे परिवार को यह जानकारी थी कि प्रार्थी के पिताजी ने अपने जीवन काल में ही इस जमीन अपने तीनों पुत्रों को गिफ्ट डीड के सुपुर्द कर दी थी।

प्रार्थी की तीनों बहनें कैलाश, अम्बा व प्रेम व उनके पति दिनेश पालीवाल, चन्द्रप्रकाश व ओमप्रकाश पालीवाल मेरे गांव लखावली पर आए दिन आते रहते है और गाली-गलौच करते है और सभी आरोपी मिलकर प्रार्थी के घर पर पत्थर फैंकते है।

पत्नी पर हमला करने वाला पति गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। जिले की झाडोल थाना पुलिस ने शराब के नशे में अपने ससुराल जाकर पत्नी पर जानलेवा हमला करने में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी फैलीराम ने बताया कि 13 अप्रैल को प्रेमी बाई पत्नी प्रभुलाल निवासी कोचला फला लखु बरा झाडोल ने मामला दर्ज करवाया कि 12 अप्रैल को रात्री करीब 12 बजे वह, उसकी माता चतरी बाई व बहन ममता सभी घर पर थे। तभी उसका पति प्रभुलाल पुत्र वरदा शराब के नशे में झगडा करते हुए उस पर चाकू से हमला कर दिया। जिससे उसके नाक, हाथ व सिर पर गंभीर चोटे आई है। उसे जान से मारने की नीयत से चाकू से हमला किया है।

हंगामे के बाद पति को किया गिरफ्तार

भीण्डर, (निसं)। भीण्डर के निकटवर्ती डोरकुंआ गांव में गत 3 मई को पति के प्रेम संबंध से परेषान होकर विवाहिता के आत्महत्या के मामले में मंगलवार को भीण्डर पुलिस थाने के बाहर करणी सेना व परिजनों द्वारा हंगामा करने पर पुलिस ने पति को गिरफ्तार कर दिया। लेकिन विवाहिता के परिजन सास-ससुर व ननद को भी गिरफ्तार करने की मांग पर अडे रहे, जिस पर पुलिस ने जांच करके 7 दिन के अंदर नियमानुसार कार्यवाही का आष्वासन देकर हंगामा षांत करवाया।

श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के युवा जिलाध्यक्ष अर्जुनसिंह चुंडावत के आव्हान पर मंगलवार सुबह 11 बजे भीण्डर पुलिस थाने के बाहर सैकड़ों समाजजन एवं मृतक विवाहिता के परिजन एकत्रित हो गये। इसमें महिलाएं भी षामिल हुई थी। करणी सेना के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन करते हुए विवाहिता की मौत के मामले में पति राजेंद्र सिंह शक्तावत, ससुर रतन सिंह, सास कैलाष कुंवर, ननद सुषीला कुंवर के साथ-साथ प्रेम संबंध रखने वाली औरत के गिरफ्तारी की मांग रखी।

युवा अध्यक्ष अर्जुनसिंह चुंडावत ने कहा कि समाज के ऐसे लोगों को कड़ी से कड़ी सजा होनी चाहिए, बहन-बेटियों को परेषान व मारपीट करके मरने की नौबत आ जाती हैं ऐसे लोगों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही होनी जरूरी है। पति के साथ-साथ परिवार भी बराबर दोशी हैं कि बेटे की हरकतों पर ध्यान नहीं देकर बहु को मरने के लिए छोड़ दिया। इस दौरान महिला नेतृत्व कर रही संभाग प्रभारी बसंत कुंवर ने कहा कि दहेजलोभी व असामाजिक लोगों की वजह से मासूम बेटियों का जान गंवानी पड़ती हैं, अगर आज ऐसे लोगों पर कड़ी कार्यवाही नहीं हुई तो आगे चलकर और दुश्परिणाम देखने को मिलेंगे।

इस दौरान मृतका सुमन कुवर के भाई शैतान सिंह, माता-पिता, करणी सेना के संभाग प्रभारी बसंत कुवर, महिला जिलाध्यक्ष कृष्ण कुवर, ग्रामीण जिला अध्यक्ष हुकुम कुमार, प्रभारी सीमा कुंवर, अभय सिंह, कृष्ण पाल सिंह, भंवर सिंह, भीम सिंह, करण सिंह, ललीत सिंह, अजीत सिंह सहित सैकड़ो कार्यकर्ता एवं समाजजन उपस्थित रहे।

करणी सेना व परिजनों के हंगामें को देखते हुए भीण्डर पुलिस ने मृतका के पति राजेन्द्र सिंह को तुरंत गिरफ्तार कर दिया। हालांकि पुलिस पुछताछ के लिए पहले से थाने में लेकर आ चुकी थी। इसके अलावा अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी पर थानाधिकारी पुनाराम गुर्जर ने कहा कि मामले की जांच करके 7 दिन के अंदर जिस किसी की भी संलिप्पता होगी तो तुरंत गिरफ्तार किया जायेगा। हंगामें को देखते हुए भीण्डर पुलिस ने कानोड़ व वल्लभनगर थाने से जाप्ता भी मंगवाया।

कलेक्टर ने आयुष्मान आरोग्य मंदिर का किया निरीक्षण

छोटी सरवन क्षेत्र के नापला और डेरी आयुष्मान आरोग्य मंदिरों का आकस्मिक निरीक्षण कर निर्देष देते जिला कलक्टर डॉ. इंद्रजीत यादव।

बांसवाड़ा, (निसं)। जिले को एनीमिया मुक्त बनाने के लक्ष्य की दिशा में जिला कलक्टर डॉ. इंद्रजीत यादव ने छोटी सरवन क्षेत्र के नापला और डेरी आयुष्मान आरोग्य मंदिरों का आकस्मिक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मौके पर मौजूद स्वास्थ्यकर्मियों, आशा सहयोगिनियों, एएनएम और सीएचओ से बातचीत कर स्वास्थ्य सेवाओं की जमीनी स्थिति की जानकारी ली और आवश्यक निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान उपखंड अधिकारी सुनील कुमार पीपलीवाल, आरसीएचओ डॉ. दिनेश कुमार भाबोर, बीसीएमओ डॉ. मुकेश मईडा, आईईसी सीओ अमित शाह रहे। मंगलवार को जिला कलक्टर डॉ. यादव ने नापला आयुष्मान आरोग्य मंदिर का निरीक्षण किया। यहां उन्होंने उन गर्भवती महिलाओं की सूची तैयार करवाई जिनका हिमोग्लोबिन स्तर 10 ग्राम-डीएल से कम है। उन्होंने निर्देश दिए कि इन महिलाओं को संस्थान बुलाकर रक्त सैंपल लिए जाएं और सीएचसी स्तर पर पुनः जांच करवाई जाए। इसके साथ ही उन्होंने पीसीटीएस एप में की गई एंट्री और रजिस्टर के मिलान की भी समीक्षा की। इस मौक पर नापला की आशा कार्यकर्ता पार्वती निनामा ने एप के माध्यम से अपने कार्यों की जानकारी दी, जिला कलक्टर ने पीसीटीएस एप की बारिकियों को बताया और समझाते हुए उसके फायदों को भी लाइव दिखाया। उन्होंने प्रोत्साहन राशि की जानकारी के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर सीएचओ मनोज डिंडोर और एएनएम गीता राजोरिया भी उपस्थित रहीं।

जिला कलक्टर ने डेरी केंद्र पर पहुचें और वहा स्वास्थ्य सेवाओं के अच्छे संचालन पर टीम की सराहना की। मौके पर की रिपोर्ट के अनुसार केवल एक गर्भवती महिला का ही हिमोग्लोबिन कम पाया गया, जबकि शेष 78 एएनसी का स्तर संतोषजनक था। उन्होंने नियमित जांच और सतत फॉलोअप करने पर जोर दिया। इस मौके पर स्थानीय स्वास्थ्यकर्मियों द्वारा पानी की समस्या बताए जाने पर कलेक्टर ने मौके से ही संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि समस्या का शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जाए। साथ ही उन्होंने निर्देश दिए कि योग्य दंपतियों का प्रारंभिक चरण में ही हिमोग्लोबिन जांच करवाई जाए ताकि गर्भावस्था से पूर्व ही एनीमिया नियंत्रण पर कार्य किया जा सके। इस दौरान सीएचओ प्रियंका सुथार, शकुंतला, विमला, मणि एवं एएनएम पुष्पा उपस्थित रहीं।जपाइगो के जिला अधिकारी लोकेश शर्मा भी मौके पर मौजूद रहे। उन्होंने जिला कलेक्टर डॉ. इंद्रजीत यादव को बीपी, एचबी और वेट मषीन को पीसीटीएस से ब्लूटूथ द्वारा कनेक्ट की प्रक्रिया को दिखाया।

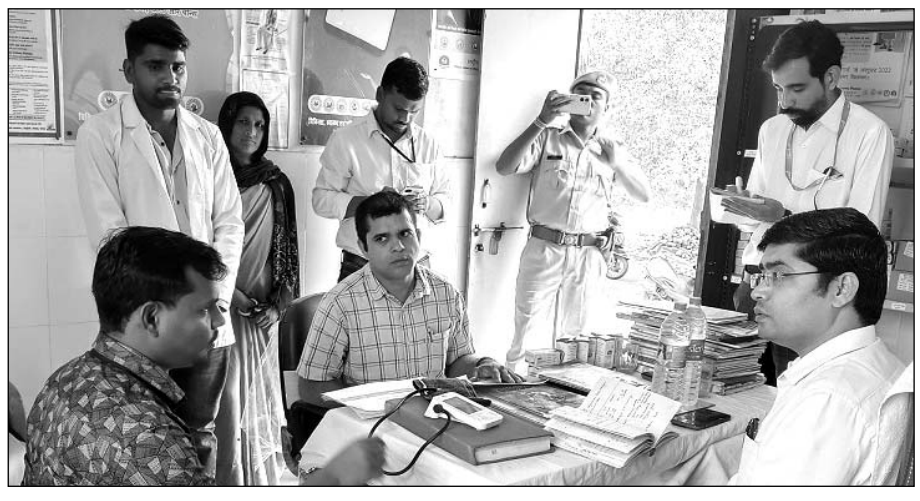

सार-समाचार

विश्व अस्थमा दिवस पर वर्कशॉप

उदयपुर, (कासं)। विश्व अस्थमा दिवस के अवसर पर पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल के वक्ष एवं क्षय रोग विभाग की ओर से विशेष जागरूकता वर्कशॉप का आयोजन किया गया। विश्व अस्थमा दिवस हर साल मई महीने के पहले मंगलवार को मनाया जाता है। इस वर्ष की था' मेक इनहेल्ड ट्रीटमेंट्स एक्सेसिबल फॉर ऑल' रखी गई है। वर्कशॉप का उद्घाटन पीएमसीएच के प्रिंसिपल डॉ.यू.एस.परिहार, वक्ष एवं क्षय रोग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सी. एस.प ुरोहित, डॉ.अतुल लुहाडिया, डॉ.सुनील कुमार, डॉ.दीपक कालरा, डॉ.मनीष आडवानी एवं डॉ.ज्योति कुमारी ने । वर्कशॉप के दौरान डॉ.सी.एस.पुरोहित ने कहा कि अस्थमा एक पुरानी सांस की बीमारी है, जिससे दुनियाभर में करोड़ों लोग प्रभावित हैं। भारत में लगभग 3.5 करोड़ लोग अस्थमा से पीड़ित हैं, जिनमें से एक बडी संख्या बच्चों और बुजुर्गों की है। विशेषज्ञों के अनुसार, प्रदूषण, धूल, धूम्रपान और जीवनशैली संबंधी कारणों से अस्थमा के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। डॉ.पुरोहित ने कहा कि वर्कशॉप का उद्देश्य आमजन और चिकित्सा विद्यार्थियों को अस्थमा की गंभीरता, इसके लक्षण, रोकथाम और उपचार के आधुनिक तरीकों के प्रति जागरूक करना है। वर्कशॉप के दौरान वक्ष एवं क्षय रोग विशेषज्ञ डॉ.सुनील कुमार ने ब्रोन्कियल अस्थमा डायग्नोसिस के बारे में बताते हुए अस्थमा रोग में स्पाइरोमेट्री एवं लक्षण आधारित जॉच की महत्ता के बारे में चर्चा की।

चिकित्सा संस्थानों का किया निरीक्षण

राजसमंद, (निसं)। हीट वेव एवं मौसमी बीमारियों से बचाव को लेकर चिकित्सा संस्थानो में की गई व्यवस्थाओं का निरीक्षण करने तथा आवश्यक सुधार को लेकर राज्य परियोजना निदेशक मातृ स्वास्थ्य डॉ तरूण चौधरी 5 दिवसीय दौरे पर राजसमंद पहुंचे तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र जस्साखेडा, बग्गड व बरार का निरीक्षण किया तथा चिकित्सा अधिकारी प्रभारीयों एवं स्टॉफ को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने चिकित्सा संस्थानो में जांच, उपचार एवं छाया पानी के माकूल इंतजाम, संस्थान में आवश्यक दवाइंयो एवं उपकरणो की उपलब्धता, संस्थानों में वाटर कुलर, पंखे, कूलर की क्रियाशीलता, संस्थानों में हीट वेव व मौसमी बीमारियों के मरीजों के लिए आवश्यकता अनुसार बेड्स की उपलब्धता की भी समीक्षा की। वें यहां जिला चिकित्सालयों के साथ ही सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रो एवं अन्य चिकित्सा संस्थानो का भी निरीक्षण करेंगे तथा आवश्यक होने पर मौके पर ही दिशा-निर्देश प्रदान कर तुरंत व्यवस्थाओं में सुधार करवाएंगे। वे यहां सीएमएचओ डॉ हेमन्त बिन्दल एवं अन्य जिला चिकित्सा स्तरीय विभागीय अधिकारीयों के साथ बैठक कर समीक्षा करेंगे तथा आवश्यक दिशा निर्देश देंगे। जस्साखेडा, बग्गड व बरार में चिकित्सा संस्थानों के निरीक्षण के दौरान वहां भर्ती मरीजो से कुशलक्षेम पूछी तथा परिजनो से संस्थान में मिल रहे उपचार को लेकर फिडबैक लिया।

नाबालिग को भगाने वाला गिरफ्तार

कपासन, (निसं)। पुलिस ने नाबालिग के अपहरण के मामले में 25 वर्षीय आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान बूंदी जिले के श्रवण मीणा झोपड़ा अलोद निवासी हरिसिंह मीणा के रूप में हुई है। 15 अप्रैल को नाबालिग लड़की के परिजनों ने थाने में लापता होने की रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। डीएसपी हरजीलाल यादव के निर्देशन में थानाधिकारी रतन सिंह की टीम ने जांच शुरू की। तकनीकी जांच में पता चला कि आरोपी लड़की को अपने साथ ले गया था। पुलिस ने आरोपी से नाबालिग को बरामद कर लिया। लड़की को बाल कल्याण समिति के सामने पेश करने के बाद परिजनों को सौंप दिया गया। जांच में खुलासा हुआ कि आरोपी की नाबालिग से इंस्टाग्राम पर चार-पांच महीने पहले दोस्ती हुई थी। आरोपी पर पहले भी दो लड़कियों के साथ इसी तरह की घटनाएं करने का आरोप है। एक मामले में उसके खिलाफ पहले से मुकदमा दर्ज है। पुलिस ने आरोपी को पोक्सो न्यायालय चित्तौड़गढ़ में पेश किया।

बस की टक्कर से युवक की मौत

देवगढ़, (निसं)। देवगढ़ आमेट रोड़ पर स्वादड़ी गांव के समीप मंगलवार को ट्रावेल्स बस ने बाइक को टक्कर मार दी जिसमें बाइक पर पीछे बैठे युवक की मौके पर ही मौत हो गई एवं चालक घायल हो गया।देवगढ़ पुलिस के अनुसार आमेट से एक ट्रावेल्स बस देवगढ़ की तरफ आ रही थी। स्वादड़ी स्कूल के समीप उसके आगे एक बाइक चल रही थी जिसे ओवरटेक कर आगे निकलने के दौरान बस ने बाइक को अपनी चपेट में ले लिया जिससे बाइक नीचे गिर गई। बस की टक्कर से बाइक पर पीछे बैठे युवक मालातो का वास, छापली दिवेर निवासी दीपक सिंह उम्र 19 वर्ष पिता गाजी सिंह रावत की मौके पर ही मौत हो गई वही बाइक चला रहा युवक दयाल सिंह रावत घायल हो गया। सूचना मिलने पर देवगढ़ थाने से पुलिस जाप्ता मौके पर पहुंचा। पुलिस ने मृतक के शव एवं घायल को एंबुलेंस से देवगढ़ सीएचसी पहुंचाया ओर घायल का उपचार किया गया।वही मृतक के शव को अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया। देवगढ़ थाने के सहायक उपनिरीक्षक माधु सिंह ने परिजनो की मौजूदगी में मृतक का पोस्टमार्टम करवा कर शव परिजनों के सुपुर्द किया।

पेयजल समस्या से मंत्री को अवगत कराया

उदयपुर, (कासं)। राजस्थान एकीकृत प्रदेश मीडिया प्रभारी राव गोपाल सिंह आसोलिया एवं प्रतिनिधि मंडल द्वारा उदयपुर पहुंचे पीएचईडी कैबिनेट मंत्री कन्हैयालाल चौधरी को क्षेत्र में पेयजल संबंधी समस्याओं से अवगत कराया। इस दौरान सर्किट हाउस में अधीक्षण अभियंता रवींद्र कुमार चौधरी अधिशासी अभियंता अखिलेश शर्मा एवं जलदाय विभाग के अन्य अधिकारी कर्मचारी नेता उपस्थित थे। मंत्री ने आश्वासन दिया कि क्षेत्र में पेयजल संबंधी किसी भी प्रकार की कोई भी समस्या नहीं रहेगी एवं सरकार इस पर संवेदनशील रूप से कार्य कर रही है। नाकोड़ा नगर क्षेत्र में शीघ्र ही पेयजल सप्लाई शुरू कर दी जाएगी लेकिन उसके बावजूद भी आज भी लोग पानी के टैंकर खरीद कर जीवन यापन कर रहे हैं एवं पेयजल सप्लाई शुरू नहीं की गई है।

276 किलो थैलियां जब्त

उदयपुर, (कासं)। प्रतिबंधित प्लास्टिक के खिलाफ नगर निगम द्वारा लगातार दूसरे दिन बडी कार्रवाई को अंजाम दिया है। नगर निगम आयुक्त राम प्रकाश के निर्देश पर स्वास्थ्य शाखा की टीम द्वारा शहर के सभी प्रमुख स्थानों पर औचक कार्यवाही कर भारी मात्रा में सिंगल यूज प्रतिबंधित प्लास्टिक को जब्त किया है।सोमवार की तरह मंगलवार को भी नगर निगम द्वारा बडी कार्रवाई करते हुए 276.90 किलो प्रतिबंधित प्लास्टिक की थैलियां जब्त की गई। निगम की स्वास्थ्य शाखा द्वारा किए गए औचक निरीक्षण में शहर के कई क्षेत्रो से सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग होते पाया गया जिस पर तुरंत कार्यवाही को अंजाम दिया गया।

खैर की लकड़ी से भरी पिकअप जब्त

उदयपुर, (कासं)। कानोड थानाधिकारी पुलिस ने अवैध रूप से परिवहन कर ले जाई जा रही खैर की लकडी से भरी 2 पिकअप को जब्त किया है। थानाधिकारी मुकेश चन्द्र ने बताया कि पुलिस टीम ने नाकाबंदी के दौरान दो पिकअप को अवैध खैर की गीली लकडी सहित जब्त किया।

कार्यालय उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर (राज.)

क्रमांक : F. 7(12) PLAN/LANDUSE/2024-25/751 Date 6.5.2025

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राज्य सरकार के द्वारा गुलाब कोठारी बनाम राजस्थान सरकार एवं अन्य सिविल रिट संख्या 1554/2004 में माननीय उच्च न्यायालय, जोधपुर के द्वारा पारित निर्णय के क्रम में सरकार के विभागीय आदेश दिनांक 20.07.2017 के अनुसार एवं राज्य सरकार के द्वारा समय-समय पर वृहद/व्यापक जनहित के दृष्टिगत मास्टर प्लान में भू-उपयोग परिवर्तन अनुज्ञये किये जाने के संबंध में प्रदत्त आदेशों/परिपत्रों की अनुपालना में निम्नलिखित प्रकरण भू-उपयोग परिवर्तन बाबत् विचाराधीन है:-

क्र. सं.	आवेदक का नाम	राजस्व ग्राम/	खसरा संख्या / ब्लॉक	भूखण्ड संख्या	क्षैत्रफल	भूखण्ड/भूमि की स्थिति	भू-उपयोग परिवर्तन
1	श्री तोलाराम लालवानी पिता स्व. श्री गोवर्धन लाल दास लालवानी	शोभाग पुरा	1169, 1170	08	965.15 वर्गफीट	शोभागपुरा चौराहे से न्यू आर.टी.ओ. ऑफिस जाने वाली 100 फीट सड़क पर एम. जेड. कॉफी की तरफ स्थित है।	आवासीय उपयोग से वाणिज्यिक प्रयोजनार्थ

उक्त प्रकरण के भू-उपयोग परिवर्तन के संबंध में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो प्राधिकरण कार्यालय में इस सूचना जारी होने की तिथि से 15 दिवस में किसी भी कार्य दिवस में निम्न हस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत कर सकते है। इस समयावधि में कोई आपत्ति प्राप्त नही होने पर भू-उपयोग परिवर्तन बाबत् अग्रिम कार्यवाही की जायेगी।

सचिव, उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर

ट्रक व एसयूवी गाड़ी की भिड़ंत में दो युवकों की मौत, एक गंभीर घायल

एसयूवी गाड़ी में सवार तीनों युवक बारात में शामिल होकर वापस लौट रहे थे

खेतड़ी, (निसं)। बबाई थाना क्षेत्र के गाडराटा के पास अलसुबह ट्रक व एसयूवी गाड़ी की भिड़ंत हो गई। इस दौरान हादसे में दो युवकों की मौत हो गई, जबकि एक गंभीर रूप से घायल हो गया। गाड़ी में सवार तीनों युवक बारात में शामिल होकर वापस लौट रहे थे।

थानाधिकारी कैलाश चंद ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली कि गाडराटा के बाबा सुंदरदास मंदिर के पास एक हादसा हुआ है, जिसकी सूचना पर मौके पर पहुंचकर जानकारी जुटाई तो सामने आया कि पिलानी निवासी सक्षम (21) पुत्र पवन कुमार, गोठ हाल चिड़ावा निवासी राजेश (27) पुत्र सुरेंद्र व पोटिया हाल पिलानी निवासी अंकित ओला पुत्र राजेश ओला बबाई थाना क्षेत्र के ढाणी बैचावाली में शादी समारोह में शामिल होने के लिए आए थे। सुबह करीब पांच बजे वापस अपने घर लौटते समय गाडराटा के पास ट्रक से उनकी गाड़ी की भिड़ंत हो गई। इस दौरान हादसे की सूचना पर 108 एंबुलेंस के पायलट अजीत सिंह निर्वाण व ईएमटी प्रकाश कुमार मौके पर पहुंचे तथा गाड़ी में फंसे युवकों को आसपास के लोगों की मदद से निकाल कर खेतड़ी के राजकीय उप जिला अस्पताल में पहुंचाया। इस दौरान डॉक्टरों ने सक्षम जांगिड़ को मृत घोषित कर दिया, जबकि राजेश कुमार की हालत गंभीर होने पर जयपुर रैफर कर दिया। इस दौरान रास्ते में राजेश की भी मौत हो गई, जबकि तीसरे घायल अंकित ओला का प्राथमिक उपचार किया गया। मृतक सक्षम जांगिड़ तीन भाइयों में दूसरे नंबर का है। इसका दो साल पहले विवाह हुआ था तथा एक दस माह की बेटी है। मृतक राजेश दो जुड़वां भाईयों से छोटा था। राजेश निजी कंपनी में काम करता है तथा बड़ा भाई भी राजकुमार भी कंपनी में काम करना है। मृतक राजेश के पिता सेना से रिटायर्ड है। वहीं तीसरा घायल अंकित ओला नोएडा के निजी अस्पताल में डॉक्टर के पद पर कार्यरत है।

हादसे में एसयूवी गाड़ी पूरी तरह से चकनाचूर हो गई।

- हादसा इतना भीषण था कि एसयूवी गाड़ी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई, वहीं ट्रक चालक मौके से फरार हो गया

थानाधिकारी ने बताया कि हादसा इतना जबरदस्त था कि गाड़ी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई, वहीं ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। हादसे की सूचना पर तीनों के परिजन मौके पर पहुंचे। थानाधिकारी ने बताया कि परिजनों की मौजूदगी में शवों का पोस्टमार्टम करवाया।

होटल में नशीली कोल्ड ड्रिंक पिलाकर महिला से दुष्कर्म

अश्लील फोटो व वीडियो बनाकर वायरल किये, थाने में मामला दर्ज, जांच शुरु

बीकानेर, (निसं)। कोटगेट थाना क्षेत्र में स्थित एक होटल में महिला को कोल्ड ड्रिंक में नशीली सामग्री पिलाकर दुष्कर्म करने का मामला थाने में दर्ज हुआ है। पुलिस ने मामला दर्ज करने के साथ ही छानबीन शुरू कर दी है।

पुलिस के अनुसार जोधपुर की रहने वाली पीड़ित महिला ने मामला दर्ज कराया है। उसके सोशल मीडिया अकाउंट पर रामनिवास वाल्मीकि ने फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी। फोन पर दोस्ती हो गई। आरोपी ने उसे अक्टूबर, 2024 में बीकानेर शहर घुमाने के लिए बुलाया। तब वह जोधपुर से बीकानेर आ गई। आरोपी उसे बीकानेर रेलवे स्टेशन के सामने वाली गली में स्थित एक होटल में ले गया, जहां उसके दोस्त ने एक कमरा बुक कर रखा था। कमरे में आरोपी ने अपने बैग से कोल्ड ड्रिंक निकाली। कोल्ड ड्रिंक पीने के बाद उसे चक्कर आने लगे।

पीड़िता का आरोप है कि कुछ देर बाद उसे जब होश आया तो आरोपी ने उसके अश्लील फोटो व वीडियो बना लिए थे। आरोपी ने धमकाया कि अगर किसी को बताया तो फोटो व वीडियो वायरल कर दूंगा। मैं बुलाऊं तब तुझे बीकानेर आना होगा। अगर नहीं आई तो वीडियो व फोटो तेरे पति को भेज दूंगा। दीपावली के 10-15 दिन बाद आरोपी के धमकाने पर वह वापस बीकानेर आई। तब आरोपी ने फिर दुष्कर्म किया। पीड़िता ने बताया कि पांच दिन पहले आरोपी ने उसे फोन कर बीकानेर आने को कहा। पीड़िता नहीं आई। इसके बाद आरोपी ने पीड़िता के अश्लील फोटो सोशल मीडिया पर वायरल कर दिए। आरोपी ने फोटो पर 100, 200 व 500 लिखकर वायरल किए, जिससे उसकी प्रतिष्ठा खराब हुई। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नाले में अज्ञात व्यक्ति की लाश मिलने से सनसनी फैली

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र स्थित गंगापुर चौराहे के निकट एक नाले में अज्ञात व्यक्ति की लाश मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई।

प्रताप नगर थाना अधिकारी सुरजीत सिंह ने बताया कि थाना क्षेत्र में स्थित ट्रैफिक थाने के निकट नाले में एक अज्ञात व्यक्ति की तैरती हुई लाश देखकर स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी, जिस पर पुलिस मौके पर पहुंची और जेसीबी की मदद से नाले से पानी और कीचड़ साफ करवाकर युवक के शव को बाहर निकलवाया। स्थानीय लोगों ने बताया कि उक्त व्यक्ति क्षेत्र में ही रहकर भीख मांग कर अपना गुजर-बसर कर रहा था और नाले के पास बने टीनशेड के नीचे ही सो जाया करता था। अब पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि उसकी मौत हादसा है या इसके पीछे अन्य कोई कारण है। फिलहाल पुलिस ने मृतक के शव को महात्मा गांधी चिकित्सालय की मोर्चरी में सुरक्षित रखवाते हुए उसकी शिनाख्त के प्रयास शुरू किए हैं। जानकारी के अनुसार भीलवाड़ा में पिछले एक सप्ताह में इस तरह से संदिग्ध लाशों के मिलने का सिलसिला जारी है। करीब आधा दर्शन लाशें मिलने के चलते शहर में दहशत का माहौल है।

- भीख मांग कर अपना गुजर-बसर कर रहा था व्यक्ति

स्कॉर्पियो कार सड़क किनारे खड़े ट्रेलर से टकराई, दो चचेरे भाइयों की मौत

नोखा, (निसं)। बीकानेर जिले के नोखा में स्कॉर्पियो कार सड़क किनारे खड़े ट्रेलर से टकरा गई। इसमें कार सवार दो चचेरे भाइयों की मौके पर ही मौत हो गई। एक अन्य युवक गंभीर रूप से घायल हुआ है। तीनों युवक दोस्त की शादी से लौट रहे थे। ये लोग कपड़े के कारोबार से जुड़े हैं। गाड़ी में दोनों शव बुरी तरह फंस गए थे। जेसीबी की मदद से शवों को बाहर निकाला जा सका।

जानकारी के अनुसार घटना बीकानेर बाइपास पांचू पुलिया के पास गुरुकृपा होटल के पास देर रात 2.30 बजे की है। हादसे के बाद सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायल को एंबुलेंस से नोखा हॉस्पिटल पहुंचाया, जहां से उपचार के बाद बीकानेर रेफर किया गया। एसआई सुरेश भादू ने बताया कि नोखा गांव निवासी धीरज (19) पुत्र श्यामलाल सियाग और विकास (21) पुत्र हरिराम सियाग दोनों चचेरे भाई अपनी बुआ के लड़के राकेश गोदारा (23) निवासी सतरेन (नागौर) के साथ एक दोस्त की शादी में सतरेन गए हुए थे। धीरज और विकास को छोड़ने के लिए राकेश नोखा गांव आ रहा था। इस दौरान स्कॉर्पियो गाड़ी बेकाबू होकर नेशनल हाइवे के किनारे खड़े ट्रेलर से टकरा गई। धीरज और विकास की मौके पर ही मौत हो गई। राकेश गंभीर रूप से घायल हो गया।

हादसे के बाद आसपास के लोगों ने घटना की जानकारी नोखा पुलिस को दी। सूचना मिलने पर नोखा पुलिस मौके पर पहुंची और जेसीबी की सहायता से शवों को बाहर निकाला। पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए सरकारी अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाया है। घायल राकेश को एंबुलेंस से नोखा हॉस्पिटल पहुंचाया, जहां से उपचार के बाद बीकानेर रेफर किया गया। नोखा गांव निवासी मुरली गोदारा ने बताया कि विकास सूरत में कपड़े का व्यापार करता है। विकास के दो भाई-बहन हैं। विकास के पिता हरिराम ट्रैक्टर चलाते हैं। धीरज गांव के एक स्कूल में कक्षा 11 में पढ़ाई करता है। धीरज सहित दो भाई हैं। धीरज के पिता श्यामलाल हलवाई हैं। घायल राकेश गोदारा भी सूरत में कपड़े के कारोबार से जुड़ा है। तीनों एक-दूसरे के रिश्तेदार थे।

- एक अन्य युवक गंभीर रूप से घायल, तीनों युवक दोस्त की शादी से लौट रहे थे
- गाड़ी में दोनों शव बुरी तरह फंस गए थे, जेसीबी की मदद से शवों को बाहर निकाला

तत्कालीन विकास अधिकारी निलंबित

पावटा, (निसं)। ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज विभाग ने तत्कालीन विकास अधिकारी पंचायत समिति शाहपुरा हाल पंचायत समिति विराटनगर विकास अधिकारी सुरेश बागोरिया व जीनू वर्मा तत्कालीन विकास अधिकारी पंचायत समिति शाहपुरा हाल पंचायत समिति भवानीमंडी जिला झालावाड़ को विभागीय जांच के चलते निलंबित कर दिया। साथ ही निलंबन काल में विकास अधिकारियों को मुख्यालय पंचायती राज विभाग जिला जयपुर में किया गया है। मामले के अनुसार राज्य की ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग के शासन सचिव एवं आयुक्त ने आदेश जारी कर तत्कालीन विकास अधिकारी पंचायत समिति शाहपुरा हाल पंचायत समिति विराटनगर विकास अधिकारी सुरेश बागोरिया व जीनू वर्मा तत्कालीन विकास अधिकारी पंचायत समिति शाहपुरा हाल पंचायत समिति भवानीमंडी जिला झालावाड़ के विरुद्ध विभागीय जांच की कार्रवाई प्रस्तावित होने के कारण विकास अधिकारियों का निलंबन किया गया है।

- निलंबन काल में विकास अधिकारियों को मुख्यालय पंचायती राज विभाग जिला जयपुर में किया

उदयपुर में बरसात होने से तापमान में गिरावट, गर्मी से राहत मिली

उदयपुर, (कासं)। लेकसिटी में मंगलवार सुबह से ही आसमान में बादल छाए रहे। इससे पहले सोमवार देर रात हुई बारिश से मौसम परिवर्तन हो गया और तापमान में गिरावट दर्ज की गई। सोमवार रात से लेकसिटी का मौसम पूरी तरह से बदल गया है। तेज हवाओं, बारिश और बादलों की आवाजाही के चलते तापमान में जबरदस्त गिरावट दर्ज की गई। मौसम में आई इस ठंडक से लोगों ने राहत की सांस ली।

मंगलवार को लेकसिटी का अधिकतम तापमान 29 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं न्यूनतम तापमान 19.5 डिग्री पर पहुंच गया। इससे पहले सोमवार अधिकतम तापमान 31.8 डिग्री था। हांलाकि मौसम में ऐसा बदलाव आमतौर पर बहुत कम देखने को मिलता है, लेकिन इस बार मौसम ने एक ही दिन में गर्मी से राहत दिला दी।

सोमवार को दोपहर में बादल छाए रहे लेकिन उमस होने की वजह से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा, लेकिन देर रात तेज हवा और बारिश के बाद कुछ जगहों पर अच्छी बरसात हुई। हालांकि बारिश का सिलसिला मंगलवार सुबह थम गया लेकिन सोमवार देर रात जिले के लगभग सभी हिस्सों में बारिश दर्ज की गई। मौसम विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार मंगलवार को उदयपुर शहर में 7 मिलीमीटर, वल्लभनगर में 56, झाड़ोल में 16, घासा में 3, गोगुंदा में 22, कोटडा में 12, सायरा में 11, कुराबड में 3, बडगांव में 8, बारापाल में 8, मावली में 6, भींडर में 3, फलासिया में 2, गोगुन्दा में 22, सायरा मे 11, नया गाँव में 2, खेरवाडा में 3, ऋषभदेव में 4, कोटडा में12 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई। मौसम विभाग के अनुसार 9 मई तक ऐसा ही मौसम रहने का अनुमान है।

कुएं की खुदाई के दौरान मिट्टी ढहने से युवक दबा

बयाना/भरतपुर, (निसं)। भरतपुर जिले के बयाना सदर थाना क्षेत्र के कारबारी गांव में एक दर्दनाक हादसा हो गया। खेत में बने एक पुराने कच्चे कुएं को गहरा करते समय मिट्टी ढहने से 38 वर्षीय युवक श्रीभान उर्फ पप्पी उसके नीचे दब गया।

घटना की जानकारी मिलते ही ग्रामीणों ने पुलिस और प्रशासन को सूचना दी। रेस्क्यू ऑपरेशन के लिए भरतपुर से एसडीआरएफ (स्टेट डिजास्टर रेस्पॉन्स फोर्स) की टीम मौके पर पहुंची और बचाव कार्य शुरू किया गया। एलएनटी, जेसीबी और ट्रैक्टर-ट्राली की सहायता से मिट्टी हटाने का प्रयास किया जा रहा है।

घटनास्थल पर एसडीएम दीपक मित्तल, एडिशनल एसपी हरिराम कुमावत, डिप्टी एसपी कृष्णराज, पंचायत समिति विकास अधिकारी नरेंद्र सिंह, नायब तहसीलदार वैशाली धाकड़ और बयाना थाना प्रभारी बाबूलाल गुर्जर पहुंचे और रेस्क्यू ऑपरेशन की निगरानी की। बयाना बीडीओ ने बताया कि श्रीभान खुद अपने खेत में कुएं की खुदाई कर रहा था, जब यह हादसा हुआ। फिलहाल राहत और बचाव कार्य तेजी से जारी है। प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि घटनास्थल के आसपास अनावश्यक भीड़ न लगाएं और बचाव कार्य में सहयोग करें।

- रेस्क्यू ऑपरेशन के लिए भरतपुर से एसडीआरएफ टीम पहुंची और बचाव कार्य शुरू किया

महिला से जेवर लूटे

उदयपुर, (कासं)। शहर के समीप कुराबड थाना क्षेत्र में बदमाशों ने आंगन में सो रही महिला के सोने के जेवरात लूट लिए। इस दौरान महिला के साथ मारपीट की गई। खींचतान में महिला के दोनों कानों में छेद फट गए और खून निकलने लगा। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार बंगला की ढाणी जगत निवासी शांति बाई रेबारी अपने घर के आंगन में सो रही थी। रात करीब 2 से 3 बजे के बीच बदमाशों ने महिला के कान पकड़कर झटके से एक तोला वजनी सोने के कुंडल और एक तोला वजनी सोने की चेन निकाल ली। महिला का पति भैरूलाल खेत पर सो रहा था। महिला के शोर मचाने पर पति आया तब तक आरोपी फरार हो गए। वारदात के बाद ग्रामीण एकत्रित हो गए। महिला को तुरंत हॉस्पिटल पहुंचाया गया।

सीएमएचओ कार्यालय के नाम से अवैध वसूली

उदयपुर, (कासं)। लैब संचालक और मेडिकल स्टोर संचालक को सीएमएचओ कार्यालय के नाम डरा-धमकर एक व्यक्ति अवैध वसूली करके चला गया।

पुलिस से मिली जानकारी महेन्द्र पुत्र नारायण लाल डांगी निवासी रूपावली वल्लभनगर ने रिपोर्ट दी कि वह वर्तमान में डाकघर वल्लभनगर के पास पटेल मेडिकल के नाम से मेडिकल चलाता है। मेरे मेडिकल के पास ही परफैक्ट डायग्नोस्टिक सेंटर नाम की लैब है, जिसकी देखरेख भी मैं ही करता हूं। 4 मई को 5 बजे के लगभग की बात है कि मैं परफैक्ट डायग्नोस्टिक सेंटर पर बैठा था। मेरे पास मेरा दोस्त सोमु आनंद यादव भी बैठा था। तभी हमारे पास एक व्यक्ति आया और कहा कि मैं सीएमएचओ उदयपुर से आया हूं। आप लैब रजिस्ट्रेशन से संबंधित कागजात दिखावो तो मैने लैब के ऑनर मुकेश जणवा निवासी नवानिया से बात करके लैब के कागजात दिखा दिए। फिर उस व्यक्ति ने बोला की आपके लैब के कागजों मे कमी है एवं मुझे डरा धमकाकर व लैब बंद कराने के नाम से 5 हजार रूपए ले लिए एवं मेरे पटेल मेडिकल स्टोर से भी 5 हजार रूपए लेकर चला गया। फिर मैने वल्लभनगर मे स्थित अन्य मेडिकल वालों से भी पता किया तो पता चला कि यह व्यक्ति आशापुरा मेडिकल से भी डरा धमकाकर व मेडिकल बंद कराने के नाम से 10 हजार रूपए लेकर चला गया है। मैने पता किया तो उस व्यक्ति का नाम नरवर सिंह पुत्र रामसिंह निवासी राजसमंद है। यह व्यक्ति एक कार लेकर आया था। नरवर सिंह हमारे को किसी अभिषेक बिंदल नाम के व्यक्ति से डरा धमकाकर व मेडिकल बंद करवाने का कहकर रूपये ले गया है। रिपोर्ट पर वल्लभनगर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

- पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की

युवक से लूटपाट की

उदयपुर, (कासं)। दुकान बंद कर घर जा रहे एक युवक से कुछ युवकों ने कुल्हाड़ी से मारपीट कर 15 हजार नगदी छीन ली।

महावीरसिंह राठौड़ निवासी बड़ी महुली फलासिया ने रिपोर्ट दी कि चार मई शाम को कोल्यारी ई-मित्र की दुकान बंद करके अपने घर बड़ी महुली की तरफ आ रहा था। कोल्यारी शिसवी रोड नदी पुलिया पर पहुंचा कि मेरी स्कूटी को रुकवाकर पनेसिंह पुत्र समरतसिंह व कोदरसिंह पुत्र समरतसिंह राठौड़ निवासी बड़ी महुली व उनके साथ एक दो अन्य व्यक्ति थे। मुझे रोककर जाने से मारने की नीयत से कुल्हाड़ी से मेरे सिर में मारी, जिससे मेरे गंभीर चोट आई। रिपोर्ट पर फलासिया पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

Office of the Superintendent Engineer and Project Manager WCDC, Karauli

No. :- 216 Date :- 02/05/2025

NOTICE INVITING BID

NIB No. : 05/2025-26

Bids for Talai, MPT, Percolation tank, ECD Construction work Project MJSA 2.0 Phase1 Block - Shri Mahaveerji, Hindaun & Sapotra of estimated value INR 139.41 Lacs [03 Package] are invited from interested bidders up to 06.00 PM, 11/05/2025, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (**https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in/**) of the state, departmental website. **NIB CODE :- WSC2526A0090,**

UBN No. :- WSC2526WSRC00175 To WSC2526WSRC00177

Raj.Samwad/C/25/1828 Superintending Engineer and Project Manager

OFFICE OF THE MUNICIPAL BOARD ITAWA

File No. 400 Date :- 01-05-2025

NIB No. 05/2025-26

Notice inviting online bid for Preparation of detailed Project Report (DPR) for project liquid waste management, Itawa

Municipal Board, Itawa, District Kota, Rajasthan, invites online unconditional bid through e-procurement portal http://eproc.rajasthan.gov.in from eligible bidders in accordance with the RTPP act 2012 and RTPP rules 2013, amended up to date, and under Open Competitive Bidding (OCB) national with single stage-two envelope bidding procedure for the work **" Preparation of detailed Project Report (DPR) for project liquid waste management Including Approval, Making Presentations at Various levels Complete in all respect".**

The details of NIB can be seen at e-procurement portal of state government **sppp.rajasthan.gov.in** from date 02.05-2025 at 12.00 hours till the end date of online submission of bid i.e. 02-05-2025 .up to 12-05-2025 .hours. Any subsequent addendum/corrigendum shall be published only at the e-procurement portal.

NIB Code : DLB2526A0903 & UBN No : DLB2526SLOB03399

Raj.Samwad/C/25/1812 Chairman Executive Officer

जयपुर विकास प्राधिकरण

इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरु मार्ग, जयपुर-302004

JDA/IT(1412092)/RC-CONSUMABLE/2025/D-47 दिनांक : 05.05.2025

निविदा सूचना

NIB NO. : JDA-IT-02-2025-26

UBN NO. : JDA2526GLOB00112

जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा **"RFP for Procurement of Toner Cartridges/Drum/Fuser for Laser Printers"** के लिए ऑनलाईन बिड्स दिनांक 27.05.2025 को 3.00 बजे तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा बोली का ऑनलाईन आवेदन व भुगतान जविप्रा पोर्टल पर करने की अन्तिम तिथि 25.05.2025 को 5.00 बजे तक है। निविदा की अनुमानित लागत रूपये 150.00 लाख है। निविदा बोली के दस्तावेजों का विस्तृत विवरण **www.sppp.rajasthan.gov.in, www.eproc.rajasthan.gov.in and https://jda.rajasthan.gov.in** पर देखा जा सकता है।

निविदा में भाग लेने हेतु निविदादाता को अनिवार्य रूप से निम्न प्रक्रिया अपनानी होगी:

1. निविदा में भाग लेने एवं भुगतान जमा कराने हेतु निविदादाता को जविप्रा के "Online Tender Participation पोर्टल https://jda.rajasthan.gov.in या सिंगल साईन ऑन के माध्यम से जविप्रा पर उपलब्ध है।
2. राजस्थान सरकार के ई-प्रॉक्यूमेंट पोर्टल www.eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करनी होगी।

राज.संवाद/सी/25/1796 सिस्टम एनालिस्ट-उपायन संस्था

पंचायत कार्यालयों में आईटी संवर्ग के पद सृजन की मांग

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के जहाजपुर राजस्थान अधीनस्थ कम्प्यूटर कर्मचारी संघ ब्लॉक द्वारा पंचायत समिति एवं ग्राम पंचायत कार्यालयों में आईटी संवर्ग के पद सृजित करने की मांग को लेकर ब्लॉक विकास अधिकारी सीताराम मीणा को ज्ञापन सौंपा गया।

संघ की ब्लॉक अध्यक्ष अनामिका टेलर ने बताया कि जिला परिषद से लेकर ग्राम पंचायत स्तर तक विभिन्न योजनाओं में सूचना प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग किया जा रहा है। बावजूद इसके, विभाग में तकनीकी कार्मिकों की भारी कमी है, जिससे डिजिटलीकरण और आईटी आधारित योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि "डिजिटल राजस्थान" की परिकल्पना को साकार करने के लिए पंचायतीराज विभाग में आईटी कैडर के अंतर्गत प्रोग्रामर, सहायक प्रोग्रामर और सूचना सहायक जैसे पदों का सृजन अत्यंत आवश्यक है। ज्ञापन सौंपने के दौरान सहायक प्रोग्रामर सौरभ मीणा, राकेश कुमार मीणा, प्रकाश चंद मीणा और सूचना सहायक सत्येन्द्र पारीक भी उपस्थित रहे।

पुनर्नियुक्ति जैसे मामलों में घिरे कुलपति प्रो. अरुण कुमार के खिलाफ बयान दर्ज

शिकायतकर्ताओं ने आरोप लगाए हैं कि कुलपति ने अपने पद का दुरुपयोग करते हुए भर्ती प्रक्रिया में गंभीर घोटाले किए

बीकानेर, (निसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरुण कुमार अपना तीन साल का निर्धारित कार्यकाल पूरा करने से पहले आरोपों में घिर चुके हैं। उनके खिलाफ राज्यपाल की ओर से गठित कमेटी ने शिकायतकर्ताओं से उनकी परिवेदनाएं सुनी।

प्रोफेसर-एसोसिएट प्रोफेसर भर्ती घोटाला तथा वित्तीय अनियमितताओं के आरोपों में घिरे कुलपति प्रो. अरुण कुमार के खिलाफ राजभवन के निर्देश पर जोधपुर संभागीय आयुक्त ने अतिरिक्त आयुक्त सीमा कविया के नेतृत्व में टीम भेजी। कमेटी की ओर से जांच रिपोर्ट राजभवन को देते ही कुलपति पर दबाव आ सकता है। पूर्व में भी जिन-जिन कुलपतियों के खिलाफ जांच कमेटी बैठी है, उन्हें निर्धारित कार्यकाल से पहले ही निलंबित किया गया था। बीकानेर पहुंची हाई पावर जांच कमेटी के समक्ष अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, किसान संघ के अलावा विश्वविद्यालय के अन्य आठ कर्मचारियों ने कुलपति के खिलाफ अपने बयान दर्ज कराए। शिकायतकर्ताओं ने आरोप लगाए हैं कि कुलपति ने अपने पद का दुरुपयोग करते हुए भर्ती प्रक्रिया में गंभीर घोटाले किए। आरोप है कि जिन शिक्षकों को 8 साल का टीचिंग एक्सपीरियंस नहीं था उन्हें भी प्रोफेसर-एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर लगा दिया गया।

इसके अलावा नियमों के खिलाफ पुनर्नियुक्ति का भी आरोप कुलपति के खिलाफ लगाया गया है। आरोप है कि विश्वविद्यालय में कुछ सेवानिवृत कर्मचारियों को भर्ती प्रक्रिया में गड़बड़ी करके फिर से नियुक्ति दी गई। सेवानिवृत कर्मचारी को डीडीओ पावर का अधिकार देना भी सवालों के घेरे में आ रहा है। इससे पूर्व कृषि मंत्री किरोड़ीलाल मीणा ने भी वीसी के खिलाफ पेटेंट को लेकर जांच कराने को कहा था। वित्तीय अनियमितताओं के अलावा कुलपति अरुण कुमार पर किसान हितैषी प्रोजेक्ट से तीन कृषि वैज्ञानिकों को हटाकर अन्य जगह तबादला करने का भी आरोप है। विश्वविद्यालय की ओर से लिए गए पेटेंट पर भी सवाल उठ रहे हैं। कुलपति की ओर से की गई प्रशासनिक पदों पर अपात्र लोगों की नियुक्ति भी जांच के दायरे में है।

कमेटी सदस्यों के मुताबिक यह जांच रिपोर्ट राज भवन भेजी जाएगी। हालांकि पूर्व में सुनवाई विश्वविद्यालय के कुलपति सचिवालय के सभागार में होनी थी। लेकिन वीसी के खिलाफ आरोपों की सुनवाई वीसी के ही सभागार में करने पर शिकायतकर्ताओं ने कमेटी सदस्यों के समक्ष आपत्ति जताई। इस पर कमेटी सदस्यों अंतिम समय में सुनवाई स्थल में बदलाव कर आईएबीएम में सभी पक्षों को सुना। इसके बाद बीकानेर के सर्किट हाउस में अलग से शिकायतकर्ताओं की कमेटी सदस्य से वार्ता हुई। परिवाद सुनने का स्थान अंतिम समय में कुलपति सभागार की जगह विश्वविद्यालय में स्थित कृषि प्रबंधन संस्थान में रखा गया। ऐसे में अनेक कर्मचारी व विद्यार्थी अपनी बात कमेटी के समक्ष रखने से वंचित रह गए। जानकारी के अनुसार पूर्व में सुनवाई दोपहर 11 बजे से 2 बजे तक कुलपति सभागार में होनी थी। लेकिन बाद में सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक कृषि प्रबंधन संस्थान तथा दोपहर 1 बजे से 2 बजे तक बीकानेर के सर्किट हाउस में सुनवाई हुई।

- आरोप है कि जिन शिक्षकों को 8 साल का टीचिंग एक्सपीरियंस नहीं था, उन्हें भी प्रोफेसर-एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर लगा दिया
- कुलपति अरुण कुमार अपना तीन साल का निर्धारित कार्यकाल पूरा करने से पहले आरोपों में घिरे

गुजरात की ताला-चाबी गैंग के तीन शातिर बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। मुरलीपुरा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए ताला-चाबी ठीक करने के बहाने घर मे घुस कर चोरी करने वाली गुजरात की ताता-चाबी गैंग के तीन शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से चुराया गया सोने-चांदी के जेवरात सहित नकदी बरामद की है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

- चाबी बनाने के बहाने अलमारी से चुराते थे नकदी और जेवरात
- पुलिस ने जब्त किया चुराए गए सामान
- पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) अमित कुमार ने बताया कि मुरलीपुरा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए ताला-चाबी ठीक करने के बहाने घर मे घुस कर चोरी करने वाली गुजरात की ताता-चाबी गैंग के शातिर बदमाश सरदार सतनाम सिंह (29) निवासी दाहोद गुजरात, सन्नी सिंह उर्फ सरदार सन्नी देवल (30) निवासी दाहोद गुजरात और सरदार राजेन्द्र सिंह (35) निवासी कोतवाली डूंगरपुर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों से चोरी का माल एक आर्टिफिशियल चैन, एक आर्टिफिशियल मंगलसूत्र, अन्य आभूषण एवं आधार कार्ड-की बरामद किया गया है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

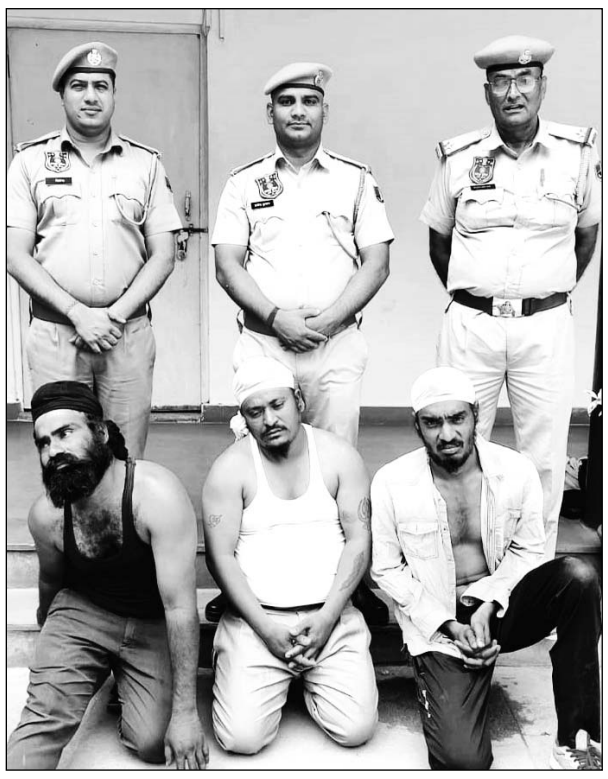

मुरलीपुरा थाना पुलिस ने ताला-चाबी ठीक करने के बहाने घर में घुस कर चोरी करने वाली गुजरात की ताता-चाबी गैंग के तीन शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी वीरेंद्र कुरील ने बताया कि वारदात करने के लिए गुजरात से आकर होटल में ठहरते थे और गैंग के सदस्य कॉलोनियों में पैदल घूमते हुए ताले-चाबी ठीक करने का बहाना कर वारदात करते थे। घर में अकेली महिला या सुनसान मकान देखकर दो सदस्य घर के अंदर जाते हैं और एक बाहर निगरानी रखता है। अंदर जाकर अलमारी का ताला ठीक करने के बहाने घरवालों का ध्यान भटकाते हैं और मौका देखकर कीमती सामान चुराकर फरार हो जाते हैं। सीसीटीवी से हुई पहचान पुलिस ने बताया कि आरोपियों को पकडने के लिए एक विशेष टीम का गठन किया गया था। टीम ने 100 से अधिक सीसीटीवी फुटेज खंगाले। आरोपियों की गतिविधियां कैमरों में कैद हुई। जिन्हें ट्रेस कर पुलिस ने उन्हें दादी का फाटक क्षेत्र से गिरफ्तार किया।

पुलिस उनसे अन्य वारदातों के संबंध में पूछताछ कर रही है, जिससे कई और चोरी की वारदातों का खुलासा होने की संभावना है।

पुलिस ने आमजन से अपील की है कि अज्ञात व्यक्तियों को घर में प्रवेश न दें और ताला-चाबी बनाने वाले फेरीवालों से सतर्क रहें। किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत सूचना नजदीकी थाने को दें।

लू-तापघात प्रबंधन के लिए हर जिले में होगा सघन निरीक्षण

जयपुर। राज्य में लू-तापघात की स्थितियों के दृष्टिगत दवाओं की निर्बाध एवं समुचित आपूर्ति तथा चिकित्सा उपकरणों की क्रियाशीलता को लेकर राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन की ओर से ग्रीष्मकालीन सघन निरीक्षण अभियान चलाया जाएगा। अभियान के लिए 27 टीमों का गठन किया गया है।

उल्लेखनीय है कि विगत दिनों मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश में लू-तापघात की स्थितियों में आमजन के स्वास्थ्य को लेकर पुख्ता प्रबंध सुनिश्चित करने के निर्देश दिए थे। इन निर्देशों की अनुपालना में चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के मार्गदर्शन में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की ओर से लू-तापघात से बचाव एवं उचपार आदि के संबंध में जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं।

आरएमएससीएल की प्रबंध निदेशक नेहा गिरि ने बताया कि राज्य में हीटवेव की सम्भावनाओं को देखते हुए ग्रीष्मकालीन सघन निरीक्षण अभियान चलाया जाएगा। निगम में कार्यरत विशेषाधिकारी, समस्त कार्यकारी निदेशक, लेखाधिकारी तथा जिला औषधि भण्डार गृह के प्रभारी अधिकारी को जिलों का आवंटन कर यह निरीक्षण करवाए जाएंगे। इसके लिए दो सदस्यीय 27 टीमों का गठन किया गया है। यह टीमें निरीक्षण कर जिले में औषधियों, उपकरणों की उपलब्धता एवं क्रियाशीलता को लेकर 30 मई तक अपनी विस्तृत रिपोर्ट देंगी।

सामूहिक पंजीकरण शिविर में श्रमिकों को जारी हुए ई-श्रम

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर महानगर-प्रथम व द्वितीय के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को हीरापुरा चौराहा 200 फीट बाईपास स्थित मजदूर चौखटी पर सामूहिक पंजीकरण शिविर का आयोजन किया गया।

जयपुर। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर जिला, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर महानगर-प्रथम व द्वितीय के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को हीरापुरा चौराहा 200 फीट बाईपास स्थित मजदूर चौखटी पर सामूहिक पंजीकरण शिविर का आयोजन किया गया। श्रम विभाग, कॉमन सर्विस सेन्टर, ट्रेड यूनियन, एक्शन एड तथा आजीविका एनजीओ के सहयोग एवं समन्वय से आयोजित शिविर में 63 श्रमिकों का मौके पर ही ऑनलाईन ई-श्रम कार्ड जारी किया गया, साथ ही 65 श्रमिक कार्ड फार्म भरवाए गए एवं 200 से अधिक श्रमिक हाजिरी डायरी वितरित की गई।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर जिला के सचिव पवन कुमार जीनवाल तथा दीपेन्द्र माथुर सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर महानगर प्रथम ने चौखटी पर उपस्थित श्रमिकों को उनके विधिक अधिकारों, श्रम विभाग की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की।

जीनवाल ने यह भी बताया कि जो श्रमिक शिविर में ऑनलाइन पंजीकरण से वंचित रह जाएंगे, उनके लिए बुधवार को विश्वकर्मा रोड नम्बर 14 सीकर रोड स्थित मजदूर चौखटी तथा 8 मई को इंडिया गेट सीतापुरा इंडस्ट्रियल एरिया स्थित मजदूर चौखटी पर भी ऑनलाइन पंजीकरण शिविर का आयोजन किया जाएगा। पंजीकरण हेतु श्रमिकों को आधार कार्ड, बैंक पासबुक तथा मोबाइल साथ लेकर मौके पर आना होगा। शिविर में श्रमिकों को श्रम विभाग की विभिन्न योजनाओं जैसे निर्माण श्रमिक शिक्षा एवं कौशल विकास योजना, निर्माण श्रमिक जीवन व भविष्य सुरक्षा योजना, सिलिकोसिस पीड़ित हिताधिकारियों हेतु सहायता योजना, हिताधिकारी की सामान्य अथवा दुर्घटना में मृत्यु या घायल होने की दशा में सहायता योजना, प्रसूति सहायता योजना, शुभशक्ति योजना, निर्माण श्रमिक सुलभ्य आवास योजना, निर्माण श्रमिक औजार /टूलकिट सहायता योजना, निर्माण श्रमिक एवं उनके आश्रित बच्चो द्वारा भारतीय/राजस्थान प्रशासनिक सेवा हेतु आयोजित प्रारम्भिक प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने पर प्रोत्साहन योजना एवं अन्य योजनाओं की विस्तुत जानकारी प्रदान की जाएगी।

शिविर के दौरान जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर जिला से पीएलवी श्री सुरेश कुमार गुर्जर ने श्रमिकों का ऑनलाईन पंजीकरण करने में सहायता प्रदान की। शिविर के दौरान पल्लवी शर्मा सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर महानगर-द्वितीय, श्रम विभाग से भारती भिण्डा, अनुपम गौतम, सीएससी से सुरेन्द्र कुमार जांगिड तथा दीपक जांगिड, ट्रेड यूनियन से अनिल बैरवा तथा तुषार बैरवा, एक्शन एड एनजीओ से मूलचंद शर्मा तथा हेमलता व अन्य उपस्थित रहे।

कुसुम योजना में एक हजार मेगावाट ऊर्जा उत्पादन क्षमता का नया कीर्तिमान बनाया

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में सौर ऊर्जा का सूर्य निश्चित तौर पर देश के पश्चिमी राज्य राजस्थान में चमक रहा है। सूर्य भगवान की विशेष कृपा से प्रदेश की सुनहरी रेतीली धरती में सौर ऊर्जा उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं, जिनके दोहन के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा पहले दिन से ही निरंतर प्रयासरत हैं।

- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में सौर ऊर्जा क्रांति का साक्षी बनता राजस्थान
- 1 लाख 70 हजार से अधिक किसानों को दिन में मिलने लगी बिजली

राजस्थान को ऊर्जा आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्य की दिशा में पीएम-कुसुम योजना के माध्यम से एक बड़ी कामयाबी मिली है तथा राजस्थान ऐसा अग्रणी राज्य बन गया है जहां इस योजना के कम्पोनेंट-ए एवं कम्पोनेंट-सी के अन्तर्गत सौर ऊर्जा उत्पादन 1 हजार मेगावाट से अधिक हो गया है। सौर ऊर्जा का उपयोग कर किसानों को दिन में बिजली आपूर्ति की दिशा में भी राजस्थान तेजी से आगे बढ़ रहा है जिससे आज प्रदेश में 1 लाख 70 हजार से अधिक किसानों को दिन में बिजली सुलभ होने लगी है। पीएम कुसुम योजना के कम्पोनेंट-ए एवं कम्पोनेंट-सी के तहत ही 560 ग्रिड कनेक्टेड विकेन्द्रित सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर 70 हजार से अधिक कृषि उपभोक्ताओं को दिन में बिजली दी जा रही है। वहीं इस योजना के कम्पोनेंट-बी में लगभग 1 लाख किसानों के कृषि पम्पों को सौर ऊर्जा से जोड़ा जा चुका है। राज्य द्वारा योजना के सफल क्रियान्वयन को देखते हुए भारत सरकार ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान कुसुम-ए में दो बार में कुल 6 हजार मेगावाट क्षमता के संयंत्रों के अतिरिक्त आवंटन को स्वीकृति दी है तथा कम्पोनेंट-सी में 2 लाख सोलर पम्पों का अतिरिक्त आवंटन किया है। इस प्रकार इस योजना में प्रदेश में लगभग 12 हजार मेगावाट क्षमता के प्लांट स्थापित किए जाने का लक्ष्य रख कार्य किया जा रहा है।

पूर्ववर्ती सरकार के अंतिम तीन सालों में जहां केवल 92 प्लांट ही स्थापित किए जा सके थे। वहीं आज प्रदेश में कम्पोनेंट-सी में लगभग हर दिन औसतन एक नया सौर ऊर्जा संयंत्र ग्रिड से जुड़ रहा है। बीते 6 माह में प्लांटों के क्रियाशील होने की गति में और तेजी आई है। इस अवधि में कम्पोनेंट-ए में 183 मेगावाट क्षमता के 134 तथा कम्पोनेंट-सी में 514 मेगावाट क्षमता के 196 प्लांट स्थापित हुए हैं। यह प्रगति इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि जबसे यह योजना प्रारंभ हुई उसके बाद से ऊर्जा उत्पादन में प्रतिदिन औसतन चार से पांच मेगावाट क्षमता की अतिरिक्त बढ़ोतरी हो रही है।

योजना के तहत यह प्लांट मुख्यत: राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित हो रहे हैं जहां कृषि कनेक्शन अधिक संख्या में हैं। खेत के समीप भूमि पर लग रहे अधिकतम 5 मेगावाट क्षमता तक के इन सौर ऊर्जा संयंत्रों से किसानों को खेती से जुड़े कार्यों के लिए दिन में बिजली सुलभ होने लगी है। प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यिमता के एक नए युग की शुरूआत हुई है। अपनी भूमि पर सौर ऊर्जा संयंत्र लगाकर किसान अन्नदाता के साथ-साथ ऊर्जादाता भी बन रहे हैं जिससे उन्हें आमदनी का एक अतिरिक्त जरिया भी मिला है।

योजना में फीडर लेवल सोलराइजेशन के अन्तर्गत 33/11 केवी ग्रिड सब स्टेशन के लगभग 5 किलोमीटर के दायरे में सौर ऊर्जा संयंत्र लगाए जाने का प्रावधान है। कंपोनेंट-ए में अधिकतम 2 मेगावाट क्षमता तक तथा कंपोनेंट-सी में अधिकतम 5 मेगावाट क्षमता तक के ग्रिड कनेक्टेड सोलर प्लांट स्थापित किए जा रहे हैं। कंपोनेंट-सी में सौर संयंत्र की स्थापना पर भारत सरकार लागत का अधिकतम 30 प्रतिशत (अधिकतम 1 करोड़ 5 लाख रूपए प्रति मेगावाट) तक अनुदान देती है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वर्ष-2027 तक किसानों को कृषि कार्य के लिए दिन में बिजली उपलब्ध कराने का संकल्प व्यक्त किया है। इस संकल्प को साकार करने की दिशा में यह योजना महत्वपूर्ण है। राज्य सरकार द्वारा इसे फ्लैगशिप योजना के रूप में भी सम्मिलित किया गया है।

डिस्कॉम्स द्वारा मानक संचालन प्रक्रिया तैयार कर सौर संयंत्रों की स्थापना में आने वाली बाधाओं को दूर किया गया। अवॉर्ड जारी होने के बाद पावर परचेज एग्रीमेंट को अंतिम रूप देने, सौर संयंत्र को 11 केवी एवं 33 केवी प्रसारण लाइनों के माध्यम से ग्रिड से जोड़ने, ट्रांसफार्मर तथा मीटर से संबंधित स्वीकृतियों के कार्यों, सोलर प्लांट्स के निरीक्षण तथा साइट विजिट्स को विद्युत वितरण निगमों द्वारा निर्धारित समयावधि में पूर्ण किया जा रहा है। साथ ही जिला कलक्टरों को विद्युत लाइन बिछाने की राह में आ रही बाधाओं को दूर करने के दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। योजना के फलीभूत होने का फायदा विद्युत वितरण निगमों को लगभग 3 रूपए प्रति यूनिट की सस्ती बिजली की उपलब्धता के रूप में मिल रहा है। स्थानीय स्तर पर पैदा होने वाली बिजली का उपयोग स्थानीय स्तर पर ही होने से प्रसारण में होने वाली छीजत भी कम हुई है। साथ ही, कृषि की बढ़ती मांग की आपूर्ति के लिए विद्युत निगमों को अतिरिक्त विद्युत तंत्र विकसित करने की आवश्यकता में भी कमी आई है। डिस्कॉम्स को अब कृषि कार्य के लिए एक्सचेंज से महंगे दाम पर बिजली खरीदने की आवश्यकता नहीं होती। सबसे बड़ी बात यह है कि लगभग 1 हजार मेगावाट बिजली अतिरिक्त उत्पादन क्षमता विकसित करने में राज्य सरकार के बजट पर कोई अलग से भार नहीं आया है एवं साथ ही, कार्बन फुटप्रिंट में भी कमी आ रही है। योजना के कम्पोनेंट-बी का क्रियान्वयन उद्यानिकी विभाग के माध्यम से किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत वर्तमान राज्य सरकार द्वारा 39 हजार से अधिक सौर ऊर्जा पम्प संयंत्रों की स्थापना की जा चुकी है एवं इस दृष्टि से राजस्थान देश में प्रथम तीन राज्यों में है। कम्पोनेंट-बी में किसानों को 3 से 7.5 हॉर्स पावर क्षमता के सौर ऊर्जा पम्प संयंत्र स्थापित करने पर 60 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है।

एबीवीपी ने युवाओं को मॉक ड्रिल से जुड़ने को कहा

जयपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने 7 मई को केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित "सिविल डिफेंस मॉक ड्रिल" में भाग लेने की घोषणा की है और देशभर के युवाओं-विद्यार्थियों से इसमें सक्रिय सहभागिता का आव्हान किया है। हालिया पहलगाम आतंकी हमले और बढ़ते सुरक्षा खतरों के मद्देनज़र यह अभ्यास अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस मॉक ड्रिल में एयर रेड सायरन, ब्लैकआउट अभ्यास, नागरिकों की सुरक्षित निकासी और आपात सुरक्षा प्रशिक्षण शामिल हैं। साथ ही महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठानों के संरक्षण हेतु कैमोफ्लाज तकनीकों का अभ्यास भी किया जाएगा।

एबीवीपी का मानना है कि राष्ट्रीय सुरक्षा हर नागरिक, विशेषकर युवाओं की सामूहिक जिम्मेदारी है। इसलिए विद्यालय व महाविद्यालय परिसर को जागरूकता व सतर्कता के केंद्र बनाना होगा। अभाविप जयपुर प्रांत मंत्री अभिनव सिंह ने कहा, सिविल डिफेंस मॉक ड्रिल देश की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रदेश के सभी छात्रों, शिक्षकों व नागरिकों से आग्रह करते हैं कि वे इस मॉक ड्रिल में उत्साहपूर्वक भाग लें और सुरक्षित, सशक्त एवं आत्मनिर्भर भारत की दिशा में योगदान दें। एबीवीपी प्रदेशभर के कॉलेजों में पहलगाम घटना के विरोध में पोस्टकार्ड व हस्ताक्षर अभियान चलाएगी।

कांग्रेस की बैठक में अर्चना शर्मा ने दिखाया नेताओं को आईना

जयपुर। जयपुर कांग्रेस की संविधान बचाओ रैली की तैयारी के लिए बुलाई गई जयपुर शहर कांग्रेस की बैठक मे मालवीय नगर से कांग्रेस प्रत्याशी अर्चना शर्मा ने रैलियों में भीड़ लाने वालो को मंच से नीचे और अकेले आने वालों को मंचों के सामने जगह मिलने पर नाराजगी जताई।

- 'भीड़ लाने वालो को सम्मान दिया जाना जरूरी, निष्क्रिय को दिखाओ बाहर का रास्ता'

अर्चना शर्मा ने जयपुर प्रभारी धर्मेंद्र राठौड़ पर नाराजगी जताते हुए कहा कि आपने 28 अप्रैल की रैली से पहले कहा था कि मैं सब नेताओं की भीड़ की गिनती करूंगा कौन कितनी भीड़ लाया, लेकिन आपने वो काम नहीं किया यह गलत बात है। इस दौरान जयपुर के संगठन महामंत्री सीताराम नेहरू ने उन्हें टोका तो अर्चना ने कहा कि आप मुझसे ज्यादा मंच संचालन करना नहीं जानते हैं। मैंने 10 साल तक प्रदेश कांग्रेस का मंच संचालन किया है। अर्चना शर्मा ने कहा कि रैली में रफीक खान भीड़ लेकर आए अमीन कागजी भीड़ लेकर आए। मालवीय नगर से भी अच्छी भीड़ थी। लोग कहते हैं कि अर्चना शर्मा तो मालवीय नगर में खत्म हो गई हैं। मैं भले ही चुनाव हारी हूं, लेकिन संगठन को कमजोर नहीं होने दिया है। अर्चना शर्मा ने कहा कि मैंने ऐसा कुछ गलत नहीं कहा है। जो कार्यकर्ता सक्रिय रूप से संगठन में काम करता है, उसको पहचानना पड़ेगा। उसको सम्मान देना पड़ेगा और जो काम नहीं करता है उसको भी पहचानना होगा। अर्चना शर्मा ने कहा कि मैं 2018 के चुनाव में लगभग जीत चुकी थी, कुछ भी वोटों का अंतर रह गया था। 2023 के चुनाव में भले ही मैं हार गई हूं, लेकिन मैंने संगठन को कमजोर नहीं होने दिया है।

इस दौरान जयपुर शहर अध्यक्ष आरआर तिवाड़ी ने कहा कि जयपुर शहर कांग्रेस की बैठक में तो सभी को सम्मान मिलता है, चाहे वो ब्लॉक अध्यक्ष हो या फिर मंडल अध्यक्ष। कार्यकारिणी के लोग हों या फिर पार्षद दल का नेता हो, सभी को सम्मान मिलता है। प्रदेश कांग्रेस की अलग बात है। प्रभारी धर्मेंद्र राठौड़ ने बैठक में गैर हाजिर पदाधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि जो भी पदाधिकारी लगातार तीन बैठकों में नहीं आएगा, उसे संगठन से बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा।

दिल्ली-एनसीआर में पटाखे बैन

जयपुर। उच्चतम न्यायालय के द्वारा एस.सी. मेहता बनाम भारत संघ व अन्य के केस में दिए गए निर्णय की पालना में राज्य के गृह विभाग ने राज्य के दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में सम्पूर्ण वर्ष पटाखे चलाने, इसके विनिर्माण, संग्रहण, विक्रय (जिसमें ऑनलाइन विक्रय भी शामिल है) और वितरण को प्रतिबंधित कर दिया है।

'कोई भी संदिग्ध भ्रष्टाचारी पाया गया तो दंडात्मक कार्यवाही होगी'

नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के मुख्य सतर्कता अधिकारी अमित कुमार शर्मा, वरिष्ठ एवं अतिरिक्त मुख्य सतर्कता अधिकारी तरुण कुमार जैन के द्वारा एनएफएल राज्य कार्यालय, जयपुर में भ्रष्टाचार के प्रति जागरूकता एवं रोकथाम पर समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

जयपुर। नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड (एनएफएल) के मुख्य सतर्कता अधिकारी अमित कुमार शर्मा, वरिष्ठ एवं अतिरिक्त मुख्य सतर्कता अधिकारी तरुण कुमार जैन (मुख्य प्रबंधक, सतर्कता) के द्वारा एनएफएल राज्य कार्यालय, जयपुर में भ्रष्टाचार के प्रति जागरूकता एवं रोकथाम पर समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

बैठक में कंपनी के प्रति समर्पित विभिन्न जिलों के थोक विक्रेताओ एवं राज्य कार्यालय राजस्थान के अधिकारियो एवं कर्मचारियो ने भाग लिया। बैठक के दौरान अमित कुमार शर्मा, के द्वारा बैठक मे सम्मिलित एनएफएल के समस्त थोक विक्रेताओ, अधिकारियों एवं कर्मचारियो को भ्रष्टाचार उन्मूलन के बारे मे विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई ताकि भ्रष्टाचार रहित संस्थान का उद्देश्य चरितार्थ हो एवं सभी को किसी भी प्रकार की गतिविधियों मे भ्रष्टाचार न करने के लिए आदेशित किया गया। एनएफएल के समस्त थोक विक्रेताओं, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भ्रष्टाचार विरोधी एवं सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा दिलाई गई। उन्होंने कहा कि कोई भी थोक विक्रेता, अधिकारी एवं कर्मचारी किसी भी प्रकार की गतिविधि में भ्रष्टाचार संदिग्ध पाया गया तो उसके खिलाफ दंडात्मक एवं अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

खानों के माइनिंग प्लान का ऑनलाईन अनुमोदन शुरु : टी.रविकांत

जयपुर। राज्य के खान विभाग ने खानों के माइनिंग प्लान व माइनिंग योजनाओंके ऑनलाईन अनुमोदन की प्रक्रिया शुरु कर दी है। प्रमुख सचिव माइन्स, भूविज्ञान एवं पेट्रोलियम टी. रविकान्त ने बताया कि राज्य सरकार ने माइनिंग सेक्टर में सरलीकरण और पारदर्शी व्यवस्था की दिशा में एक कदम और बढ़ाते हुए पिछले दिनों एक मई से माइनिंग प्लान व माइनिंग योजनाओं का ऑनलाईन अनुमोदन का निर्णय किया था। उन्होंने बताया कि ऑनलाईन अनुमोदन की प्रक्रिया आरंभ हो गई है और जयपुर, ब्यावर, सिरोही, बारां, बांसवाड़ा और चुरु में लाइमस्टोन बर्निंग, मेसेनरी स्टोन, ग्रेनाइट, लाइमस्टोन क्रशर और क्वार्टज फेल्सपार के माइनिंग प्लान व माइनिंग योजनाएं अनुमोदन के लिए प्रस्तुत की गई है।

टी. रविकान्त ने बताया कि नई व्यवस्था से करीब 30 हजार अप्रधान खनिज लीजधारक और क्वारी लाइसेंसधारक लाभान्वित हो सकेंगे। अब उन्हें योजनाओं के अनुमोदन के लिए खनिज विभाग के कार्यालयों में चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा। अप्रधान खनिजों के माइनिंग लीजधारकों व क्वारी लाइसेंसधारकों को माइनिंग प्लान व माइनिंग स्कीम का अनुमोदन करवाना होता है। नियमानुसार विभाग द्वारा 90 दिवस में अनुमोदन की कार्रवाई पूरी करनी होती है पर अनुमोदन में इससे अधिक समय भी लग जाता है।

बुधवार को प्रस्तावित मॉक ड्रिल की तैयारियों समीक्षा की सी.एस. ने

जयपुर। वर्तमान परिदृश्य में राज्य में नागरिक सुरक्षा सुदृढ़ीकरण एवं क्रियाशीलता के आकलन हेतु केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा प्रदत्त दिशा निर्देशों की पालना में मंगलवार को मुख्य सचिव सुधांश पंत की अध्यक्षता में राज्य के समस्त संभागीय आयुक्त, पुलिस महानिरीक्षक, जिला कलेक्टर, जिला पुलिस अधीक्षक एवं सम्बन्धित जिला स्तरीय अधिकारियों की वीसी के माध्यम से बैठक आयोजित की गई।

सचिवालय में आयोजित बैठक में बुधवार को प्रस्तावित मॉक ड्रिल एवं ब्लैक आउट हेतु संबंधित जिलों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। साथ ही यह भी निर्देशित किया गया कि सभी संचार माध्यमों एवं सायरनो को तुरंत दुरुस्त किया जाकर संचार प्रणाली का सुदृढीकरण सुनिश्चित किया जाए।

बैठक में गृह एवं आपदा प्रबंधन एवं नागरिक सुरक्षा, जल संसाधन एवं पीएचईडी विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य व स्वायत्त शासन विभागों के प्रमुख शासन सचिव, चिकित्सा शिक्षा एवं उच्च शिक्षा व तकनीकी शिक्षा विभागों

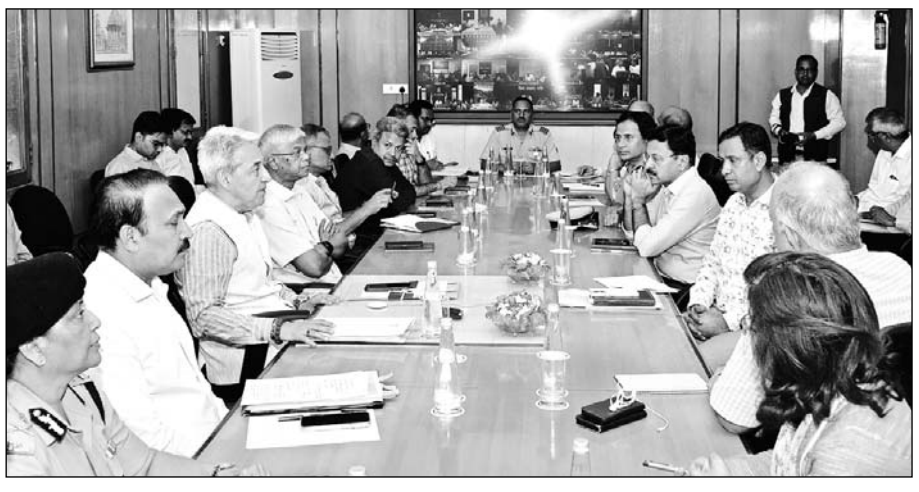

केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा प्रदत्त दिशा-निर्देशों की पालना में मंगलवार को मुख्य सचिव सुधांश पंत की अध्यक्षता में राज्य के समस्त संभागीय आयुक्त, पुलिस महानिरीक्षक, जिला कलेक्टर, जिला पुलिस अधीक्षक एवं सम्बन्धित जिला स्तरीय अधिकारियों की वीसी के माध्यम से बैठक आयोजित की गई।

के शासन सचिव, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के आयुक्त एवं संयुक्त शासन सचिव, पुलिस महानिदेशक राजस्थान, महानिदेशक इन्टेलिजेन्स, महानिदेशक गृह रक्षा, प्रबंध निदेशक, जयपुर, अजमेर एवं जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड़, प्रबंधक, उ.प. रेलवे जयपुर, कमाण्डेंट, राज्य आपदा प्रतिसाद दल, ग्रुप कैप्टन, एयर फोर्स स्टेशन, महाप्रबंधक, भारत संचार निगम लिमिटेड, कमाण्डेंट छठी बटालियन राष्ट्रीय आपदा मोचन बल, एनसीसी निदेशक, जयपुर एयरपोर्ट निदेशक इत्यादि अधिकारीगण उपस्थित थे। सभी अधिकारीगण ने बैठक में आपसी समन्वय से मॉक ड्रिल संपन्न करने हेतु प्रतिबद्धता जाहिर की।

वारदात अंजाम देने से पहले हथियार सहित तीन बदमाश गिरफ्तार

पुलिस ने आरोपियों के पास से एक पिस्टल, छह जिंदा कारतूस और एक जीप बरामद की

अजमेर, (कासं)। हरिभाऊ उपाध्याय नगर थाना पुलिस और जिला स्पेशल टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए वारदात अंजाम देने से पहले हथियारों से लैस तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के पास से एक पिस्टल, छह जिंदा कारतूस और एक जीप बरामद की गई है। पुलिस पूछताछ में मुख्य आरोपी भूपेंद्र सिंह खरवा खुद को कुख्यात लॉरेंस बिश्नोई गैंग का सदस्य बताता है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

सीओ रूद्रप्रकाश शर्मा ने बताया कि जिला स्पेशल टीम को सूचना मिली थी कि हरिभाऊ उपाध्याय थाना क्षेत्र में कुछ बदमाश हथियारों के साथ घूम रहे हैं। इस पर पुलिस टीम ने पुष्कर घाटी पर नाकाबंदी की और एक संदिग्ध जीप को रोका। तलाशी लेने पर थार जीप से एक पिस्टल और छह कारतूस बरामद हुए। जीप में सवार तीनों युवक पुलिस को कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे सके। शक के आधार पर पुलिस ने मौके से तीनों को गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस और जिला स्पेशल टीम ने बदमाशों को गिरफ्तार किया।

- पुलिस पूछताछ में मुख्य आरोपी भूपेंद्र सिंह खरवा ने खुद को कुख्यात लॉरेंस बिश्नोई गैंग का सदस्य बताया
- करीब पांच महीने पहले भी इन तीनों को मध्य प्रदेश पुलिस ने हथियारों के साथ गिरफ्तार किया था

तीनों बदमाशों के खिलाफ कई आपराधिक मामले दर्ज :- सीओ शर्मा ने बताया कि गिरफ्तार बदमाशों में ब्यावर निवासी भूपेंद्र सिंह खरवा, आदर्श नगर निवासी दीपक रावत और पीसांगन निवासी आदेश चौधरी हैं।

पुलिस की प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि आरोपी पुष्कर की ओर जा रहे थे और हथियारों की सप्लाई से जुड़े हैं। जानकारी में सामने आया है कि बदामशों द्वारा हथियार जवाजा से खरीदे गए थे। गिरफ्तार तीनों आरोपियों के खिलाफ पहले से कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। करीब पांच महीने पहले भी इन तीनों को मध्य प्रदेश पुलिस ने हथियारों के साथ गिरफ्तार किया था।

लॉरेंस बिश्नोई गिरोह से जुड़े तार :- सूत्रों के अनुसार भूपेंद्र सिंह खरवा का जुड़ाव सीधे तौर पर लॉरेंस बिश्नोई गिरोह से है। भूपेंद्र पर इस गिरोह को हथियार सप्लाई करने का आरोप है। बताया जाता है कि वह वर्ष 2017 में पंजाब की एक जेल में अफीम तस्करी के मामले में बंद था, जहां उसकी मुलाकात लॉरेंस से हुई थी। इसके बाद से ही वह गिरोह के लिए काम करने लगा। पुलिस ने तीनों आरोपियों को रिमांड पर लेकर गहन पूछताछ शुरू कर दी है। हैड कांस्टेबल सीताराम और कांस्टेबल रामनिवास की भूमिका महत्वपूर्ण भूमिका रही। पुलिस अब यह भी जांच कर रही है कि इन बदमाशों के तार कहीं किसी बड़ी साजिश से तो नहीं जुड़े हैं।

नगर परिषद प्रशासन ने पुष्कर सरोवर में चार फव्वारे लगाए

फव्वारे पुष्कर सरोवर के मछलियां समेत जलीय जंतु के लिए जीवन देना वाला साबित हो रहे हैं

पुष्कर सरोवर में ऑक्सीजन लेवल एवं जल स्तर बढ़ाने के लिए फव्वारे लगाए गए हैं।

पुष्कर, (निसं)। बढ़ती तेज गर्मी को देखते हुए पुष्कर नगर परिषद प्रशासन ने पुष्कर सरोवर की तीन बन्द पड़े बोरिंग को चालू करवाकर तकनीकी प्रयोग के माध्यम से पानी के बड़े लंबे पाइप में छेद करके कम खर्च में ऑक्सीजन कंप्रेसर फव्वारे लगाए हैं। ये फव्वारे पुष्कर सरोवर के मछलियां समेत जलीय जंतु के लिए जीवन देना वाला साबित हो रहे हैं।

जानकारी के अनुसार पुष्कर नगर परिषद आयुक्त जनार्दन शर्मा ने बढ़ती तेज गर्मी को ध्यान में रखते हुए पुष्कर सरोवर की मछलियों एव जलीय जन्तुओं को बचाने के लिए पुष्कर सरोवर के जल स्तर को बनाए रखने के लिए सप्त ऋषि घाट, जयपुर घाट और गुर्जर घाट पर बंद पड़े बोरिंगों को चालू करवाते हुए सरोवर का ऑक्सीजन लेवल बढ़ाने के लिए तकनीकी अधिकारियों से बात की, जिस पर सफाई निरीक्षक लोकेन्द्र सिंह द्वारा प्लंबर की सहायता से प्रेशर से बोरिंग के में छेद वाले बड़े पाइप फिट कर दिए जिससे बोरिंग का पानी प्रेशर से आने के चलते फव्वारे के माध्यम से सरोवर में जल गिर रहा है और पुष्कर सरोवर का ऑक्सीजन लेवल भी बढ़ रहा है और यह कम खर्चे में कंप्रेसर पाइप बन गया है जिससे पुष्कर सरोवर की मछलियां एवंजलीय जन्तुओं के लिए वरदान साबित हो रहा है। वहीं पुष्कर नगर परिषद प्रशासन ने गत महीने पहले पुष्कर सरोवर का ऑक्सीजन लेवल बढ़ाने के लिए पांच कंप्रेसर ऑक्सीजन फव्वारे लगवाए थे। पांच कंप्रेशर अब नगर परिषद प्रशासन की देखरेख में चल रहे हैं जिससे भी लगातार पुष्कर सरोवर के जलीय जंतुओं को आक्सीजन देने के कार्य में जुटा हुआ है। नगर परिषद प्रशासन की ओर से कंप्रेसर फव्वारे की देखरेख के लिए चार कर्मचारी रखरखाव के लिए लगा रखे हैं।

मंदिर से अष्टधातु की राधा-कृष्ण की मूर्तियां चोरी

बबाई थाना क्षेत्र के कांकरिया गांव में मंदिर से चोर मुर्तियां चुराकर ले गये।

खेतड़ी, (निसं)। बबाई थाना क्षेत्र के कांकरिया गांव में मुख्य सड़क किनारे स्थित ठाकुरजी मंदिर में चोरों ने वारदात को अंजाम दिया है। चोर मंदिर से अष्टधातु की राधा-कृष्ण की प्राचीन मूर्तियां चोरी कर ले गए। घटना के बाद मंदिर के बाहर ग्रामीण एकत्रित हो गए तथा घटना की जानकारी पुलिस को दी गई।

मंदिर पुजारी यादराम ने बताया कि गांव में बना ठाकुरजी का मंदिर काफी समय पुराना है, जिसमें अष्टधातु की प्राचीन मूर्तियां स्थापित थी। मूर्तियों की ऊंचाई करीब डेढ़ फीट और वजन लगभग पांच किलो है। इनकी कीमत लाखों रुपये बताई जा रही है। मंदिर में ये मूर्तियां काफी वर्ष पहले स्थापित की गई थी। चोरी की सूचना मिलते ही बबाई थाना प्रभारी कैलाश चंद्र मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का मौका मुआयना किया। मंदिर के पास ही संत परमानंद महाराज का स्थान है। यहां 6 मई को जागरण और 7 मई को मेला प्रस्तावित है। ग्रामीणों ने बताया कि मेले की तैयारियों के चलते मंदिर की मरम्मत चल रही थी। इसी कारण मंदिर का दरवाजा खुला हुआ था। इस संबंध में मंदिर के पुजारी यादराम स्वामी ने थाने में रिपोर्ट दी कि वह शाम पूजा के बाद रात करीब साढ़े आठ बजे वे घर चले गए थे। सुबह छह बजे जब पूजा के लिए मंदिर पहुंचे तो मूर्तियां गायब थीं। उन्होंने तुरंत गांव वालों को सूचना दी। घटना की जांच के लिए देवस्थान विभाग की टीम को भी सूचना दी गई है। मंदिर परिसर में कोई दरवाजा टूटा नहीं मिला। घटना के समय मंदिर में न पुजारी मौजूद था, न ही कोई चौकीदार था। थानाधिकारी कैलाश चंद ने बताया कि पुजारी की ओर से दी गई रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर लिया गया है, पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है। इसके अलावा संदिग्ध लोगों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है।

- घटना के बाद मंदिर के बाहर ग्रामीण एकत्रित हुए, पुलिस मौके पर पहुंची

बुजुर्ग को घर से बाहर निकाल लाठियों से पीटा

पाली, (निसं.)। पाली में एक बुजुर्ग पर कुछ लोगों ने हमला कर दिया, उसे बुरी तरह पीटा। घायल बुजुर्ग का कसूर सिर्फ इतना था कि उन्होंने गांव में एक शादी समारोह में अफीम की मनुहार किए जाने की शिकायत पुलिस-प्रशासन को दी थी। इससे नाराज लोगों ने शादी समारोह सम्पन्न होने के बाद बुजुर्ग को घर जाकर पीटा, जिससे वह घायल हो गया और उपचार के लिए उसे पाली के बांगड़ हॉस्पिटल में भर्ती करवाया।

पाली के बांगड़ हॉस्पिटल में भर्ती घायल बुजुर्ग चिमनाराम (62) पुत्र स्वरूपराम ने बताया कि वह सिरियारी थाना क्षेत्र के बेरा निम्बड़िया (चेलावास) गांव में रहता है। 11 अप्रैल को गांव में शादी हुई, जिसमें अफीम की मनुहार हुई। इसकी जानकारी उसने पुलिस-प्रशासन को दी। इससे नाराज होकर उसके परिवार के लोगों ने कुछ ग्रामीणों के साथ मिलकर उस पर हमला कर दिया और घर से बाहर निकालकर लाठियों से पीटा, जिससे वह घायल हो गया। अपने साथ हुई घटना को लेकर उसने पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

- घायल बुजुर्ग को उपचार के लिए पाली के बांगड़ हॉस्पिटल में भर्ती करवाया है
- शादी समारोह में अफीम की मनुहार की पुलिस से शिकायत करने पर मारपीट की

कार में बैठी सैलानी युवती ने 70 साल के बुजुर्ग को फंसाया

जैसलमेर, (नि.सं.)। जिले के सरहदी तनोट थाना क्षेत्र में सैलानी ने भेड़-बकरी चराने वाले 70 वर्षीय बुजुर्ग को बहला फुसलाकर अश्लील हरकतें की, जिसका शर्मनाक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। ग्रामीणों ने प्रशासन से पर्यटक स्थलों पर आ रहे ऐसे अश्लील लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

गौरतलब है कि जैसलमेर घूमने आई महिला ने न सिर्फ बुजुर्ग के साथ अश्लील वीडियो वेबसाइट पर अपलोड किया है। साथ ही सोशल मीडिया के विभिन प्लेटफॉर्म पर जैसलमेर के पर्यटन स्थलों पर नग्न तस्वीरें भी खींच कर पोस्ट की है। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद जिले की तनोट थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने आमजन से अपील की है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अनावश्यक वीडियो वायरल नहीं करें। फिर भी यदि किसी के द्वारा उक्त वीडियो वायरल करने की जानकारी मिलती है तो इसकी सूचना पुलिस को दें। वायरल वीडियो में साफ नजर आ रहा है कि एक गाड़ी में एक महिला और उसके साथी बैठे हैं। सरहदी क्षेत्र में सुनसान जगह पर गाड़ी रोककर भेड़-बकरी चरा रहे एक बुजुर्ग को अपने पास बुलाते हैं और अश्लील हरकतें करते हैं।

बार एसो. जहाजपुर ने कार्य बहिष्कार की चेतावनी दी

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के जहाजपुर बार एसोसिएशन ने पुलिस उपाधीक्षक नरेंद्र पारीक को ज्ञापन सौंपकर बताया कि मारपीट मामले में अभियुक्त की गिरफ्तारी नहीं होने पर अनिश्चितकालीन कार्य बहिष्कार करेंगे।

बार एसोसिएशन अध्यक्ष दीपक चौहान ने बताया गया कि एसोसिएशन उपाध्यक्ष बद्रीलाल मीणा के साथ हुई मारपीट के मामले में थाना जहाजपुर में प्रकरण संख्या 148/2025 दिनांक 5 मई को दर्ज किया गया था। आरोप है कि अभियुक्त, जो एक सरकारी कर्मचारी है, को थानाधिकारी द्वारा थाने में बुलाने के बाद बिना किसी कार्रवाई के छोड़ दिया गया। बार एसोसिएशन का कहना है कि घटना को गंभीरता से नहीं लिया गया है और आज तक न तो अभियुक्त की गिरफ्तारी हुई है, न ही कोई ठोस कानूनी कार्यवाही की गई है। इस लापरवाही से अधिवक्ता समुदाय में भारी रोष व्याप्त है। एसोसिएशन ने साफ चेतावनी दी है कि यदि आज अभियुक्त की गिरफ्तारी नहीं की जाती है, तो वे न्यायिक कार्यों का सम्पूर्ण रूप से अनिश्चितकाल के लिए बहिष्कार करेंगे। उन्होंने वृताधिकारी से थानाधिकारी जहाजपुर को निर्देशित करने एवं तत्काल अभियुक्त को गिरफ्तार कर नियमानुसार कानूनी कार्यवाही करें।

कैथून सीएचसी का निरीक्षण कर व्यवस्थाएं जांची

कोटा, (निसं)। सीएचसी कैथून प्रभारी डॉ. राजेश सामर ने बताया कि संयुक्त निदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं जॉन कोटा डॉ. एमपी सिंह ने मंगलवार को सीएचसी कैथून का औचक निरीक्षण किया।

इस दौरान संयुक्त निदेशक डॉ.एमपी सिंह ने लू तापघात के प्रभाव एवं मौसमी बीमारियों को देखते हुए चिकित्सालय में की जा रही तैयारियां जांची। निरीक्षण के दौरान लू-तापघात के लिए आरक्षित किए गए बेड चैक किए। वार्ड में मरीजों से जानकारी ली। साथ ही लेब में सीबीनाट मशीन से कम हो रही स्यूटम जांचों की संख्या बढ़ ाने के निर्देश दिए। इसके बाद उन्होंने जननी सुरक्षा वार्ड, एनबीएसयू, लेबररूम, दवा भंडार कक्ष का भी निरीक्षण किया एवं निर्देश दिए कि सभी सुविधाओं के साथ साथ वार्ड में कूलर पंखे प्रॉपर तरीके से संचालित हो एवं सभी दवाइयां सीएचसी पर उपलब्ध हो यह सुनिश्चित किया जाए। इसके बाद मरीजों के लिए की गई पीने के पानी की व्यवस्था को भी देखा। साथ ही ऑनलाइन निरीक्षण प्रपत्र भी भरा।

राज्यपाल बागड़े ने खैरथल-तिजारा जिले में योजनाओं की समीक्षा बैठक ली

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने गरीब किसान के जन-कल्याण की योजनाओं, कानून व्यवस्था व बजट घोषणाओं पर हुए विकास के कार्यों पर चर्चा कर समीक्षा की

भिवाड़ी/कोटपूतली, (निसं)। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े मंगलवार को खैरथल-तिजारा जिले के भिवाड़ी रीको गेस्ट हाउस में समीक्षा बैठक लेने पहुंचे। राज्यपाल हरिभाऊ के भिवाड़ी पहुंचने पर जिले के कलेक्टर किशोर कुमार व भिवाड़ी एसपी ज्येष्ठा मैत्रेयी ने स्वागत कर अगवानी की। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने गरीब किसान के जन-कल्याण की योजनाओं, कानून व्यवस्था व बजट घोषणाओं पर हुए विकास के कार्यों पर चर्चा कर समीक्षा की व अधिकारियों को निर्देशित किया और कहा कि समावेशी आर्थिक विकास तभी संभव है "जब हर हाथ को काम और हर व्यक्ति को आय" का अवसर मिले, यही आत्मनिर्भरता की सच्ची दिशा है।

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने भिवाड़ी के रीको गेस्ट हाउस में समीक्षा बैठक ली।

राज्यपाल ने योजनाओं के समयबद्ध, प्रभावी और परिणामोन्मुखी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए अधिकारियों से कहा कोई भी पात्र व्यक्ति योजनाओं के लाभ से वंचित नहीं रहना चाहिए, योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित किया जाए, ताकि उनका लाभ समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक पहुंच सके और वास्तविक जरूरतमंद वर्ग सशक्त हो सके। उन्होंने विभिन्न योजनाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की। जिले में हीट वेव के संबंध में की गई तैयारियों एंव स्वास्थ्य सेवाओं और सूचकांकों की समीक्षा करते हुए पोषण कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल दिया। राज्यपाल ने कहा कि समावेशी आर्थिक विकास की दिशा में सार्थक पहल तभी संभव है जब समाज के हर वर्ग को सम्मानजनक रोजगार और आय के अवसर उपलब्ध कराए जाएं। उन्होंने कहा कि "हर हाथ को काम और हर व्यक्ति को आय" की भावना को आत्मनिर्भर भारत की नींव मानते हुए हमें नीतियों और योजनाओं को जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू करना चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्रों में राजीविका और सहकारिता विभाग की योजनाओं के माध्यम से सशक्त बने समूहों की सराहना करते हुए कहा कि इन योजनाओं के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति तक आर्थिक सशक्तिकरण की रोशनी पहुंचे इस दिशा में कार्य किया जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में जल उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए ड्राई जोन में टैंकरों के माध्यम से पानी सप्लाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने जल जीवन मिशन की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिले में प्रत्येक घर तक नल कनेक्शन की पहुंच सुनिश्चित की जाए, साथ ही उनकी कार्यात्मक स्थिति भी सुनिश्चित की जाए तथा योजना के तहत शेष रहे गांवों में त्वरित रूप से योजनांतर्गत कार्य करते हुए पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने पंचायती राज विभाग द्वारा चलाई जा रही मनरेगा योजना की समीक्षा करते हुए पात्र व्यक्तियों को योजना से लाभान्वित करने के निर्देश दिए।

राज्यपाल ने अभियान हरियालो-राजस्थान राजस्थान के तहत जिलेभर में सामूहिक वृक्षारोपण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि केवल पौधारोपण ही नहीं, बल्कि आगामी वर्षों तक इन वृक्षों के संरक्षण और समुचित रखरखाव की ठोस व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि लगाए गए हर पौधे को पेड़ बनने का अवसर मिले और पर्यावरण संरक्षण का लक्ष्य साकार हो सके। उन्होंने शिक्षा को मानव कल्याण का सशक्त माध्यम बताते हुए विद्यालयों एवं छात्रावासों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। कृषि विभाग को निर्देश दिए कि मृदा परीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत किसानों को अधिक से अधिक जागरूक किया जाए, ताकि वे स्वयं अपनी भूमि की मृदा जांच कराएं और वैज्ञानिक पद्धित से खेती कर उत्पादन एवं आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने फार्म पॉन्ड, फसल बीमा योजना के तहत अधिक से अधिक किसानों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। राज्यपाल ने जिले में चलाए जा रहे निराश्रित गोवंश को आश्रय अभियान नवाचार की सराहना की और अधिकारियों को निर्देश दिए कि ग्रीष्मकाल में बेसहारा पशुओं के लिए पानी, छाया और चारे की समुचित व्यवस्था भी साथ में सुनिश्चित की जाए। सहकारिता की भावना को स्पष्ट करते हुए कहा कि इसका उद्देश्य लाभ या हानि नहीं, बल्कि किसान और आमजन को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाना है। यही सहकारिता की सच्ची सफलता है।

बैठक में अतिरिक्त कलेक्टर किशोर कुमार, एसपी भिवाड़ी ज्येष्ठा मैत्रेयी, पुलिस अधीक्षक खैरथल मनीष कुमार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी बीड़ा अतुल प्रकाश, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद सालुखे गौरव रविंदर, अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, अतिरिक्त जिला कलेक्टर भिवाड़ी सुमित्रा मिश्र सहित जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

पुष्कर में मुख्य परिक्रमा मार्ग पर गंदा पानी भरा होने से श्रद्धालु परेशान

परिक्रमा मार्ग में भरे गंदे पानी से वाहन चालक परेशान हो रहे हैं।

पुष्कर/अजमेर, (कासं)। धार्मिक नगरी पुष्कर सरोवर में आठ मई गुरुवार को वैशाख माह की मोहिनी एकादशी से पंच तीर्थ स्नान का शुभारंभ होगा। पांच दिनों तक चलने वाले इस धार्मिक स्नान का समापन 12 मई को वैशाख पूर्णिमा को होने वाले महास्नान के साथ होगा। वहीं दूसरी ओर नगर परिषद की अनदेखी के चलते मुख्य परिक्रमा मार्ग गत दिनों हुई बरसात के पानी व सीवरेज का गंदा पानी भरा होने से परिक्रमा करने वाले श्रद्धालुओं की धार्मिक आस्था को ठेस पहुंच रही है।

पुष्कर के तीर्थ पुरोहित के अनुसार शास्त्रोक्त मान्यता के चलते 8 मई से पंचतीर्थ स्नान शुरू होगा जो 12 मई पूर्णिमा महास्नान के साथ संपन्न होगा। पंचतीर्थ स्नान के लिए हजारों श्रद्धालु पवित्र सरोवर में डुबकी लगाकर जगतपिता ब्रह्मा मंदिर के दर्शन कर पुण्य लाभ अर्जित करेंगे। कार्तिक के बाद धार्मिक महत्व के चलते वैशाख माह में पुष्कर सरोवर में डुबकी लगाकर पुण्य कमाने और धार्मिक आस्था के चलते पुष्कर में श्रद्धालुओं की भीड़ उमडना शुरू हो गई है।

- पुष्कर सरोवर में आगामी आठ मई से पंच तीर्थ स्नान का शुभारंभ होगा
- धार्मिक आस्था के चलते पुष्कर में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ना शुरू हुई

भीषण गर्मी के बाबजूद रोजाना हजारों श्रद्धालु पुष्कर पहुंच रहे हैं। पंचतीर्थ स्नान के शुभारभ के साथ पुष्कर में मिनी मेला जैसा माहौल हो जाएगा। वैशाख के मिनी मेले में भीषण गर्मी से बचाव के लिए नगर परिषद व स्थानीय भामाशाहों व्यापारिक व सामाजिक संगठनों द्वारा शीतल पेयजल नींबू पानी शरबत व छाया के लिए इंतजाम किए जाएंगे।

परिक्रमा मार्ग में भरा गंदा पानी आस्था पर ठेस :- सरोवर की परिक्रमा का धार्मिक कर्म संपादित करने वाले श्रद्धालुओं को गंदे पानी से गुजरना पड़ रहा है जिससे उनकी आस्था आहत हो रही हैं। लोगों ने मांग की है कि गुरुवार से शुरू होने वाले वैशाख पंच तीर्थ मेले में हजारों श्रद्धालु परिक्रमा करेंगे इससे पूर्व परिक्रमा मार्ग के जल भराव को दुरस्त कर अवरुद्ध मार्ग को खोला जाए। पांच दिवसीय वैशाख मेले में रावत व गुर्जर समाज के श्रद्धालु तीर्थ नगर पुष्कर आते हैं और गुर्जर समाज का प्रसिद्ध आस्था केंद्र भुनाजी का मंदिर व गुर्जर घाट का एकमात्र रास्ता भी परिक्रमा मार्ग के जल भराव से होकर ही गुजरता है।

कप्तानी खुश रहने के लिए छोड़ी थी। मैंने सोचा कि अब बहुत हो गया और जिंदगी में खुश रहने के लिए आखिर में कप्तानी छोड़ने का फैसला किया। - **विराट कोहली**

भारतीय बल्लेबाज, कप्तानी छोड़ने को लेकर बोलते हुये।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

कगिसो रबाड़ा

गुजरात टाइटंस के खिलाड़ी कगिसो रबाडा पर ड्रग्स लेने के चलते बैन लगाया गया था। अब इस खिलाडी की टीम में वापसी हो सकती है। क्योंकि रबाडा पर लगा बैन अब हट चुका है। उन्होंने ड्रग सेवन उपचार कार्यक्रम भी पूरा कर लिया है जिसके बाद अब इस खिलाड़ी की आईपीएल टूर्नामेंट में वापसी हो सकती है।कगिसो रबाडा गुजरात टाइटंस के लिए इस आईपीएल सीजन की शुरुआत में दो मैच खेल चुके हैं। इस खिलाड़ी ने पहला मैच पंजाब किंग्स और दूसरे मैच मुंबई इंडियंस के खिलाफ खेला। इसके बाद रबाडा को उनके देश साउथ अफ्रीका बुला लिया गया।

क्या आप जानते हैं ?... सबसे अधिक मैच खेलने और जीतने का रिकॉर्ड मुंबई इंडियंस के नाम है, जबकि गुजरात टाइटन्स (जीटी) का जीत प्रतिशत सबसे अधिक (62.22) है।

रोमांचक मुकाबले में गुजरात टाइटंस ने मुंबई इंडियंस को तीन विकेट से हराया

मुम्बई, 6 मई। गुजरात टाइटंस ने गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बाद शुभमन गिल (नाबाद 38), शरफेन रदरफोर्ड (नाबाद 26) की दमदार बल्लेबाजी की बदौलत मंगलवार को इंडियन प्रीमियर लीग के 56वें मैच में मुम्बई इंडियंस को डकवर्थ लुईस पद्धित से तीन विकेट से हरा दिया है।

156 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी गुजरात टाइटंस की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने दूसरे ही ओवर में सलामी बल्लोबज साई सुदर्शन (पांच) रन का विकेट गवां दिया। इसके बाद बल्लेबाज करने आये जॉश बटलर ने कप्तान शुभमन गिल के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच दूसरे विकेट के लिये 72 रनों की साझेदारी हुई। 12वें ओवर में अश्विनी कुमार ने जॉश बटलर 27 गेंदों में 30 रन को आउटकर गुजरात को दूसरा झटका दिया।

14वें ओवर की समाप्ति पर बारिश के कारण खेल रोके जाने के समय गुजरात ने दो

विकेट पर 107 रन बना लिये थे। बारिश रूकने के बाद खेल शुरु होने पर गेंदबाजी करने आये जसप्रीत बुमराह ने 15वें ओवर की पांचवीं गेंद पर शुभमन गिल को बोल्ड कर पवेलियन भेज दिया। गिल ने 46 गेंदों में तीन चौके और एक छक्का लगाते हुए (43) रनों की पारी खेली। अगले ही ओवर में ट्रेंट बोल्ट ने शरफेन रदरफोर्ड 15 गेंदों में (28) रन को पगबाधा आउट किया। 17वें ओवर में बुमराह ने शाहरुख खान (छह) को बोल्ड कर अपना दूसरा विकेट लिया। इसके बाद अश्विनी कुमार ने राशिद खान (दो) को आउटकर मैच मुम्बई के पक्ष में कर दिया। 18 ओवर के बाद फिर से बारिश शुरु होने के समय गुजरात ने छह विकेट पर 132 रन बना लिये है हालांकि डकवर्थ लुईस पद्धित के अनुसार गुजरात मैच में चार रन पीछे है।बारिश रूकने के बाद गुजरात को एक ओवर में 15 रन बनाने का लक्ष्य मिला। गेराल्ड कोएत्जी छह गेंदों में (12) रन बनाकर सातवें विकेट के रूप में आउट हुये। गुजरात ने 19 ओवर में सात विकेट पर 147 के लक्ष्य को हासिल कर मुकाबला तीन विकेट से जीत लिया।

राहुल तेवतिया आठ गेंदों में (11) रन बनाकर नाबाद रहे। मुम्बई इंडियंस की ओर से जसप्रीत बुमराह ,ट्रेंट बोल्ट और अश्विनी कुमार ने दो-दो बल्लेबाज को आउट किया। दीपक चाहर को एक विकेट मिला। इससे पहले आज यहां गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।

भारत को किसी भी वेन्यू पर पाकिस्तान से क्रिकेट नहीं खेलना चाहिए : गंभीर

नई दिल्ली, 6 मई। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के बाद भारतीय टीम इंग्लैंड का दौरा करेगी। इस दौरान दोनों टीमों के बीच 5 टेस्ट मैचों की सीरीज खेली जाएगी। इंग्लैंड दौरे पर विराट कोहली और रोहित शर्मा को मौका मिलेगा या नहीं, हेड कोच गौतम गंभीर ने अभी से ये साफ कर दिया है। इतना ही नहीं पूर्व भारतीय क्रिकेटर ने पहलगाम हमले पर भी बात की। गौतम गंभीर ने कहा कि रोहित शर्मा या विराट कोहली को टीम में लेना उनके बस में नहीं है। चयन समिती टीम का चुनाव करती है। बतौर कोच उनका काम सिर्फ बेस्ट प्लेइंग 11 तैयार करना होगा।

गौतम गंभीर ने कहा कि, मान्याता बनाई हुई है कि कोच टीम तैयार करता है, इसे समाप्त किया जाना चाहिए। ना मुझसे पहले वाले कोच टीम सिलेक्शन करते थे और ना मैं करता हूं। इस सवाल का जवाब सिलेक्टर बेहतर तरीके से दे सकते हैं। वहीं गंभीर ने आगे कहा कि, विराट कोहली और

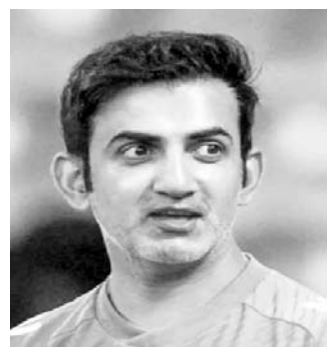

रोहित शर्मा अगर अपना बेस्ट दे पातें हैं तो उन्हें टीम इंडिया का हिस्सा बने रहना चाहिए। आप करियर की शुरुआत और अंत कब करते हैं, ये आपका पर्सनल डिसीजन होता है। कोच या चयनकर्ता आपको ये नहीं बता सकता कि आपका करियर कब खत्म होना चाहिए। अगर आप फिट हैं तो 40-45 की उम्र तक खेलते रहिए। पहलगाम में हुए आतंकी हमले पर भी गंभीर ने कहा कि भारत को किसी भी वेन्यू पर पाकिस्तान से क्रिकेट नहीं खेलना चाहिए। टीम इंडिया के हेड कोच ने आगे कहा कि, मेरी व्यक्तिगत राय है नहीं, लेकिन ये भारत सरकार निर्धारित करेगी कि हमारी टीम को पाकिस्तान के साथ खेलना है या नहीं। कोई भी मैच या फिल्म हमारे लोगों से ज्यादा अहम नहीं हो सकती। हमारे जवानों की जान से ज्यादा अहम नहीं हो सकती।

रोहित-विराट वनडे वर्ल्ड कप 2027 खेलेंगे?

गौतम गंभीर ने कहा कि, ये विराट कोहली और रोहित शर्मा का फैसला होगा। अहम ये है कि उनका प्रदर्शन कैसा है। चैंपियंस ट्रॉफी में उनका प्रदर्शन दुनिया ने देखा है। दोनों जब तक खेल रहे हैं तब भारत टीम का हिस्सा रहेंगे। फेयरवेल के सवाल पर गंभीर ने कहा कि, किसी भी प्लेयर के लिए फेयरवेल मायने नहीं रखता है। उसने देश की जीत में कितना योगदान दिया ये मायने रखता है।

स्मृति मंधाना को बल्लेबाजी रैंकिंग में नुकसान श्रीलंका की हर्षित-निलाक्षिका को हुआ फायदा

नई दिल्ली, 6 मई। आईसीसी की ओर से मंगलवार को ताजा महिला वनडे रैंकिंग जारी की गई। इस रैंकिंग में श्रीलंका की हर्षिता समरविक्रमा और निलाक्षिका ने अहम छलांग लगाई है, जबकि स्मृति मंधाना को नुकसान हुआ है। अब वह बल्लेबाजी रैंकिंग में तीसरे नंबर पर है। श्रीलंका की मेजबानी में भारत और दक्षिण अफ्रीका संग वनडे ट्राई सीरीज खेली जा रही है। इस सीरीज में श्रीलंका ने तीन मैच में से दो में जीत दर्ज की। जिसमें हाल ही में भारत पर 7 साल बाद तीन विकेट से जीत मिली।भारत पर मिली इस जीत में हर्षिता समरविक्रमा और निलाक्षिका ने बेहतरीन अर्द्धशतकीय पारी खेली, जिसकी बदौलत दोनों खिलाड़ियों ने महिला वनडे करियर की सबसे ऊंची रैंकिंग पर पहुंच गई है। समरविक्रमा नौ स्थान के सुधार के साथ 18वें स्थान पर पहुंच गई हैं, जबकि निलाक्षिका सिल्वा 18 स्थान की लंबी छलांग के साथ 25वें स्थान पर हैं। वहीं दक्षिण अफ्रीका की कप्तान लौरा वोल्वार्ड्ट ने दुनिया की अग्रणी एकदिवसीय बल्लेबाज के रूप में अपनी नंबर 1 रैंकिंग बरकरार रखी है। वोल्वार्ड्ट की टीम की साथी ताजमिन ब्रिट्स ने साउथ अफ्रीका के ट्राई सीरीज के पहले मैच में शतक की बदौलत 12 स्थान की छलांग लगाकर 40वां स्थान हासिल किया है।

समर कैम्प सम्पन्न

जयपुर, 6 मई। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित 15 दिवसीय समर कैंप का आज समापन किया गया। कैंप 21 अप्रैल से 6 मई तक के एल सैनी स्टेडियम पर आयोजित किया है। कैंप में पुरुष वर्ग में सीनियर, अंडर 23, अंडर 19 व अंडर 16 आयु वर्ग तथा महिला वर्ग में सीनियर व अंडर 19 के 30 - 30 खिलाड़ियों ने भाग लिया है। समर कैंप के दौरान कोच आबिद खान, मोहमद अहमद, अजीत सिंह, राजेंद्र चौधरी, मोहम्मद अकरम, ट्रेनर विनय मीणा ने कंडीशनिंग, फिटनेस, फिल्डिंग, बोलिंग व बैटिंग की तकनीकी पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। कैंप में 5 व 6 मई को पुरुष वर्ग में सीनियर, अंडर 23 व अंडर 19 के खिलाड़ियों का यो - यो टेस्ट भी आयोजित करवाया है।

श्री भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल ने नील कमल क्रिकेट क्लब को हराया

जयपुर, 6 मई। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित अनुराग मिश्रा स्मृति बी डिवीजन लीग के पूल डी के मैच में श्री भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल ने नील कमल क्रिकेट क्लब को 154 रनों से हराया। आज प्रात: के एल सैनी स्टेडियम पर श्री भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए मयंक कुमावत के 46 रन, प्रिंस सोनी के 55 रन, राहुल शर्मा के 74 रन, मोहित प्रजापत के 69 रन व वंश आमेरिया के 21 रनों से 40 ओवर में 8 विकेट पर 298 रन बनाए। नील कमल क्रिकेट क्लब के लिए पुरु देवदवाल ने 29 पर 2, तन्मय भाटिया ने 48 पर 2, पृथ्वी कुमावत ने 69 पर 2, गौरव वर्मा व रौनक कुमावत ने एक - एक विकेट लिया। जवाबी पारी में नील कमल क्रिकेट क्लब की टीम अमन खोड़ा के 41 रन, वंश शर्मा के 26 रन, अमन शेखावत के 16 रन, आरुष मड़कड़ के 12 रन, रौनक कुमावत के 12 व दीपक शर्मा के 20 रनों से 22.5 ओवर में 144 रन बनाकर आउट हो गई। श्री भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल के लिए मयंक कुमावत ने 19 पर 3, सौरभ शर्मा ने 28 पर 2, युवराज मुंडोतिया व शुभम राव ने एक - एक विकेट लिया।

डायमंड क्लब ने एमएनपीएस गर्ल्स क्रिकेट एकेडमी को 4 विकेट से हराकर ट्रॉफी पर कब्जा जमाया

जयपुर, 6 मई। मंत्री क्रिकेट क्लब द्वारा द्वितीय अतिया परवीन स्मृति महिला क्रिकेट प्रतियोगिता के अन्तर्गत आज खेले गये फाईनल मैच में डायमण्ड क्लब ने स्नेहा उबाना 30 रन, नीतू शर्मा 21 रन, तथा मेधावी 20 रन तथा रोशेल 9 रन पर 2 विकेट तथा

फोरा गुर्जर 19 रन पर 2 विकेट की मदद से एम.एन.पी.एस गर्ल्स क्रिकेट एकेडमी को कडे मुकाबले में 1 गेंद शेष रहते 4 विकेट से हराकर ट्रॉफीपर कब्जा जमाया। आज खेले गये हार्ड लाईन फाईनल मैच में पूनम चौहान 30 रन व निधि सैनी 3 रन पर 2 विकेट तथा तनिका शर्मा 12 रन पर 2 की शानदार गेन्दबाजी की बदोलत संस्कार एकेडमी को 14 रन से हराकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। आज खेले गये फाईनल में टॉस जीतकर एम.एन.पी.एस गर्ल्स क्रिकेट एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुये अनुष्का चौधरी 28 रन, सीमा जाट 27 रन की मदद से निर्धारित 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 95 रन बनाये गेन्दबाजी में डायमण्ड एकेडमी की ओर से रोशेल 9 रन पर 2 विकेट, फोरा गुर्जर 19 रन पर 2 विकेट तथा जानवी डागर 7 रन पर 1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहें। जवाबी पारी में डायमण्ड एकेडमी ने स्नेहा उबाना 30 रन नीतू शर्मा 21 रन माधवी 20 रन की मदद से विजयलक्ष्य 96 रन 6 विकेट खोकर 19.5 ओवर में हासिल कर 4 विकेट से जीत दर्ज कर ली। वूमैन ऑफ दा मैच रोशेल डायमण्ड क्रिकेट एकेडमी रही।

कोलकाता के लिए करो या मरो की स्थिति, चेन्नई सुपर किंग्स बिगाड़ेगी खेल!

कोलकाता, 6 मई। आईपीएल 2025 का 57वां मुकाबला कोलकाता नाइट राइडर्स और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच खेला जाएगा। ये मुकाबला कोलकाता के ईडन गार्डन्स में खेला जाएगा। वहीं कयास लगाए जा रहे हैं कि, ये स्टेडियम एमएस धोनी की पीली जर्सी के रंग में रंग सकता है जो संभवत: इस ऐतिहासिक मैदान पर आखिरी बार खेलेंगे।

पांच बार की चैंपियन चेन्नई की टीम प्लेऑफ की दौड़ से पहले ही बाहर हो चुकी है। लेकिन धोनी का जलवा अभी भी पहले जैसा ही बरकरार है।बुधवार का दिन सीएसके के फैंस के लिए भावनात्मक हो सकता है। ईडन गार्डन्स धोनी की कई उपलब्धियां का गवाह भी रहा है जिनमें प्रथम श्रेणी क्रिकेट में पहला शतक और टेस्ट क्रिकेट में दो शतक भी शामिल हैं। उन्होंने यहां क्लब क्रिकेट भी खेला है, जिसमें शामबाजार क्लब के लिए यादगार पी सेन ट्रॉफी फाइनल भी शामिल है।

धोनी का प्रदर्शन अब पहले की तरह आकर्षक नहीं रहा है लेकिन उनके चाहने वालों का उनके साथ भावनात्मक लगाव है और इसलिए वे बड़ी संख्या में यहां पहुंच सकते हैं। चेन्नई की टीम पिछले मैच में

आरसीबी से दो रन से हार गई थी। धोनी ने इस मैच में आठ गेंद पर 12 रन बनाए लेकिन वह अंतिम ओवर की तीसरी गेंद पर आउट हो गए जिससे चेन्नई की टीम लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाई थी। धोनी ने मैच के बाद हार की जिम्मेदारी ली थी।

हालांकि, चेन्नई के पास खोने के लिए अब कुछ नहीं है। लेकिन वह कोलकाता का काम बिगाड़सकती है। क्योंकि केकेआर के लिए ये मुकाबला करो या मरो का है क्योंकि उसे प्लेऑफ की अपनी उम्मीद बरकरार रखने के लिए बाकी बचे तीनों मैच में जीत हासिल करनी होगी। केकेआर के अभी 11 अंक हैं और अगले तीनों मैच उसे जीतने होंगे जिसके बाद उसके 17 अंक हो जाएंगे। यहां पहुंचने पर भी उसकी प्लेऑफ में सीट पक्की हो जाएगी कहा नहीं जा सकता। क्योंकि अन्य टीमों के परिणाम पर भी काफी कुछ निर्भर करेगा और ऐसे में नेट रन रेट पर भी मामला अटक सकता है।

रोहित ने मोहम्मद सिराज को दी हीरे की अंगूठी

मुंबई, 6 मई। मुंबई इंडियंस और गुजरात टाइटंस के बीच मैच से पहले जीटी के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज को एक खास तोहफा मिला है। बीसीसीआई ने स्पेशल वीडियो शेयर किया। जिसमें रोहित शर्मा, सिराज को हीरे की अंगूठी देते हुए दिख रहे हैं। दरअसल, टीम इंडिया ने रोहित की अगुवाई में पिछले साल टी20 वर्ल्ड कप जीता था। टी20 वर्ल्ड कप 2024 जीतने वाले भारतीय स्क्वॉड को बीसीसीआई ने डायमंड रिंग से सम्मानित किया। बोर्ड ने फरवरी 2025 में नमन अवॉर्ड्स के दौरान चैंपियन प्लेयर्स को डायमंड रिंक का तोहफा दिया था। उस फंक्शन में सिराज मौजूद नहीं थे। ऐसे में सिराज को अब टीम इंडिया के कप्तान रोहित द्वारा अंगूठी सौंपी गई है। रोहित ने रिंग देते हुए समय कहा कि सिराज तुम्हें फंक्शन में मिस किया। मुझे ये स्पेशल रिंग देते हुए गर्व हो रहा जो हम सबी के लिए बनाई गई। वहीं रिंग लेने के बाद सिराज की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि, चैंपियन। बता दें कि, भारत ने रोहित की अगुवाई में टी20 वर्ल्ड कप जीतकर 11 साल का आईसीसी ट्रॉफी की सूखा समाप्त किया था। रोहित ब्रिगेड ने रोमांचक फाइनल मुकाबले में साउथ अफ्रीका को 7 रनों से हराया था।

अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने यूरोस्पोर्ट के साथ की साझेदारी

नई दिल्ली, 6 मई। खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 ने स्ट्रीमिंग अधिकारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति, यूरोस्पोर्ट के साथ साझेदारी की खेलो इंडिया के आयोजन वैश्विक ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। पहली बार बिहार में हो रहे खेलों इंडिया यूथ गेम्स 2025 के सीधे प्रसारण को लेकर की गई साझेदारी के तहत ओलम्पिक डॉट कॉम पर किया जा रहा है और इसके मुख्य अंश डिस्कवरी के स्वामित्व वाले यूरोस्पोर्ट पर दिखाए जाएँगे। यह पहली बार है जब यूरोस्पोर्ट खेलो इंडिया आयोजन से जुड़ा है। प्रमुख खेल चैनल प्रतिदिन यूथ गेम्स युवा के मुख्य अंश (फीड) प्रसारित करेगा।

विंडीज ने आयरलैंड और इंग्लैंड दौरे के लिए एकदिवसीय टीम की घोषणा की

एंटीगुआ, 6 मई। वेस्टइंडीज ने इस महीने के आखिर में शुरू होने वाले आयरलैंड और इंग्लैंड दौरे के लिए 15 सदस्यीय एकदिवसीय टीम की घोषणा की है। शाई होप की अगुवाई में वेस्टइंडीज की टीम इस महीने के आखिर में आयरलैंड और इंग्लैंड दौरे पर कुल छह एकदिवसीय मैच खेलेंगी। टीम में ब्रैंडन किंग, एविन लुईस, कीसी कार्टी और उभरता खिलाड़ी ज्वेल एंड्रयू भी शामिल होंगे। वेस्टइंडीज के कोच डेरेन सैमी ने इस दौरे को लेकर कहा कि ये मैच 2027 विश्वकप के लिए महत्वपूर्ण हैं। हमें पता है कि परिस्थितियां चुनौतीपूर्ण होंगी।

वेस्टइंडीज ने अपने कोचिंग स्टाफ में भी कुछ बदलावों की घोषणा की है, जिसमें पूर्व तेज गेंदबाज और 2012 टी20 विश्व कप विजेता रवि रामपॉल को न्यूजीलैंड के जेम्स फ्रैंकलिन की जगह गेंदबाजी कोच बनाया गया है, जबकि आयरलैंड के महान खिलाड़ी केविन ओब्रायन अपनी पुरानी टीम के खिलाफ तीन मैचों के दौरान टीम को कुछ सहायता प्रदान करेंगे। वेस्टइंडीज की एकदिवसीय टीम: शाई होप (कप्तान), ज्वेल एंड्रयू, कीसी कार्टी, रोस्टन चेस, मैथ्यू फोर्ड, जस्टिन ग्रीव्स, आमिर जंगू, अल्जारी जोसेफ, शमर जोसेफ, ब्रैंडन किंग, एविन लुईस, गुडाकेश मोती, शेरफेन रदरफोर्ड, जेडन सील्स और रोमारियो शेफर्ड।

प्राची गायकवाड़ ने खेलो इंडिया यूथ गेम्स निशानेबाजी में जीता स्वर्ण पदक

नई दिल्ली, 6 मई। खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 के दूसरे दिन मंगलवार को महाराष्ट्र की प्राची ससिकांत गायकवाड ने 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन (युवा महिला वर्ग) में स्वर्ण पदक जीता। आज यहां दिल्ली स्थित कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में महिला वर्ग की निशानेबाजी स्पर्धा में प्राची ने 458.4 अंक के साथ स्वर्ण पदक, कर्नाटक की तिलोत्तमा ने 455.6 अंकों के साथ रजत और अनुष्का ने 445.7 अंकों के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया। स्पर्धा के बाद प्राची ने कहा, यह मेरा खेलो इंडिया में दूसरा मौका है। पिछले साल चेन्नई में कांस्य जीता था, इस बार स्वर्ण पदक जीतकर बहुत गर्व महसूस हो रहा है। मैं खेलो इंडिया के मान्यता प्राप्त केंद्रों को धन्यवाद देना चाहूंगी, जहां मुझे सही संसाधन और प्रशिक्षण मिला। स्वप्निल सर मेरे आदर्श हैं और उनकी ट्रेनिंग को फॉलो करती हूं। वो अगली पीढ़ी के शूटर्स को तैयार करने के लिए जाने जाते हैं। महाराष्ट्र की खेलों में गौरवशाली परंपरा है और मैं राज्य का प्रतिनिधित्व करके गर्व महसूस करती हूं।

राजस्थान की हर्षिता ने जीते दोहरे स्वर्ण पदक

राजस्थान ने चार स्वर्ण सहित जीते कुल छह पदक

जयपुर, 6 मई। खेलों इंडिया यूथ गेम्स में राजस्थान के खिलाडियों ने अपना शानदार प्रदर्शन मंगलवार को भी जारी रखा। साईक्लिंग में हर्षिता जाखड ने दोहरे स्वर्ण पदक जीतकर राज्य का मान बढाया जबकि मयंक चैधरी ने 10 मी. पिस्टल की व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वर्ण जीता। यह उनका लगातार दूसरा गोल्ड मेडल है। इससे पूर्व मयंक ने सोमवार को 10 मीटर मिक्स टीम पिस्टल स्पर्धा में गोल्ड मेडल जीता था। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि राजस्थान के लिए आज का दिन स्वर्णिम रहा। खिलाडियों ने चार स्वर्ण जीत कर राज्य का परचम लहराया। हर्षिता जाखड ने साईक्लिंग की 7.5 किमी स्क्रेच रेस स्पर्धा में और 500 मी. टाईम ट्रायल में

गोल्ड मेडल जीतकर अपनी श्रेष्ठता साबित की। इसके अलावा आदित्य जाखड ने बालक वर्ग में 1 किमी टाईम ट्रायल रेस में स्वर्ण पदक जीता। उन्होने बताया कि गत दिवस गोल्ड मेडल जीत कर राजस्थान का मान बढाने वाले मयंक चैधरी ने आज भी शानदार प्रदर्शन बरकरार रखते हुए 10 मी. पिस्टल की व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वर्ण जीता। साइक्लिंग में महावीर ने बालको की 10 किमी स्क्रेच रेस में रजत पदक जीता। जबकि सीताराम ने कास्यं पदक जीतकर राजस्थान को आज का छठा पदक दिलवाया। चीफ डे मिशन रणविजय सिंह चंपावत ने बताया कि कबड्डी की स्पर्धा भी आयोजित की गई। राजस्थान के बालको ने मेजबान बिहार को आसानी से 57-37 से हराकर सेमीफाईनल में प्रवेश किया।

फ्लोरोसेंट पब्लिक स्कूल व एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फैडरेशन ऑफ इंडिया के बीच एमओयू होगा

जयपुर, 6 मई। एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के अध्यक्ष डॉ, आशुतोष पथ ने बताया कि सॉफ्ट हॉकी के प्रचार प्रसार के लिए जयपुर में कल फ्लोरोसेंट पब्लिक स्कूल जगतपुरा व एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया के बीच एमओयू होगा ,जिसमें सॉफ्ट हॉकी का फ्लोरोसेंट पब्लिक स्कूल को केंद्र बनाया जाएगा, यहा प्रशिक्षक द्वारा आधुनिक तकनीक से खिलाड़ियों को प्रशिक्षित किया जाएगा जिसमें कल फेडरेशन के अध्यक्ष डॉ आशुतोष पथ खिलाड़ियों को निशुल्क किट प्रदान करेंगे यह केंद्र छात्रों को सॉफ्ट हॉकी खेल का प्रशिक्षण देने और उनके सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से स्थापित किया जाएगा।

8 टीमें, 280 खिलाड़ी... टी-20 मुंबई लीग में नीलामी

मुंबई, 6 मई। टी20 मुंबई लीग की नीलामी में बुधवार को जब 280 खिलाड़ियों की बोली लगेगी तो उभरते सितारे आयुष म्हात्रे, अंगकृष रघुवंशी और तनुश कोटियन आकर्षण का केंद्र होंगे।आठ टीमों वाली लीग का तीसरा सत्र 26 मई से आठ जून तक वानखेड़े स्टेडियम में आयोजित किया जाएगा। आईपीएल के वर्तमान सत्र में शानदार प्रदर्शन करके क्रिकेट जगत का ध्यान अपनी तरफ खींचने वाले 17 वर्षीय म्हात्रे के अलावा रघुवंशी, कोटियन और मुशीर खान पर भी बड़ी बोली लगने की संभावना है।

इस पूल में घरेलू क्रिकेट में लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाले सिद्धेश लाड और शम्स मुलानी जैसे खिलाड़ी भी शामिल हैं। टीमों ने पहले ही आइकन खिलाड़ियों को अपनी-अपनी टीम में शामिल कर लिया है। जिसमें सूर्यकुमार यादव (ट्रायम्फ नाइट्स मुंबई नॉर्थ ईस्ट), अजिंक्य रहाणे (बांद्रा ब्लास्टर्स), श्रेयस अय्यर (सोबो मुंबई फाल्कन्स), पृथ्वी शॉ (नॉर्थ मुंबई पैंथर्स), शिवम दुबे (एआरसीएस अंधेरी), शार्दुल ठाकुर (ईग ठाणे स्ट्राइकर्स), सरफराज खान (आकाश टाइगर्स मुंबई वेस्टर्न सबर्ब्स) और तुषार देशपांडे (मुंबई साउथ सेंट्रल मराठा रॉयल्स) शामिल हैं।

अंडर-19 नंद सिंह मेमोरियल सीनियर क्रिकेट लीग, राजीव गांधी जीती

जयपुर, 6 मई। चंबल स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित 17वी राज्य स्तरीय अंडर-19 नन्द सिंह मेमोरियल सीनियर क्रिकेट लीग में आज खेले गए नारायणा ग्राउंड पर खेले गए मैच में राजीव गांधी ने इवेंट क्रिकेट एकेडमी को 263 रनों के विशाल अंतर से हराया। टॉस जीतकर राजीव गांधी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए नितिन मरोटिया 67, अमन चौधरी 64, रौनक राकेश गुप्ता 60, अक्षय चांदवाल 55, निशांत गुर्जर 44, मनाए कटारिया 38, श्यामय 721 रनों के सहयोग से 45 ओवर में 6 विकेट में 372 रन बनाए। इवेंट्स क्रिकेट एकेडमी की ओर से गेंदबाजी करते हुए हर्ष 4, आर्यन-विराज ने 1-1 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करते हुए इवेंट्स क्रिकेट एकेडमी ने अक्षय 47, विराज 16, भावेश 14 रनों के सहयोग से 36 ओवर में 109 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। राजीव गांधी की ओर से श्यामसुंदर, दीपांशु राजौरिया ने 3-3 विकेट लिए। लक्ष्य वैष्णव 2, मनय कटारिया ने 1 लिए। आज के मैन ऑफ़ द मैच श्यामसुंदर रहे।

मलेशिया की शहाना और रश्मिका, अमेरिका के शयान भी अंतिम चार में

राजस्थान के दिव्यांशी, धैर्य, वीर, सुभाष, प्रभव और गौरी सेमीफाइनल में पहुंचे

जयपुर, 6 मई। दिव्यांशी जैन और धैर्य गोगिया सहित राजस्थान के छह खिलाड़ियों ने मंगलवार को यहां अपने क्वार्टर फाइनल मुकाबले जीत राजस्थान स्क्वैश एकेडमी कोर्ट्स पर खेली जा रही नार्दन स्लैम 2025 स्क्वैश चैंपियनशिप में अपनी- अपनी कैटेगरी के सेमी फाइनल में प्रवेश कर लिया। दिव्यांशी ने गर्ल्स अंडर-13 के क्वार्टर फाइनल में एवा पारीक को सीधे सेटों में 3-0 से पराजित किया, वहीं धैर्य ने अंडर-13 बॉयज में मलेशिया के कोविन सुरेन्द्रन को 3-1 से शिकस्त दी।

इसी आयु वर्ग में राजस्थान के एक अन्य खिलाड़ी प्रभव बाजोरिया ने ऋषभ श्याम को कड़े मुकाबले में 3-2 से हरा अंतिम चार में

जगह बनाई। बॉयज अंडर-11 में वीर श्रृंगी ने अरिता देवनाथ को 3-1 से हराया, जबकि बॉयज अंडर-17 में सुभाष चौधरी ने अगस्त बंसल को 3-1 से शिकस्त दी। राजस्थान की गौरी जायसवाल ने डी. नित्या को 3-2 से हरा गर्ल्स अंडर- 15 के सेमी फाइनल में प्रवेश किया।

महिला वर्ग में निरुपमा, पूजा, शमीना और सान्या अंतिम 4 में

सोमवार को टॉप सीड अंजली सेमवाल को हरा उलटफेर करने वाली सानवी बाटर मंगलवार को क्वार्टर फाइनल में सान्या वत्स से 1-3 से हरा गई, वहीं निरुपमा दुबे ने ईशा श्रीवास्तव को 3-0 से, पूजा आरती ने आराधना कस्तूरी राज को 3-0 से और शमिना रियाज ने आराध्या पोरवाल को 3-1 से हरा सेमी फाइनल में जगह बना ली।

यूएस और मलेशियाई खिलाड़ी भी आगे बढ़े

इस बीच अमेरिका के शयान समतानी ने अर्जुन कनौरिया को 3-0 से हरा अंडर-13 बॉयज के अंतिम चार में जगह बनाई। वहीं गर्ल्स अंडर-11 में मलेशिया के शहाना इस्ट्रीथरन ने आर्ना राव को 3-2 से और गर्ल्स अंडर-17 में मलेशिया की रश्मिका रघु ने काश्वी मंगल को 3-1 से हरा सेमी फाइनल में जगह बनाई।

राजस्थान भाजपा के विधायकों और सांसदों के लिए गुजरात के केवड़िया में आयोजित हो रहे प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन मंगलवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सभी विधायकों के साथ पीछे की पंक्ति में बैठकर प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के तीनों सत्रों में वे आम विधायक की तरह मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने अंतिम पंक्ति में बैठ कर प्रशिक्षण लिया

आज के तीनों सत्रों में मुख्यमंत्री से मंच पर बैठने का आग्रह किया गया, पर वे आम विधायक के रूप शिविर में उपस्थित रहे

जयपुर, 6 मई। भाजपा के विधायकों और सांसदों के लिए गुजरात के केवड़िया में आयोजित हो रहे तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन आज तीन सत्र आयोजित हुए। केन्द्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव, राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री शिव प्रकाश और राष्ट्रीय महामंत्री विनोद तावड़े ने विधायकों और सांसदों को सुशासन का पाठ पढ़ाया। तीनों सत्रों में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सभी विधायकों के साथ पीछे की पंक्तियों में बैठकर प्रशिक्षण लिया। मुख्यमंत्री शर्मा को मंच पर और आगे की पंक्तियों में बैठने का आग्रह किया गया। उन्होंने इसके लिए मना कर दिया। वे तीनों सत्रों में आम विधायक की तरह मौजूद रहे। वहीं, उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा, केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल और विधायक अनिता भदेल मुख्य वक्ता के साथ मंच पर मौजूद रहे।

- **प्रशिक्षण शिविर में केन्द्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव, राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री, शिवप्रकाश व राष्ट्रीय महामंत्री विनोद ताबड़े ने विधायकों को विभिन्न विषय समझाए।**

शिविर के दूसरे दिन पहले सत्र में केन्द्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव ने राजस्थान के संदर्भ में ''मोदी सरकार की परिवर्तनकारी नीतियां'' विषय पर चर्चा की। उन्होंने इस विषय पर जोर दिया कि विकसित भारत-विकसित राजस्थान की संकल्पना को पूरा करने वाली केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं को किस तरह से सफल किया जाए।

दूसरे सत्र में राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री शिव प्रकाश की चर्चा का विषय था कि भाजपा और अन्य दलों के बीच वैचारिक मतभेदों और अन्य दलों की विघटनकारी नीतियों से किस तरह सावधान रहा जाए। उन्होंने भाजपा विधायकों और सांसदों को भाजपा के मूलभूत सिद्धांतों, राष्ट्रीयता और समग्र विकास के दृष्टिकोण के बारे में बताया।

तीसरे सत्र में राष्ट्रीय महामंत्री विनोद तावड़े की अध्यक्षता में ''सोशल मीडिया एवं विमर्श निर्माण-हमारी भूमिका'' विषय पर चर्चा हुई। उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से किस तरह राष्ट्रीय भावना का निर्माण किया जाए, इसकी जानकारी दी।

गौरतलब है कि इससे पहले शिविर के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने सभी विधायकों और सांसदों को ठेकेदारों से सावधान रहने की नसीहत दी थी।

उन्होंने सत्र को संबोधित करते हुए कहा था कि जिन लोगों से आप 24 घंटे घिरे रहते हो, वो ज्यादा काम आने वाले नहीं हैं। पार्टी के मूल वोटर पर पकड़ जरूरी है, ऐसे लोगों से घिरे होने की वजह से मूल वोटर नाराज होकर छिटक जाता है।

पाकिस्तान बॉर्डर पर, वायुसेना आज करेगी युद्धाभ्यास

नई दिल्ली, 06 मई। भारत और पाकिस्तान के बीच जारी तनावपूर्ण रिश्तों के बीच बड़ा फैसला लिया गया है। भारत 7 और 8 मई को पाकिस्तान बॉर्डर के पास बड़ा हवाई अभ्यास करने जा रहा है। इस संबंध में भारत ने नोटिस टू एयरमैन जारी किया है। इस अभ्यास में, भारतीय वायु सेना राजस्थान में बॉर्डर के पास अपनी ताकत दिखाएगी। सीमा पर तनाव को देखते हुए, यह अभ्यास भारत की सतर्कता का संकेत है।

भारतीय वायु सेना 7 और 8 मई को राजस्थान मेंपाकिस्तानसीमा के पास एक बड़ा हवाई अभ्यास करेगी। इसके लिए एक नोटिस टू एयरमैन जारी किया गया है। नोटिस टू एयरमैन का मतलब

- **राजस्थान में पाकिस्तान सीमा पर दोपहर 3.30 बजे युद्धाभ्यास शुरू होगा और 8 मई रात 9.30 तक चलेगा।**

है, विमान पायलट को दी जाने वाली सूचना। सूत्रों के मुताबिक, यह एक्सरसाइज एयरफोर्स कई जगहों पर एक साथ करेगा। एयरफोर्स के अलग-अलग बेस से फाइटर उड़ान भरेंगे। जैसलमेर, पोखरण, जोधपुर और बीकानेर में यह एक्सरसाइज होगी। इसमें फाइटर जेट रफाल, सुखोई-30, मिराज भी शामिल होंगे। नोटिस टू एयरमैन के अनुसार, ये अभ्यास 7 मई को दोपहर 3:30 बजे शुरू होगा और 8 मई को रात 9:30 बजे तक चलेगा। इस दौरान, उस क्षेत्र में विमानों की आवाजाही पर कुछ रोक रहेगी। इस अभ्यास में, फाइटर जेट के साथ-साथ सर्विलांस एयरक्राफ्ट शामिल होंगे।

'भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए सदा राष्ट्रहित सर्वप्रथम होता है'

मुख्यमंत्री भजनलाल ने प्रशिक्षण शिविर में कहा, कांग्रेस राजनीतिक चश्मे से देखकर काम करती है

केवड़िया/जयपुर, 6 मई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राजस्थान में हमारी डबल इंजन सरकार विकास के नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है और वर्षों से लंबित कार्यों की राह प्रशस्त करने के साथ ही, ''विकसित भारत-विकसित राजस्थान'' के संकल्प को साकार करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है।

शर्मा मंगलवार को गुजरात के केवड़िया में आयोजित भाजपा सांसदों और विधायकों के तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार गौरवशाली भारत का निर्माण कर रही है। उन्होंने कहा कि हमारी प्राथमिकता में पहले राष्ट्र हित, फिर पार्टी हित और अंत में स्वहित आता है, जबकि कांग्रेस राजनीतिक चश्मे से देखकर काम करती है। उसने अपनी संस्कृति और विचारों को भी छोड़ दिया है।

शर्मा ने विश्वास व्यक्त किया कि यह प्रशिक्षण शिविर भाजपा के जनप्रतिनिधियों को नीति और रणनीति सिखाने के साथ ही, नैतिक मूल्यों और जनसेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को भी सशक्त करेगा।

- **मुख्यमंत्री ने शिविर में अपने संबोधन में कहा कि जयपुर में मेट्रो विस्तार के लिए डी.पी.आर. तैयार कर ली गई है। केन्द्र सरकार के साथ जॉइंट वैंचर कंपनी भी बना ली गई है।**

प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के युवाओं और महिलाओं के कल्याण के लिए भी पूरी तरह प्रतिबद्ध है। राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट के दौरान जो 37 लाख करोड़ के एमओयू हस्ताक्षरित किए हैं, उनसे प्रदेश में बड़ी संख्या में रोजगार का सृजन होगा।

शर्मा ने कहा कि महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए लखपति दीदी योजना के तहत 14 लाख से ज्यादा महिलाओं को विभिन्न कौशल प्रशिक्षण प्रदान किए गए हैं।

शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत, 96 हजार से अधिक शहरी और ग्रामीण आवास बनाए जा चुके हैं तथा 5 लाख 48 हजार से अधिक नए आवास स्वीकृत किए गए हैं।

प्रशिक्षण शिविर में अपने संबोधन के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि हम प्रदेश के आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ करने के साथ ही बुनियादी सेवाओं का विस्तार कर रहे हैं। जयपुर में मेट्रो सेवा के विस्तार के लिए डीपीआर तैयार कर ली गई है तथा केन्द्र सरकार के साथ जॉइंट वैंचर कंपनी बना ली गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने फरवरी 2024 से मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना (मा) प्रारंभ की है।

इस अवसर पर राजस्थान के भाजपा सांसदगण, विधायकगण, पार्टी पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

'आईओसी 4 सप्ताह...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कि मानवीय जीवन व मानवीय संवेदना किसी प्रतिष्ठान के निजी फायदे से बडा है। आईओसीएल एक सार्वजनिक उपक्रम है, उसे जनहित को देखते हुए इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। अदालत ने कहा कि जिस जगह पर प्लांट लगाया गया था, उस समय हो सकता है कि इसे नियमानुसार लगाया गया हो।

मौजूदा समय में प्लांट के पास रिहायशी कॉलोनियों सहित हॉस्पिटल, कॉलेज व स्कूल बन गए हैं और अब यह प्लांट उनके लिए खतरा हो गया है। खंडपीठ ने आईओसीएल से कहा कि वे चाहें तो प्लांट के लिए जगह चिन्हित कर लें। सुनवाई के दौरान एएसजी आरडी रस्तोगी ने पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन को भी पक्षकार बनाने के लिए कहा। जिस पर कोर्ट ने संगठन को भी पक्षकार बनाने का निर्देश दिया।

याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता डॉ. अभिनव शर्मा ने बताया कि साल 2009 में आईओसीएल के फ्यूल ऑयल स्टोरेज प्लांट में लगी आग में 12 लोगों की मौत हुई थी। राज्य सरकार की जांच कमेटी ने 2011 की रिपोर्ट में माना था कि आईओसीएल के सीतापुरा स्थित घरेलू गैस के बॉटलिंग प्लांट को जगतपुरा व सीतापुरा में आबादी विस्तार को देखते हुए शहर से बाहर भेजना चाहिए।

इस प्लांट में जामनगर लूणी गैस पाइप लाइन से एलपीजी उच्च दबाव पर सप्लाई होती है, जो सामने के रीको इंस्टीट्यूशनल एरिया के नीचे से आती है। इसके ऊपर ही महात्मा गांधी अस्पताल, पूर्णिमा कॉलेज, राजस्थान फार्मेसी कौंसिल सहित अनेकों शैक्षिणक संस्थान बन गए हैं।

इसलिए बॉटलिंग प्लांट को शहर से बाहर भेजा जाए।

एयरपोर्ट को ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहा गया कि दिनांक 15 व 16 फरवरी को उनके ईमेल एड्रेस पर मेल प्राप्त हुआ। जिसमें कहा गया कि जयपुर एयरपोर्ट पर अलग-अलग समय पर बम विस्फोट किया जाएगा। जिसकी आरंभिक सूचना 16 फरवरी को दी जा चुकी थी।

रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त को गिरफ्तार कर अदालत में आरोप पत्र पेश किया। अभियुक्त ने कहा कि उसने अज्ञानतावश मेल कर दिया था।

मेन लाइन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर पहुंच गये हैं तथा यह बता रहे हैं कि उन्हें क्या करना है।

सोशल मीडिया को बैन करना असम्भव है तथा जो प्लेटफॉर्म अस्तित्व में हैं, वे डिलीट नहीं किये जा सकते।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने पाकिस्तान से की कड़ी पूछताछ

सूत्रों के अनुसार, सुरक्षा परिषद ने पहलगाम हमले पर पाकिस्तान की ''झूठी'' कहानी को खारिज किया

संयुक्त राष्ट्र/नई दिल्ली, 06 मई। पहलगाम हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ ते तनाव पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चर्चा के दौरान सदस्यों ने पाकिस्तान द्वारा फैलाए जा रहे झूठे बयान को मानने से इनकार कर दिया और पूछा कि क्या पहलगाम आतंकी हमले में लश्कर-ए-तैयबा का हाथ होने की संभावना है।

सूत्रों के अनुसार, सुरक्षा परिषद में सोमवार को इस्लामाबाद द्वारा प्रस्तावित अनौपचारिक बैठक में सदस्यों ने बंद कमरे में पाकिस्तान से कठिन सवाल किये। सदस्यों ने पहलगाम आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की और पाकिस्तान के मिसाइल परीक्षणों और परमाणु बयानबाजी की आलोचना की।

सूत्रों ने कहा कि सदस्यों ने पाकिस्तान से भारत के साथ द्विपक्षीय मुद्दों को सुलझाने के लिए कहा है।

सूत्रों ने कहा, कई सदस्यों ने चिंता व्यक्त की कि पाकिस्तान के मिसाइल परीक्षण और परमाणु बयानबाजी तनाव बढ़ ाने का कारण बन सकते हैं। स्थिति का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने के पाकिस्तान

- **सुरक्षा परिषद सदस्यों ने मिसाइल टैस्ट के लिए और परमाणु युद्ध की बयानबाजी के लिए पाकिस्तान की कड़ी आलोचना की।**

के प्रयास भी विफल रहे। उसे भारत के साथ द्विपक्षीय मुद्दों को सुलझाने की सलाह दी गई।

सूत्रों ने इस्लामी आतंकवादियों द्वारा पहलगाम में किए गए आतंकवादी हमले का हवाला देते हुए बताया, आतंकवादी हमले की व्यापक निंदा की गई और जवाबदेही पर बल दिया गया। कुछ सदस्यों ने विशेष रूप से धार्मिक आस्था के आधार पर पर्यटकों को निशाना बनाए जाने का मुद्दा उठाया।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सदस्यों ने अनौपचारिक सत्र में पाकिस्तान से कठिन सवाल पूछे। उन्होंने पाकिस्तान द्वारा फैलाए जा रहे झूठे बयान को मानने से इनकार कर दिया और पूछा कि क्या लश्कर-ए-तैयबा के हमले में शामिल होने की संभावना है।

मई महीने के लिए सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष ग्रीस ने पाकिस्तान के अनुरोध पर सोमवार को बैठक निर्धारित की थी। पाकिस्तान अभी परिषद में अस्थायी सदस्य है। बैठक के बाद कोई बयान जारी नहीं किया गया।

पाकिस्तान ने पिछले सप्ताह में दो बैलिस्टिक मिसाइलों का परीक्षण किया है और उसके सूचना मंत्री और रक्षा मंत्री ने आक्रामक बयान जारी किए हैं, जिनमें कहा गया है कि भारत द्वारा बहुत जल्द पाकिस्तान पर हमला करने की संभावना है।

पहलगाम आतंकवादी हमले में 26 पर्यटकों की हत्या के बाद से दोनों देशों के बीच संबंधों में कड़वाहट आ गयी है।

भारत ने सिंधु जल संधि को निलंबित करने, अटारी सीमा चौकी को बंद करने, पाकिस्तान के साथ सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष व्यापारिक संपर्कों को बंद करने के साथ-साथ, डाक संपर्कों को भी बंद करने का फैसला किया है।

विधायक रिश्वत ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

डीआईजी एसीबी राहुल कोटोकि ने बताया कि रोहित के मामा और उसके परिचित को मंगलवार को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से एक दिन का रिमांड मिला है। बुधवार को विधायक, उसके चचेरे भाई , रोहित के मामा और उसके परिचत को एक साथ पेश किया जाएगा। विधायक से पूछताछ की जा रही है, लेकिन वे स्पष्ट जानकारी नहीं दे रहे हैं। हालांकि विधायक के रिश्वत कांड को लेकर एसीबी के पास सारे सबूत और तथ्य मौजूद हैं। एसीबी अधिकारियों का कहना है कि विधायक से जांच में सहयोग नहीं मिल रहा है। विधायक किसी भी सवाल का ठीक तरह से जवाब नहीं दे रहे हैं।

भारत व इंग्लैण्ड...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लागत और बेहतर पूंजी प्रवाह ढांचे का लाभ मिलेगा। आर.सी.ई.पी. से बाहर रहने के बाद से भारत की व्यापार नीति ऐसे लक्षित समझौतों की ओर झुकी है, जो राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करते हैं।

यूके समझौता इस बात को दर्शाता है कि उदारीकरण-चाहे वह वस्तुओं, सेवाओं या डिजिटल व्यापार में हो-को लेकर नई दिल्ली आत्मविश्वास से भरी है, जबकि संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा भी सुनिश्चित कर रही है।

भारत में 259 जिलों में आज होगी मॉक ड्रिल

गृह मंत्रालय ने उन जिलों की लिस्ट जारी की जहां मॉक ड्रिल होगी

नई दिल्ली, 06 मई। पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान से तनाव के बीच बुधवार को देश के 259 इलाकों में युद्ध के दौरान बचाव के तरीकों की मॉक ड्रिल होगी। गृह मंत्रालय ने इन इलाकों को सिविल डिफेंस डिस्ट्रिक्ट के तौर पर लिस्ट किया है। ये सामान्य प्रशासनिक जिलों से अलग हैं। सिविल डिफेंस डिस्ट्रिक्ट्स को उनकी संवेदनशीलता के आधार पर 3 कैटेगरी में बांटा गया है। कैटेगरी-1 सबसे संवेदनशील और कैटेगरी-3 कम सेंसिटिव है। गृह मंत्रालय ने 5 मई को सभी राज्यों को मॉक ड्रिल कराने के आदेश जारी किए थे। दिल्ली में गृह मंत्रालय में हुई हाईलेवल मीटिंग में मॉक ड्रिल की तैयारियों की समीक्षा की गई। इसमें राज्यों के मुख्य सचिव और सिविल डिफेंस चीफ समेत कई हाई रैंक ऑफिसर मौजूद थे।

दरअसल, मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर्स ने देश के कुल 35 राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों में 259 सिविल डिफेंस डिस्ट्रिक्ट बनाए हैं। जरूरी नहीं ये सिविल डिफेंस डिस्ट्रिक्ट सामान्य एडमिनिस्ट्रेटिव डिस्ट्रिक्ट हों। जैसे-

- **मॉक ड्रिल के लिए जिलों को संवेदनशीलता के आधार पर तीन वर्गों में बांटा गया है**
- **पहले वर्ग में अति संवेदनशील जिलों को रखा गया है। इसमें 13 जिले हैं दूसरे संवेदनशील वर्ग में 201 जिलों को तथा तीसरे कम संवेदनशील वर्ग में 45 जिलों को रखा गया है।**

उत्तर प्रदेश में कुल 19 सिविल डिफेंस डिस्ट्रिक्ट बनाए गए हैं।

कुल 259 सिविल डिफेंस डिस्ट्रिक्ट को इनके इंपोर्टेंस या सेंसेटिविटी के आधार पर 3 कैटेगरी में बांटा गया है।

कैटेगरी 1 में वो डिस्ट्रिक्ट हैं जो सबसे सेंसेटिव हैं। ऐसे कुल 13 डिस्ट्रिक्ट हैं। जैसे- उत्तर प्रदेश में केवल 1 डिस्ट्रिक्ट - बुलंदशहर कैटेगरी 1 में है क्योंकि यहां नरौरा न्यूक्लियर प्लांट मौजूद है।

इसी तरह कैटेगरी 2 में 201 जबकि कैटेगरी 3 में 45 डिस्ट्रिक्ट हैं।

गृह मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक, नागरिकों को यह हिदायत भी दी जाएगी कि वे मेडिकल किट, राशन, टॉर्च और मोमबत्तियां अपने घरों पर रखें। इसके अलावा कैश भी साथ रखें, क्योंकि इमरजेंसी में मोबाइल और डिजिटल ट्रांजैक्शन फेल हो सकते हैं।

केन्द्रीय गृह मंत्रालय के निर्देश पर विभिन्न राज्यों में बुधवार को होने वाले सिविल डिफेंस मॉक अभ्यास से पहले मंगलवार को यहां केन्द्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन ने राज्यों के मुख्य सचिवों के साथ बैठक कर अभ्यास की तैयारियों पर चर्चा की।

ईरान के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आकस्मिक भारत यात्रा को कूटनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

तीये की बैठक

अत्यंत दुख के साथ सूचित किया जाता है कि

अणु जैन

(पुत्र जस्टिस पाना चन्द जैन)

का आकस्मिक निधन दिनांक 5 मई सोमवार को हो गया है।

तीये की बैठक दिनांक 7 मई प्रात: 10 बजे तोतूका भवन, भट्टारकजी की नसियां, जयपुर में होगी।

शोकाकुल परिवार

जस्टिस पाना चन्द जैन (पिता), वीरेन्द्र-ललिता (भाई-भाभी) मीनू जैन (पत्नी), मणि-विजय अजमेरा, शकुन जैन, एकता-प्रदीप श्रीमाल (बहन-बहनोई), यश-आरूषि (भतीजा-भतीजा बहू), अतिशय-पलक (पुत्र एवं पुत्रवधू), कृषि-गौरव (भतीजी-दामाद), सृष्टि (पुत्री), आव्या (पोती), राहिल (पोता)

ससुराल पक्ष

विशाल जैन, अनुराग जैन एवं समस्त भूच परिवार।

सड़क हादसे में घायलों को पूरे देश में मुफ्त इलाज मिलेगा

नई दिल्ला, 06 मई। भारत सरकार ने पूरे देश में कैशलेस ट्रीटमेंट स्कीम (नकद रहित इलाज योजना) लागू करने की अधिसूचना जारी कर दी है। जिसके तहत सड़क दुर्घटना के शिकार हर व्यक्ति को प्रति हादसा अधिकतम 1.5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज मिल सकेगा।

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी गजट अधिसूचना के अनुसार, यह योजना 5 मई, 2025 से लागू हो गई है।

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से जारी अधिसूचना के मुताबिक, अगर किसी भी व्यक्ति का मोटर वाहन के कारण सड़क पर एक्सिडैंट होता है, तो उसे इस स्कीम के तहत देश के किसी भी हिस्से में इलाज की सुविधा मुफ्त में मिलेगी। हादसे के शिकार व्यक्ति को सरकारी या नामित अस्पतालों में इलाज के लिए कोई पैसे नहीं देने होंगे।

इस योजना के तहत पीड़ित व्यक्ति को दुर्घटना की तारीख से अगले सात दिनों तक, अधिकतम 1,50,000 रुपये तक का मुफ्त इलाज दिया जाएगा। यह सुविधा सिर्फ उन अस्पतालों में पूरी तरह लागू होगी जो सरकार द्वारा ''नामित'' किए गए हैं।

अगर किसी कारणवश पीड़ित को नामित अस्पताल नहीं मिल पाता और इलाज किसी अन्य अस्पताल में कराया जाता है। तो उस स्थिति में उस अस्पताल में सिर्फ स्थिर हालत (स्टेबलाइजेशन) तक का इलाज ही इस योजना के तहत कवर किया जाएगा। इस बारे में अलग से गाइडलाइंस जारी की गई हैं। इस योजना को लागू करने की जिम्मेदारी नेशनल हेल्थ अथॉरिटी को सौंपी गई है। यह संस्था पुलिस, अस्पतालों और राज्य स्तरीय स्वास्थ्य एजेंसियों के साथ मिलकर काम करेगी ताकि स्कीम को प्रभावी ढ ंग से लागू किया जा सके।

हर राज्य या केंद्र शासित प्रदेश में स्टेट रोड सेफ्टी काउंसिल इस योजना की नोडल एजेंसी होगी। यह काउंसिल इस बात की निगरानी करेगी कि योजना को ठीक से लागू किया जाए।

जयराम रमेश के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जरूरत नहीं समझी।

जयराम इस पद के लिए अनुपयुक्त व्यक्ति हैं। वे नहीं जानते कि मीडिया को कांग्रेस के पक्ष में कैसे किया जाये, और यह चीज कांग्रेस के लिए बहुत नुकसानदायक है।

शुरूआत में ही, जब पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे उन्हें हटाना चाहते थे, तो राहुल गांधी ही उनके समर्थन में आ गये थे।

और अब, जब राहुल गांधी भी समझ गये हैं कि वे पार्टी के लिए बोझ हैं। वे न मीडिया को समझते हैं और न बोलने में ही माहिर हैं। लेकिन सोनिया गांधी उन्हें इस पद पर बनाए हुए हैं।

जयराम रमेश ने खतरे को भांपते हुए खड़गे की थोड़ी चापलूसी करनी शुरू कर दी। उन्होंने खड़गे से कहा कि वे राजनीति में इतने वरिष्ठ हैं तथा उन्हें राजनीति का इतना लम्बा अनुभव है कि उन पर एक किताब लिखी जानी चाहिए, जिसमें उनके जीवन, उनकी राजनैतिक यात्रा और पूरे दौर का विस्तृत वर्णन हो। यही नहीं, उन्होंने खड़गे पर इस प्रकार की किताब लिखने के लिए स्वयं को पेश भी कर दिया।

खड़गे एक भले व्यक्ति है लेकिन उन्होंने दुनिया देखी है। वे तुरन्त जयराम का मंतव्य समझ गये, और जवाब में सिर्फ मुस्करा दिये।

दरअसल, इस समय कांग्रेस को एक अच्छे मीडिया प्रभारी की जरूरत है, जिसके पास इस बात की तह तक पहुंचने की क्षमता हो कि पार्टी में निर्णय लेने वाले शीर्ष स्तर पर क्या चल रहा है। इसके साथ ही, वह किसी बात इस तरह घुमाकर प्रस्तुत करने की क्षमता एवं महारथ रखता हो कि भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को भी घुमा सके।

जयराम का एक नकारात्मक पक्ष और भी है। वे अमित शाह के घोर प्रशंसक है तथा कई मुद्दों पर उनकी प्रशंसा करते हुए, लोगों ने छिपकर उन्हें सुना भी है।

सुप्रीम कोर्ट के जजों ने वैबसाइट पर संपत्ति घोषित की

नयी दिल्ली, 06 मई। उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना समेत अधिकतर न्यायाधीशों ने अपनी संपत्ति का ब्यौरा सार्वजनिक कर दिया है। शीर्ष अदालत की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध कराई गई जानकारी के मुताबिक न्यायपालिका में पारदर्शिता बढ़ ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के तौर पर 33 न्यायाधीशों में से 21 ने सोमवार को अपनी संपत्ति घोषित की। न्यायाधीशों अपने खुद के अलावा जीवनसाथी की संपत्ति भी सार्वजनिक कर दी।

पूर्व एन.डी.ए...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के लिये राहुल गांधी को, तथा उस माँग को स्वीकार करने के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद दिया।

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371 अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908